

॥ श्रीः ॥

भिदु यश रसायण ।

संशोधकः—

दुर्जनदास सेठिया ।

प्रकाशकः—

मीनासर निवासी

हुकमचन्द मूलचन्द सेठिया ।

मुद्रकः—

महालचन्द बयेद ।

“भोसवाल प्रेस”

६६, सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता ।

मिलने का पताः—

हुकमचन्द मूलचन्द सेठिया हुकमचन्द भारमल सेठिया

पो० मु० मीनासर

मु० दुवराजपुर

(चोकानेर)

(बीरभूम)

धीर निर्वाणानन्द २४६५

पञ्चमावृत्ति २०००]

बिना मूल्य

[विक्रम सम्यत् १९९४

प्रकाशक—
श्रीनासर निवासी
हुकमचन्द मूलचन्द सेठिया ।



मुद्रक—
महालचन्द्र थपेद्र ।
ओसवाल प्रेस ।
१६, सीनागोग_स्ट्रीट, वरकत्ता ।



श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बियों में तेरारंपथी सम्प्रदाय वालों के लिये इस पुस्तक का परिचय प्रदान अनावश्यक है।

प्रातः स्मरणीय श्रीमदाचार्य स्वामी मिश्रजी महाराज एक क्षण जन्मा महापुरुष थे। पुरातन शिथिल ले को दूर करके स न प्रकाश के लिये उन्होंने जो संकल्प किया को कितनी बाधा विपत्तियां सहते हुए पूर्ण वि सो इस पुस्तक में वर्णन किया गया है।

यह पुस्तक पुरुष का गौकिक जीवन वृत्तान्त तो है ही, साथ साथ उनके सम-सामयिक मतों का पता भी इस से स है। इसके श्रीमद् जीत जी स्वामी हैं। जो आचार्य भी के चतुर्थ पटभर हुए।

भाषा म डी है। वर्तमान काल के ढंग से यह नहीं लिखा है। पर हमारी में यही इसका विशेषत्व है। ऐतिहासिक वा तत्वविद् पण्डितों के लिये इस पुस्तक का समावर इसी लिये होना चाहिये। क्योंकि कोई धर्म मत के प्रच महात्मा की जीवनी उनकी जीवनकालिक घटनावली तथा उनकी उपदेशावली यथा सम्भव उसी की भाषा में होने से उसका यथार्थ स्वरूप ठीक २ मालूम हो ता है।

तेरापन्थी मात्र इस पुस्तक को सादर अपनावेंगे इसमें कोई शङ्का नहीं, परन्तु अन्यान्य मत वाले इस पुस्तक से तेरापन्थी मत के प्रतिष्ठाता के धार्मिक जटिल प्रश्नों पर लव संहज दृष्टान्त द्वारा समाधान की शैली देख के मुग्ध होंगे।

स्थानकवासी सम्प्रदाय से अलग होने के घबस्त पूज्यपाद श्रीमद्भिक्षु स्वामी के अनुयायी साधु व श्रा बहुत ही थोड़े थे। प्रदायिक व धार्मिक भेद से भारत के जल वायु के प्रभाव से भीषण ईर्ष्या द्वेष उ होता है, यह देश के लोगों का स्वभाव सा ही है। परन्तु प्रबल बाधा के सन्मुखीन होकर जो महापुरुष अपने ध्येय व लक्ष्य पर अटल बचल रहकर पहुँचते हैं वे क्रमशः लोगों के वन्दनीय व नमस्य हो जाते हैं। भारत के या के प्रसिद्ध २ जितने धर्म मत प्रचारक महापुरुष आविर्भूत हुए हैं प्रायशः प्रथम जीवन में उनको विषम बाधाओं का ना करना पड़ा है। पर यह सब बाधाएँ उनका निहित अदम्य तेज को अधिकतर प्रज्वलित वि ।। ज्यों ज्यों बाधाएँ बढ़ी है त्यों त्यों महापुरुषों के महत्व का अधिकाधिक परिचय मनुष्य मात्र पाकर चकित विस्मित व पुलवि हुए हैं। जो अदम्य अध्यवसाय, दृढ़चित्तता पर आस्था और अलौकिक भावों से मुग्ध हो उनके भकों में सम्मिलित हुए हैं ऐसे दृष्टांत इतिहास में बहुत मिलते हैं और यह पुनः आचार्य्य प्रवर श्रीमद्भिक्षु स्वामी के जीवन में भी परिस्फुट है।

भारत की आर्य्य भूमि आध्यात्मिक उन्नति प्रयासी महापुरुषों का आविर्भाव क्षेत्र है। युग युगान्तर से यह बात चार सिद्ध हो चुकी है। अवश्य कुछ लोकमान्य महापुरुष नवीन मत के प्रवर्तक होकर अनेक शिष्य व भक्त पाये हैं। और अब भी उन लोगों का मत प्रचलित है। परन्तु जैन धर्म जैसा "अहिंसा" की दृढ़ भित्ति पर स्थापित सनातन शाश्वत धर्म को शताब्दियों का शिथिलाचार से मुक्त करके प्रबल प्रतिद्वन्दियों के सामने खड़ा होने का साहस अकेला भिक्षु

स्वामी ही किया था। सिंह विक्रम से उन्होंने सबका कुतर्क-जाल छिने भिन्न करके । का र किया। जहां पहले पहल १३ साधु व इतने ही था ये आज वहां सैकड़ों व्रत भ्रमणी व लाखों व्रत भ्राविका श्री पूज्य भिक्षु स्वामी के मार्ग को अङ्गीकार किये हुये हैं।

आगमों का रहस्य सरल सुबोध्य भाषा में मनुष्य के भ्रान्ति के उद्देश्य से ढाल दोहा चौपाई आदि छन्दों में आर्य्य प्रवर के भाषणों का सार संग्रह करके है। साधारण अल्प बाले निरक्षर व्यक्ति भी सुललित धर्म ग्रन्थ को सहज में कण्ठस्थ रख सके इस लिये प्रायशः रण जनता में का आदर होता है। हिन्दी में तुलसीदासजी की रामायण, बङ्गला में कृत्तिवासी राण काशीराम दास का महाभारत, चैतन्य चरिता आदि ग्रन्थ जैसा आवाल वृद्ध वनिता आदर की दृष्टि से देखते हैं वैसे ही जैन राज में भी धार्मिक व उपदेशावली अधिकतर पद्य में ढाल दोहा चौपाई आदि में होने के आदरनीय है।

इस ग्रन्थ के कर्ता परम पूज्य श्री १००८ श्री जीतमलजी स्वामी (जो 'जय गणि' से प्रकृत है) का संक्षेप में परिचय देना यहां अप्रासंगिक न होगा। अतः आपका शुभ-जन्म " मारवाड़ में रोयट ग्राम में ओसवाल वंश में गोलेछा जाति में सं० १८६० आश्विन शुक्ल २ को हुआ था। श्रीमद् भिक्षु स्वामी का स्वर्गवास १८६० भाद्र शुक्ल १३ को हुआ था। अतः ग्रन्थकर्ता श्री भिक्षु स्वामी के जीवन चरित्र जो 'भिक्षु यश रसायण' से प्रकाशित किया वह प्रमाणिक होने में कोई सन्देह नहीं हो सके। साधुओं की रीति अनुसार आचार्य्य के जीवन की प्रधान प्रधान घटनावली का उल्लेख करके रखा जाता है इसके अलावे श्रीमद् भिक्षु स्वामी के सामयिक साधु मुनिराजों से भ्रषण करके ग्रन्थ रचा गया इस लिये इसमें वर्णित घटनावली वही प्रमाणिक मानी जाती है।

श्री मञ्जयाचार्य का पाण्डित्य का वर्णना करना मादृश अल्प बुद्धि वालों के लिये असंभव है। इनका रचा हुआ "भ्रम विध्वं" अन्य जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी मत का एक बड़ा ही अमूल्य ग्रन्थ है। तेरार्पन्थी मत से दूसरे सम्प्रदाय का जो जो बातों में फरक है उसका समाधान शास्त्रीय प्रमाणों से बड़ा ही विस्तार से करके हर एक की शङ्का दूर करने का सहज व सरल उपाय रख गये। आप श्री भगवती सूत्र की भाषा में जोड़ करके अपनी अपूर्व प्रतिभा व पाण्डित्य का निदर्शन रख गये हैं। आपका रचा हुआ लगभग ३-३॥ लाख गाथा होगा इसीसे आपका विद्वत्त्व कवित्व व पाण्डित्य का सामान्य दिग्दर्शन हो जायगा।

इस ग्रन्थ की भाषा मैंने ऊपर में ही कहा है कि "मारवाड़ी" है। इसलिये शुद्ध संस्कृत बहुत हिन्दी भाषा जानने वाले इसके बहुत से शब्दों के वर्णविन्यास से चौंक न उठें। मारवाड़ी भाषा के अनुसार ही शब्दों के वर्ण विन्यास हैं। व्याकरण दोष नहीं है।

हिन्दी व बङ्ग-भाषा के विद्वानों से प्रार्थना है कि वे मारवाड़ी भाषा के इस महापुरुष की जीवनी पठन व अध्ययन करके अन्यान्य भाषा के चरित्र ग्रन्थ से इसकी तुलनात्मक समालोचना करें। धर्म की परीक्षा के लिये नहीं परन्तु मत प्रचार के जीवन से उनके उपदेशावली से लाभ उठाने के उद्देश्य से अपनावें। जै के खास कर तेरापन्थी सम्प्रदाय के आचार्य तथा साधु महाराजों के बनाये हुए बहुत से ग्रन्थ विद्वानों के देखने व मनन करने लायक है। इन ग्रन्थों से ऐतिहासिकों को भाषा तत्वविदों को धर्म मत समालोचकों को दार्शनिकों को बहुत सी सामग्री उनके गवेषणा के लिये मिलेगी। तेरापन्थी सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य श्रीमद् मिश्र स्वामी के नवम पट्टधर परम पूज्य श्री १००८ श्री तुलसीरामजी स्वामी का व उनके शिष्य वर्ग का दर्शन सेवा करने से अन्य मतावलम्बी विद्वान जैन श्वे० तेरापन्थी सम्प्रदाय के अमूल्य ग्रन्थराजि का परि-

पाँगे। साथ साथ साधुओं का दैनन्दिन कार्य कलाप व उपदेश व्याख्यान सुन कर कृतार्थ होंगे। जिन महापुरुष की जी कथा को दृष्टान्त में रखके जिनका रसायण से उत्तरोत्तर अधिकतर पाण्डित्य व प्रतिभाशाली अधिकतर तपस्वी, वैरागी, त्यागी मुनिराजों ने में तेरापन्थी सम्प्रदाय को अलंकृत कर है उनके दर्शन की आकांक्षा इस वर्तमान पुस्तक के पठन से होगा स्वभाविक है। तेरापन्थी सम्प्रदाय के साधु-मुनिराज से बिल्कुल विरक्त रहते हैं। पुस्तकादि छपवाते नहीं। समस्त हस्तलिखित रखते हैं। कोई कोई श्रावक अर्धवसाय पूर्वक तो कण्ठस्थ कर दू हस्तलिखित प्रति बनवा के पीछे छूते हैं। श्रीयुक्त महालचन्दजी बड़ा ही परिश्रम व उद्योग करके यह पुस्तक छपाया है। आशा है समाज में तो उनका इस पुस्तक का आदर होगा ही परन्तु दूसरे वाले इसका यथोचित पठन व आलोचना करके इसपर योग्य सम्मतियाँ देंगे एवं तेरापन्थी समाज के अन्याय प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थराजि पर औत्सुक्य प्रगट करेंगे।

निषेधक—

छोगम चोपड़ा।

संशोधक के दो बंद ।

मुझे शुद्धाशुद्धिका विशेष ज्ञान नहीं है । इसलिये मैंने इसका संशोधन मोसवाल प्रेसके अध्यक्ष धीयुन् बाबू महालचन्दजी वयेद कीसह । से किया है । यद्यपि प्रूफ संशोधन में भरसक सावधानी से काम लिया गया है तथापि भूल करना मनुष्य का स्वभाव है । छपते समय भी कुछ अक्षर और मात्राएँ टूट जानी सम्भव है । अतः कुछ भूलें रहजानी स्वाविक है । जो भूलें पाठकों की नज़र तले आवें उनसे मुझे सूचित कर दें । इस कृपा के लिये मैं उनका चिर कृतज्ञ रहूँगा और आगामी आवृत्ति में हठ त्याग कर उन भूलों को सुधार दूँगा ।

पेज नं० २३५ की पंक्ति १३ गाथा ३ के ४ चरणोंके स्थान में केवल-२ चरण छपे हैं । अर्थात् २ चरण छूटे हुए हैं । तलाश करने पर प्रथम संस्करण की कापी नहीं मिली इस लिये वे छूटे हुए दो चरण इसमें नहीं दिये जा सके, अगले संस्करण में सुधारने की चेष्टा करूँगा ।

भवदीय —

दुर्जनदास सेठिया ।

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

भिन्नु यश रसायणा ।

॥ दोहा ॥

सिद्ध साधु प्रणामी सखर, आणी अधिक उलास ।

सुख दायक आखं मरस, बांरुं भिक्खु विलास ॥१॥

गुणवंतना गुणं गावेतां, उरुष्ट रसायण आय ।

पद तीर्थकर पामिये, कही सु ज्ञाता माय ॥२॥

शासन वीर तयै शमण, कही अधिक अधिकाय ।

गुण बुद्धितेप भरु ज्ञान करि, चउदस सहस सुहाय ॥३॥

सर्वज्ञ जिन मुनि सत सय, अचधि तेर सय आय ।

मन पज्जव सय पञ्च मुनि, चिउसिय वादी पिढाय ॥४॥

पूर्वषर त्रिय सव पषर, वैके सत सव वाष ।

समणी सहस कृतीस शुद्ध, चउदस सय निरुपाधि ॥५॥

सुषर्म्म जम्बू तिलक शिव, अन्य मुनि अमर विमाण ।

हिवहाँ पञ्चम काल में, भिक्खु प्रगट्ठा भाण ॥६॥

चतुर्थ आरा ना मुनि, त्रयणां देख्या नाय ।

वन. २ भिक्खु चरण घर, प्रत्यक्ष दर्शन पाय ॥७॥

किहां उपना जन्म्या किहां, परभव पद किहां पाय ।

किया चौमासा किख विधे, सांमलज्यो सुखदाय ॥८॥

चिउंसव सत्तर वर्ष लग, नन्दीबर्द्धन निहाल ।

त्यां पीछे विक्रम तयो, साम्प्रत सम्बत् संभाल ॥९॥

॥ ढाल पहली ॥

सुण बार्द ऋष मण हेस्तो लागै ॥ पदेशी ॥

सकल द्वीप शिरोमणारे लाल । जम्बू द्वीप
सुतंत । अष्टमी चन्दकला इसोरे लाल भरत क्षेत्र
भलकंत । भवजोवारे ॥ रूडो लागै भिक्षु ऋष-
राय । रूडो लागै स्वामी सुखदाय ॥१॥ बतोस सहंस
देशां मकरे लाल । नरधाम मरुधर देश । काँठै
नगर कंटालियोरे लाल, कमधज राज करेस ॥ २ ॥
साह बलूजी तिहां बसैरे लाल, ओसवंश अवतंस ।
जाति संकलेचा जाणज्योरे लाल, बडै साजन सुप्र-
शंस ॥ ३ ॥ दीपांदि तसु भारज्यारे लाल, सरल भद्र
सुखकार । उदरे भिक्षु उपनारे लाल, देख्यो सुपन
उदार ॥ ४ ॥ मृगपति महा महिमा निलोरे । पुण्य-
वंत सुत सुपसाय । सफल स्वप्न सुखदायकोरे लाल,
देखो हरषी माय ॥५॥ यशधारी सुत जन्मियोरे लाल,
अनुक्रम अवसर आय । सम्बत् सतरैसे तियासियै
रे लाल, पञ्चांग लेखै ताहि ॥ ६ ॥ आषाढ सुदी

गोपतोरे , तेर ति जणाय । सर्व सिद्धा
 योदशीरे , कहै गत ॥ ७ ॥ दशां
 मांहिलो दीपतोरे , नचत्र मूल निहाल । यो
 चौथो परवरोरे । , न्म थयो तिण ॥ ८ ॥
 न्म कल्याण थयां पछैरे । , भाव य ।
 उत्पत्तिया बुद्धि ति घणीरे । , विविध े वै
 न्याय ॥ ९ ॥ सुन्दर इ परण्या हीरे , सु -
 दाई विनीत । भिक्ु ने परभव त रे लाल,
 कि धिकी चित्त ॥ १० ॥ केता दिन गळवास्यां
 कन्हेरे , । -गुरु ण । पाछे पोत्याबंध
 न्हेरे ल, णवा ग्या ब ण ॥ ११ ॥ पछै ।
 रु थजीरे । , छो पोत बंध । ते हि िं
 ज सरधै नहीरे, न रधै ध ॥ १२ ॥
 ति तो बित्यां पछैरे , शील दरियो
 र । भिक्ु ने तसु भारज्यारे , रित्रनी
 चित्त धार ॥ १३ ॥ लेवां त्यां रे ल,
 ए न्तर वधार । भिग्रह एहवो आदखोरे । ,
 बिर पणै विचार ॥ १४ ॥ तठा पछै ि । त गोरे
 , पड़ियो ताम वियोग । गपण मि ता
 बहुरे । , वि न बंछ्या भोग ॥ १५ ॥ दीक्षा
 ने त्यारी थयारे , अनुमति न दिये माय । रुघ-

नाथजो ने इम कह्योरे लाल, म्हे सिंह स्व देखाय
 ॥ १६ ॥ तव वोल्या रुघनाथजोरे लाल, सां वाई
 वाय । सिंह तणी पर गंजसोरे लाल, ए मो छै
 चवदां मांय ॥१७॥ अनुमति मा पी तदारे ला ,
 सहंस रोकड़ उन्मान । भिक्षु दिया ननी भणीरे
 ल, चारित लेवा ध्यान ॥ १८ ॥ दीख्या महोछव
 दीपतोरे लाल, वगड़ी शहर वखाण । द्रव्ये चारित्र
 धारियोरे लाल, भावे चरण म जाण ॥ १९ ॥ सम्बत्
 अठारै आठे समैरे लाल. घर छोड्यो विप जाण ।
 द्रव्य गुरु धाच्या रुघनाथजीरे लाल, पिण नाई धर्म
 नी द्याण ॥२०॥ प्रथम ढाल प्रगट पणोरे ल, कह्यो
 भिक्षु नो जन्म कल्याण । वलि द्रव्य दीक्षा वरणवी
 रे लाल, वारुं गें वखाण ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

अत्य दिवसरे आंतरे, सीम्या सूत्र सिद्धन्त ।

तीव्र बुद्धि भिक्षु तणी, सुखदाई शोभन्त ॥२॥

विविध समय रस चांचतां, वारुं कियो विचार ।

अरिहत वचन आलोचतां, पे असल नहीं अण्णार ॥२॥

यां थापिता थानक आदग्धा, आषाकर्मा अजोग ।

मोल लिया मांहे रहे, नित्य पियड लिये निरोग ॥३॥

पडिलेह्यां विण रहै पड्या, पोथ्यां रा गज पेल ।

विण आज्ञा दीक्षा दिये, विवेक विकल विशेष ॥४॥

उपधि वस्त्र पात्र अधिक, मर्यादा उपरन्त ।

दोष थापै जाण जाण ने, तिणसूं ऐ नहीं सन्त ॥५॥

सरधा पिण साची नहीं, असल नहीं आचार ।

इण विघ करै आलोचना, पिण द्रव्य गुरुसूं अति प्यार ॥६॥

पूछ्यां जाब पूरो न दै, काल कितौ इम थाय ।

पीत द्रव्य गुरुसूं परम, ते करै शोभ सवाय ॥७॥

पूछै बात आचारनीं, जाणै वैरागी जेह ।

तिणसूं पूछै बलिवली, पिण नहीं और सन्देह ॥८॥

पटधारक मिश्रु प्रगट, हद आपस में हेत ।

इतलै कुण विरतन्त हुवो, सुणज्यो सहू सचेत ॥९॥

॥ ढाल २ जी ॥

परमवो मन में चिन्तवै मुझ आंग ॥ एदेशी ॥

इह अवसर मेवाड में, राज नगर सुजाण । राज

मुद्र पासे बस्यो, अधिका त्यां आइठाण ॥ १ ॥

त्यां बस्ती घणी महाजनां तणी, जाण सूत्रांना जेह ।

वंदणा छोडी निज गुरु भणी, दिल में पड़ियो संदेह

॥ २ ॥ मरुधर में रुघनाथजी, सांभली सहू बात ।

मिश्रु ने तिहां भेजिया, शङ्का मेटण साख्यात ॥

३ ॥ बुद्धिवंत विण म ना मिटै, तिणसूं थे बुद्धि-

वान । जाय शंका मेटो जेहनी, इम कहि मेल्या
ते स्थान ॥ ४ ॥ टोकरजी हरनाथजी, वीरभाणजी
साथ । भिक्खु ऋप भारीमालजी, दीचा दी निज
हाथ ॥ ५ ॥ ऐ साथ लेई भिक्खु आविया, राज
नगर मभार । सम्बत् अठारै पनरै समै, चौमासो
गुणकार ॥ ६ ॥ चूप धरी चरचा करी, भायांथी
तिण चार । ते कहै वात भिक्खु भणी, आप देखो
आचार ॥ ७ ॥ आधाकरमी-थानक आदस्या, मोल
लिया प्रसिद्धि । उपधि बल्ल पात्र अधिकही, आ
पिण थे थाप कीधी ॥ ८ ॥ जाण किंवाइ जड़ो
सदा इत्यादिक अवलोक । म्हे वन्दना करां किण
रीतसूं, थेतो थाप्या दोष ॥ ९ ॥ द्रव्य गुरुनो वैण
राखवा, भिक्खु बुद्धिना भण्डार । अकल चतुराई करी
तदा, दिया जात्र तिवार ॥ १० ॥ कला विविध केलवी
करी, त्यांने पगां लगाया । ते कहै शंक मिटी
नहीं, पिण निसुणो मुभ वाया ॥ ११ ॥ आप वैरागो
बुद्धिवन्त छो, आपरी परतीत । तिण कारण वन्दना
करां, आप जगत में वदीत ॥ १२ ॥ इम कहिने
वन्दना करी, इह अवसर मांय । भिक्खु रे असाता
वेदनी, उदय आवी अथाय ॥ १३ ॥ अधिक ताव
अति आकरो, सीओदोहरो सहणो । उत्तम नर ने ते

अवसरे, रुड़े चित रहणो ॥ १४ ॥ अधम पुरुष दुःख
उपनां, करै हांयतराय । समचित बैदन ना सहै,
पापे पिण्ड भराय ॥ १५ ॥ तीव्र तापनी वेदना,
भिक्षु ने अधिकाय । तिण अवसर में आविया,
एहवा अध्यवसाय ॥ १६ ॥ म्हे साचां ने तो भुटा,
कियां, श्री जिन बचन उठाय । आउ आवे इह अव-
सरै, तो माठी गति पाय ॥ १७ ॥ द्रव्य गुरु काम
आवै कदी, तो हिवे बात विचारुं । कारण भिटियां
निर्पचसूं, साचो मारग धारुं ॥ १८ ॥ जेम सिद्धन्त
में जिन कह्यो, चूपधरी तिम चालूं । काण न राखूं
केहनी, भट जिन मारग झालूं ॥ १९ ॥ एहवो अभि-
ग्रह आदखो, भिक्षु ताव मभार । उत्तम पुरुष ने
आवै घणो, भय पर भवनो अपार ॥ २० ॥ दूजी
ढाले आविया, राज नगर सुरीत । आंख अभ्यन्तर
उघड़ी, निर्मल धारी नीत ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तुरत ताव तब उतरयो, विषसूं कियो विचार ।

हिवै साचो मत आदरी, करूं आतम तयो उदार ॥१॥

रत्ने जूठ लागेला मो भणी, तो करणी पकी पिछाय ।

इम चितवि सिद्धतने, वांध्या अधिक सुजाण ॥२॥

जो साचा ने झूठा, कहूँ, तो परभवरे मांय ।
 जीम पामणी दोहिली, विविध पणों दुख पाय ॥३॥
 पल्ल राखी द्रव्य गुरु भणी, जो कहूँ साचा सोय ।
 तो पिण परभवने विपे, काम कठिन अति होय ॥४॥
 ओ दूधारोत्तांडो अट्टे, एहवी मन में धार ।
 होय चार सूत्रां भणी, वांच्या घर अति ध्यार ॥५॥
 सूत्र विविध निर्याय करी, गाढी मन में धार ।
 सम्यक्त चारित विहुं नहीं, एहवो कियो विचार ॥६॥
 भायां ने भिक्षु कष्टो, थे तो साचा सोय ।
 गेह झूठा गुरु सँ मिजी; शुद्ध मग लेस्यां जोय ॥७॥
 भाया सुण हरष्या घणा; बोल्या एहवी वाय ।
 अथ म्हारी शंकां मिटी, दिल में रही न काय ॥८॥
 प्रतीत आप तणी हुंती, जिती म्हारा मन मांय ।
 तिसी दिखाडी तुरत ही, इम कही हरपित थाय ॥९॥

द्वाल्ल ३ जी ॥

(राणी भापे सुणरे सूझा ॥ पदेशी ॥)

राजनगर थी कियो विहार । चौमासो उतरियां
 सार । आवै मुरधर देश मभार रे । मन प्यारा भिक्षु
 यश र अण सुणिजै ॥ १ ॥ साधां में सहु बात
 सुणाई, रधा किरिया ओल ई । ते पिण सुण
 हरष्या मन मांहीरे ॥ २ ॥ टो रज्जी हरनाथजी ताय

भारीमा घणा सुखदाय । भी । गा पू रे
 पाय रे ॥ ० ॥ ३ ॥ वीरभाणजी विण तिणवार ।
 आद । भिक्खु ण उदार । वै गोजत शहर
 ररे ॥ ० ॥ ४ ॥ बीचै गाम नान्हा णी
 सोय । दोय थ किया वलोय । सीख इण परं
 दीधी जोयरे ॥ म० ॥ ५ ॥ वीरभाणजी ने है
 वाय । जो थे पहिलां वो गुरु पाय । तो या बात
 म रज्यो कांय रे ॥ म० ॥ ६ ॥ पहिलां बात ।
 भिड़ । य । न हुवै न मांय । तो पछै -
 भू दौरा रे ॥ म० ॥ ७ ॥ नेम तो ते पां
 रा गुरु है । न च्यां समभूणा दु र है । विग-
 डियां पछै म न रहै रे ॥ म० ॥ ८ ॥ क । विनय
 री हूं हस्यूं । दि । है । दी देसूं । युक्ति
 म ई ले रे ॥ म० ॥ ९ ॥ स्वामी एम त्यांने
 सम । या । वीरभाणजी गुंच त्या । रुदनथजी
 सो पा रे ॥ म० ॥ १० ॥ करजोड़ी ने वन्दना
 कीधी । पूछै द्रव्य रु प्रसिद्धि । भायांरी शक्का मेट
 दीधी रे ॥ ० ॥ ११ ॥ वीरभाणजी बोल्या यो ।
 तो चा भेदज गो । शक्क वै तो
 मि यो रे ॥ ० ॥ १२ ॥ धाकूर्मी थान यु
 आहार । विन कारण नित्यपिण्ड र । पिं भोगवां

ए अणाचार रे ॥ म० ॥ १३ ॥ वस्त्र पात्र धिका
 ॐ वां । त्रिन गन्या दीख्या देवां । विवेक विक
 ने मूंड लेवां रे ॥ म० ॥ १४ ॥ दिन रात्रि में जड़ां
 किंवाड़ । इत्यादिक बहु दोष विचार । त्यांरी थाप
 आपारं धार रे ॥ म० ॥ १५ ॥ भाया तो कहै साची
 साख्यात । तिणमें भूठ नहीं तिलमात । द्रव्य गुरु
 निसुणी ए वात रे ॥ म० ॥ १६ ॥ द्रव्यगुरु कहै यूं
 कांई वोलें । वीरभाणजी पाछो भग्नोले । कूड़ो तो
 भिक्खुं पास अतोल रे ॥ म० ॥ १७ ॥ म्हारे कन्हें
 तो वानगी तास । कूड़ो रास भीखणजी पास । इम
 सांभल हुवा उदास रे ॥ म० ॥ १८ ॥ वीरभाणरे
 नहीं समाही । तिणसूं आगुंच वात जणाई । हिंवे
 आया भिक्खुं अयराई रे ॥ म० ॥ १९ ॥ तंत ढाल
 कही ए तीजी । वीरभाण नी वात कहीजीं । ऋप
 भिक्खु नी वात रहीजीं रे ॥ म० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

दिव भिक्खु द्रव्य गुरु मणी, वन्दे बेकर जोड़ ।

साथे हाथ दियो नहीं; चश्मा देखा और ॥१॥

जब भिक्खु रूज जगियो; आगुंच आनी वात ।

पहिला मनडो फिर गयो; तो पूछूं साख्यात ॥२॥

कर जोड़ीं ने इम कहै; यूं क्यूं स्वामी नाथ ।

चित्त उदास तिण कारणे; माये न दियो हाय ॥३॥

द्रव्य गुरु मातै तांहरै; शंक पई सुविचार ।

तिण मूं कर शिर न दियो; मन पिण फाटो धार ॥४॥

बलि धरि ने मांहरै; मेलो नहीं आहार ।

बचन सुणी भिक्षु कहै, शंक मेटो इहवार ॥५॥

बलि भिक्षु मन चिन्तवै, म्हांमें दांमें जाय ।

संजम समगत को नहीं; पिण हिवडुं न करणी ताण ॥६॥

प्रायश्चित लेई एहने, दूं प्रतीत उपजाय ।

पदै लवकर समझायने; आणूं मारग टाय ॥७॥

इम चिन्तव द्रव्य गुरु मणी; बोलै पहवी वाय ।

शंक जाणो तो मुफ मणी; प्रायश्चित दो सुलदाय ॥८॥

इम परतीत उपजायने; मेलो कियो आहार ।

हिंवे समझावै किय विषे; ते सुणव्यो विस्तार ॥९॥

॥ ढाल ४ थी ॥

(हे खरि ने हो समझावै पण्डिता धाय—पदेशी)

हिंवे द्रव्य गुरुने हो समझावै भिक्षु स्वाम ।

निसुणो वात अमाम । सूत्र वयण दिल सरदहो ॥

१ ॥ अरि अघ हणिवे हो देव कह्या अरिहन्त । गुरु

जाणो निग्रन्थ । धर्म जिनेश्वर भाखियो ॥ २ ॥

साची सरधा हो ए जाणो तंत सार । पामें तिणसूं

पार । आज्ञा वरें धर्म को नहीं ॥ ३ ॥ .यां तीनों में

हो भेल म जाणो लिगार । अन्तर आंख उघार ।
 सूत्र सीख सरधो सही ॥ १ ॥ और वस्तु में हो भेल
 पड़े जो आय । तो रुड़ी विण विगड़ाय । तो पुन्य
 पाप भेला किम हुवै ॥ ५ ॥ शुभ जोगां सू हो
 वधै पाप एकन्त । शुभ सू पुण्य वधन्त । पुण्य पाप
 भेला किसा जोग सू ॥ ६ ॥ एके करणी हो वधै
 पुन्य के पाप । त्रिणमें मिश्र म थाप । करणी तीजी
 जिण ना कही ॥ ७ ॥ भिक्षु भाखें हो द्रव्य गुरुने
 बल्लोय । जिन वच साहमो जोय । ग्रही टेक ने
 परिहरो ॥ ८ ॥ शुद्ध श्रद्धा हो हाथ न आई श्रीकार ।
 असल नहीं चार । थाप दीसैं घणा दोपरी ॥ ९ ॥
 जो थे मानो हो सूत्र नी वात । तो थैइज म्हारा
 नाथ । नहिंतर ठीक लागें नहीं ॥ १० ॥ म्हे घर ओड्यो
 हो आतम तारण काम । और नहीं परिणाम ।
 त्रिण सू चार बार कहूं आपनं ॥ ११ ॥ अप मानो
 हो स्वामी सूत्र नी वात । छोड़ देवो पक्षपात । इक
 दिन परभव जावणो ॥ १२ ॥ पूजा प्रशं । हो ही
 अनन्ती वार । दुर्लभ श्रद्धा श्रीकार । निर्णय करो
 अप एहनो ॥ १३ ॥ विविध विनय सू हो ख्या
 वयण उदार । मान्या नहीं लिगार । क्रोध करी
 उलटा पड्या ॥ १४ ॥ भिक्षु भारी हो स्वामी बुद्धि

ना भण्डार । मन संक्रियो विचार । ए हिवड़ा न
दीसै समझता ॥ १५ ॥ धीरे २ हो समझावस्युं धर
पेम । ए विचारी एम । तिण सुं आहार एी
तो गो नहीं ॥ १६ ॥ भिक्खु भाखै हो भेलो करां
चौमास । चरचा करस्यां विमास । साच भूठ
निर्णय रां ॥ १७ ॥ साची सरधा हो आदरस्यां सुख
दाय । भूठी देस्यां छिटकाय । तब बोल्या रुघनाथ
गे ॥ १८ ॥ म्हारा धां ने हो तूं लेवै फंटाय । जो
चौमासो भेजो थाय । भिक्खु कहै रा गो जढ़ ज
ने ॥ १९ ॥ ते चरचां में हो समझे नहीं लिगार ।
करो चौरासो पीकार । दुर्लभ सामग्री ए बही ॥
२० ॥ इण विध गेधा हो भिक्खु नेक उपाय ।
तो पिण नाया ठाय । कर्म घ । तिण कारणे ॥ २१ ॥
बलि मिति हो भिक्खु दूजी बार । बगड़ी शहर
भार । ए द्रव्य गुरुने इ है ॥ २२ ॥ स्वामी
भू । हो द्वा आचार । मन में करो विचार ।
विविध ए मझाविया ॥ २३ ॥ पिण नहीं मानी
हो द्रव्य गुरु बात लिगार । ए लियो तिणवार ।
ए तो न दी म ता ॥ २४ ॥ निज त्म नो हो
हिव रुं निस्तार । एहवी मन में धार । आहार
एी तो निस । ॥ २५ ॥ चौथी ढाले हो ल्यो

च।चा सरूप । छी रीत नूप । गल घात
सुहामणी ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

- थानक चारै निररया, तडके आहारज तोड़ ।
जव द्रव्यगुरु मन जाणियो, घात हुई अति जोर ॥१॥
रहिवा जागां न मिलै, तो फिर थानक घाय ।
सेवक फिरियो शहर में, जागां म दीव्यो काय ॥२॥
जो रहिवा मिक्खु भयी, जागां दीधी जाण ।
सर्व साथ सुणव्यो सही, संघ तयी छै आय ॥३॥
कडनी कुबुद्धिज केलवी, आसी पाछा पम ।
जव भिक्खु मन जाणियो, करिवो विचार केम ॥४॥
पुर में जागां ना दिये, जो फिर थानक जाय ।
तो पाछो फन्द में पड़, दुखे निररयो थाय ॥५॥
पइवी करे विचारणा विहार कियो तिय चार ।
शुचीर सिंह नी पर, न डरपा मूल लिगार ॥६॥
आया बगडी चारणे, बावल अधिक विशेष ।
बाजी तव पग थांमिया, मिक्खु परम विवेक ॥७॥
जतसिहनी री जिहां, छत्रयां अधिक उदार ।
देखी ने आया जिहां, बैठा छत्रया मफार ॥८॥
पुर माहि जाणयो प्रगट, सुणयो द्रव्य गुरु सोय ।
आया छत्रयां ने विपे, साथ बहुला लोप ॥९॥

ढा ५ मी

(राम कहै सुप्रीवने रे लङ्का केतियक दूर पदेशी)

बगड़ी री छत्रथां मभरे, बहु लोक बोखै इ
वाय । टोसो छोड़ी मत नीकलोरे । धैर्य धरो मन
मांय । चतुर नर भिक्षु बुद्धि ना भगडार ॥ १ ॥
रुवनाथजी इसड़ी कहै रे, थे मानो भीखणजी बात ।
अब्राह्मं आरो पांचमुं रे नहीं निभोला साख्यात ॥
च० ॥ २ ॥ भिक्षु बलता भाखै भलो रे, म्हे कि
मानां तुभ बात । म्हे सूत्र बांच निर्णय कियो रे,
शङ्का नहीं तिल मात ॥ च० ॥ ३ ॥ तीर्थ श्रीजिन-
वर तणो रे, छेहड़ा ताई विचार । श्री जिन आणा
सिर धरी रे, शुद्ध पालस्युं संजम भार ॥ च० ॥ ४ ॥
ए वचन सुणो द्रव्य गुरु भणी रे, तूटी आश
तिवार । मोह आयो तिण अवसरै रे, चिन्ता हुई
अपार ॥ च० ॥ ५ ॥ सामजी ऋष नो साध थो रे,
उदैमाण कहै एम । टोला तणा धणी बाजने रे,
आंसुं पच करो केम ॥ च० ॥ ६ ॥ किणरो एक
जावै तरै रे, आवै फिर अगार । म्हांरा पांच जावै
सही रे, गण में पड़ै बिगाड़ ॥ च० ॥ ७ ॥ मोह
देखी द्रव्य गुरु भणी रे, दृढ़ चित्त भिक्षु धार ।
में घर छोड्यो तिण दिने रे, मुभ माता रोई अपार

॥ च० ॥ ८ ॥ भागलां भेलो हूं रहूं रे, तो परभव में
 पेल । विविध परे रोवणुं पड़े रे, पामें दुः विशेष
 ॥ च० ॥ ९ ॥ कठिन छाती इण विध करी रे, वाहं
 ज्ञान विचार । सेंटा रह्या तिण वसरें रे, उत्तम जीव
 उदार ॥ च० ॥ १० ॥ द्वेष स्यं तुरत नर ना डीगरे,
 राग दे तुरत चलाय । द्रव्य गुरु मोह आययो नही रे,
 पिण कारी न लागी । अंय ॥ च० ॥ ११ ॥ फिर
 बोल्या रुघनाथजी रे, जासी कितियक दूर । आगो
 थारो ने पूठो मांहरो रे, लोक लगावस्यं पूर ॥ च०
 ॥ १२ ॥ परीपह खमण री मुक्त मन मभे रे, भिदखु
 भाखें विशाल । इम तो डरायो नहीं डरूं रे, जीवणुं
 कितोएक काल ॥ च० ॥ १३ ॥ विहार कियो
 वगड़ी थकी रें, द्रव्य गुरु लारें देख । चरचा करी
 वड़लु मभे रे, सांभलज्यो सुविशेष ॥ च० ॥ १४ ॥
 रुघनाथजी इसड़ी कहै रे, सांभल भिदखु वात ।
 पूरो साधुपणुं नहीं पलें रे दुखमकाल । ख्यात ॥
 च० ॥ १५ ॥ भिदखु कहै इम भाखियो रे, सूत्र
 आचारांग मांय । ही । भागल इम भा सीरे, हिवड़ां
 शुद्ध न च य ॥ च० ॥ १६ ॥ बल संघयण हीणा
 घणा रे, पञ्चम का प्रभाव । पूरो चार पलें नहीं
 रे, नहिं उत्सर्ग प्रस्ताव ॥ च० ॥ १७ ॥ आगुंच

वि नजी भाखियो रे, इम कहसी भेष र। ए व
 णी रुघनाथजी रे, तिणवार ॥ च० ॥ १८ ॥
 गुरु रे हुई घणोरे, चरचा मांहों मांय। क्षेप
 त्र ही इहां रे, पूरी केम हाय ॥ च० ॥ १९ ॥
 द्रव्य ह है भिक्षु भणी रे, दोय घड़ी शुभ
 ध्यान। चो तो चारित्र पालियां रे, पा के न
 ॥ च० ॥ २० ॥ भिक्षु कहै इण विध है रे, बे घड़ी
 केवल ज्ञान। तो दोय घड़ी ताई रहूं रे, श्वास रुंधी
 धरूं ध्य ॥ ० ॥ २१ ॥ प्रभव जंभव आदि दे
 रे, बे घड़ी पालयो के नाहिं। केव त्यांने न उपनो
 रे, सोच विचारो मन मांहि ॥ च० ॥ २२ ॥ चवदै
 हंस शिष्य वीरना रे, त सौ केवली सोय। तेर
 सहंस ने तीन गी रे, छद्मस्थ रहिया जोय ॥ च० ॥
 २३ ॥ त्यांने के नहीं उपनो रे, त्यां बे घड़ी ल्यो
 के हिं। थारे ले त्यां पिण नहीं पालियो रे, बे
 घड़ी चरण सुहाय ॥ च० ॥ २४ ॥ रै वर्ष तेरह पखे
 रे, वीर रक्षा छद्मस्थ। थारे ले त्यां पिण नहीं
 पालियो रे, दोय घड़ी चारित ॥ च० ॥ २५ ॥ इत्या-
 दि हुई घणी रे, चरचा मांहों मांहि। समझाया
 मभ नहीं रे, किया नेक उपाय ॥ च० ॥ २६ ॥
 पवर ढाल ही पांचमी रे, चर्चा विविध प्र र।

हिव भिक्षु किण रीत सूं रे, करै आत्तम नो उद्धार ॥
चतुर नर सांभलो भिक्षु विलास ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

द्रव्य गुरु तो समझ्या नहीं, लप बहु कौधी ताहि ।

जैमलजी काका गुरु, आया त्यारि पांहि ॥१॥

मद्र सरल प्रकृति भली, जैमलजी री जाय ।

भिक्षु तास भली परे, समकार्वे सुविहाय ॥२॥

जैमलजी रे युक्ति सुं; दी सरघा बैसार ।

भिक्षु रे साथे भला, ते पिण्य हो गया त्यार ॥३॥

बात सुयी रुघनाथजी, भांग्यां तसु परियााम ।

फकीर वाली दुपटो हुसी, न हुवै थारो नाम ॥४॥

बुद्धिबन्त साधु साधवी, लैसे त्यांने लार ।

लाडे कोडे घर छोडिषा, और होसी निराधार ।५॥

थाने रोसी सहु जया, थे म विचारो बात ।

थारे बहु परिवार छै, घणा तया थे नाथ ॥६॥

थारा साधां रा जोग सुं, होसी भिक्षु रो काम ।

टोलो भिक्षु रो बाजसी, थारो न हुवे नाम ॥७॥

इत्यादिक वचनां करी पाडया तसु परियााम ।

तब जैमलजी बोलिया, सुयो भीखणजी आम ॥८॥

गला जितो हूं कल गयो, थे शुद्ध पालो सोय ।

पडितां रे जायी वते, इम बोल्या अवलोय ॥९॥

॥ टालु इ ठी ॥

(सुण सुण रे शिष्य सयाणा-एदेशी)

शिष्य भिक्षु ना महा सुखकारी । भारीमाल सरल भद्र भारी ॥ त्यांरो तात कृष्णोजी तास । बेहु घर छोड्या भिक्षु रे पास ॥ सुण सुणरे शिष्य सयाणा रुडो भिक्षु जश रसायणा ॥ भिक्षु जश रस अमृत भारी । शिव सम्पति सुख सहचारी ॥ १ ॥ आसरै दशमें वर्ष आया । भारीमाल सरल सुखदाया ॥ भेषधाखां माहि छता सोय । सुत तात भिक्षु शिष्य होय ॥ सु० ॥ २ ॥ त्यांरे चेला तणी चै रीत । तिण सूं शिष्य किया धरि प्रीत ॥ त्यांमें रह्या आसरै वर्ष चार । पछै निसरिया भिक्षु लारै ॥ सु० ॥ ३ ॥ कृष्णजी री प्रकृति करडी जाणी । भारी माल भणी वदै बाणी ॥ संजम लायक नहीं तुम् तात । तुम तो उत्तम जीव विख्यात ॥ सु० ॥ ४ ॥ आपां नवी दीख्या लेस्यां सोय । लागू होता दिसै बहु लोय ॥ आहार पाणी वचनादिक ताथ । कृष्णा जीने हुकर अधिकाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ तुम् मन मुक्त पास रहिवा रो । के निज जनक कन्हे जावारो ॥ इम पूछयो भिक्षु धर प्रेम । भारीमाल उत्तर दियो एम ॥ सु० ॥ ६ ॥ म्हारै तात थकी कांई काम । हूं तो

३।प कन्हें रहस्यं ताम ॥ संजम पालस्यं रुडी रीत ।
 मोने आप तणी परतीत ॥ सु० ॥ ७ ॥ कृष्णजीने
 भिक्षु कहै ताम । थांसूं मूल नहीं म्हारे म ॥
 चारित्र पालणो दुकर कार । तिण थाने न लेवां
 लार ॥ सु० ॥ ८ ॥ कृष्णोजी कहै मोने न ेवो ।
 तो म्हारो पुत्र मो ने संप देवो ॥ सुत ने राखसूं
 मुक्त साथ । इण ने लेजावा न देऊं विख्यात ॥
 सु० ॥ ९ ॥ भिक्षु कहै पुत्र ए थारो । त्वै तो
 न वरजां लिंगारो ॥ जत्र आयो भारोमा पास ।
 और जागां लेईगयो तास ॥ सु० ॥ १० ॥ भारीमा
 पिता ने भाखै । कृष्णजी री काण न राखै ॥ थारै
 हाथ तण अनपाण । म्हारै जाव ीव पच ण ॥
 सु० ॥ ११ ॥ भारी ल भिग्रह कीधो भारी । दिन
 दोय निस । तिवारी ॥ रखा सुरगिर जेम सधीरा ।
 हलुकर्मी मुलक हीरा ॥ सु० ॥ १२ ॥ तव चाप
 थाको तिण वार । भिक्षु ने ण पुयो उदार ॥
 थांसूंइज राजी छै एह । म्हांसूं तो नहीं मूल नेह ।
 सु० ॥ १३ ॥ इण ने हार पाणो आण दीजै ।
 रुडा जतन करी राखी ॥ म्हारी पण गति कांडक
 कीजै । किण ही ठिकाणै मोने मेलीजै ॥ १४ ॥ थे
 नहीं लियो जम भारो । जितरे करो ठिकाणो

म्हारां ॥ भिक्खु सूप्यो जैम जीने ण । जैमलजी
हरष्या ति जाण ॥ सु० ॥ १५ ॥ जैमलजी वो ।
तिणवारी । देखो भोखणजी री बुद्धि भारी ॥ सूप्यो
कृष्णोजी म्हाने सोय । तीन घरां वधावणा होय ॥
सु० ॥ १६ ॥ कृष्णो हर्ष्यो ठिकाणै हूं आयो । म्हे
पिण हर्ष्या चेलो एक पायो ॥ भिक्खु हर्ष्या टलियो
गालो । तीनां घरां वधावणा न्हालो ॥ सु० ॥ १७ ॥
भारीमालरो सङ्कट टलियो । मन वाञ्छंत कारज
फलियो ॥ छट्ठी ढाल भारीमाल भारी । रद्या अडिग
अचल गुणधारी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

हिक्खु मारीमालजी, संत आदि दे तेर ।

मनसोवो मोटो कियो, चारित लेणो फेर ॥१॥

शहर जोषाणा में सही, तेरह आवक ताहि ।

सामायक पोसा करी, बैठा बाजार रे मांहि ॥२॥

फतेबन्द सिधी प्रगट, दीवाण पद दीपंत ।

चोहटै देख्या चालता, प्रत्यक्ष तब पूछंत ॥३॥

सामायक पोसा सखर, कीधा चोहटै केम ।

थानक में क्युं ना किया, उत्तर आपो एम ॥४॥

तज थानक मन थिर कियो, मुक्त गुरु महिमावंत ।

भिक्खु भूप मारी घणा, परहर दियो कुपंथ ॥५॥

कहै दीवाण किम निसरथा, बलि श्रावक बोलंत ।

चात घणी थिरता हुवै, जव सुगजो घर संत । ६॥

दीवान कहै थिरता अत्रहि, बर्णावो सगली चात ।

श्रावक तव आखै सकल, विवरा सुघ विख्यात ॥७॥

आषाकर्मी आदि दे, दूर किया सब दोष ।

सिंघी सुग हय्यो सही, पायो परम सन्तोष ॥८॥

साधु नो ओहिज शुद्ध, मारग मोटो माण ।

प्रशंसे सिंघी प्रगट, बारुं करै बलाण ॥९॥

॥ ढाल ७ मई ॥

(आप हणे नहीं प्राण ने०—पदेशी)

फतेचन्द दीवान ते, बलि पूछा करै बारु हो ।

श्रावक थे केता सही, धार्या धर्म उदारु हो । शिव

साधन सारु हो ॥ भिक्षु जश सांभलो बारु हो ॥१॥

श्रावक कहै तेरे अछां, आतम तारण हारु हो ।

सिंघी बलि पूछै सही, संत किता सुखकारु हो ।

नीका शिव ने तारु हो ॥ भि० ॥ २॥ श्रावक कहै तेरे

सही, साधु सखर श्रद्धालु हो, भिक्षु समण शिरो-

मणि, वर माग विशालु हो ॥ भि० ॥ ३ ॥ सिंघी

कहै आछो मिल्यो, वर जोग विचारु हो । श्रावक

पिण तेरे सही, तेरे संत तंत सारु हो । भिक्षु बुद्धि

ना भण्डारु हो ॥ भि० ॥ ४ ॥ सिंघी मुख प्रशंसा

सुणी, सेव उभो सुधारु हो । तत्कृिण तिरण
जोड़्यो तुको, तेरापंथ ए तारु हो । विस्त े नाम
रु हो ॥ मि० ॥ ५ ॥

॥ सेवककृत दोहा ॥

साध साधरो गिलो करे, ते तो आप आपरो भंत ।

सुणजो रे शहर रा लोकां, ए तेरापन्थी तंत ॥ १ ॥

॥ दा तेहि ॥

लोक कहै तेरापन्थी, भिखु सवली भावै हो ।
हे प्रभु ओ पन्थ है, गौर दाय न त्रै हो । मन
भ्रम मिटावै हो ॥ सो ही तेरापन्थ पावै हो ॥ ६ ॥
पंच महाव्रत पालता, शुद्धि सुमति सुहावै हो । तीन
गुप्त तीखी तरे, भल आतम भावै हो । चित्त सू
तेरा ही चाहवै हो ॥ ७ ॥

भिखुकृत छन्द ।

गुण बिन मेष कुं मूल न मानत,

जीव अजीबका किया निवेरा ।

पुन्य पाप कुं भिन्न भिन्न जानत,

आरुव कर्मा कुं छेत डरेरा ॥

भावत कर्मा ने संवर रोकत,

निर्जरा कर्मा कुं देत बिखेरा ।

बन्ध तो जीव कुं बांधिया राखत,

शाश्वता सुख तो मोक्ष में डेरा ॥

इसी घट प्रकाश किया,
 भव जीव का मेट्या मिथ्यात अंधेरा ।
 निर्मल ज्ञान उद्योत कियो,
 ए तो है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा ॥१॥

तीन सौ तेसठ पाखण्ड जगत में,
 श्रीजिन धर्म सूं सर्व अनेरा ।
 द्रव्यलिंगी केई साध कहावत
 त्यां पिण पकड्या त्यांराइज केड़ा ॥

ताहि कुं दूर तजै ते संत
 विधि सूं उपदेश दिया रुड़ेरा ।
 जिन आगम जोय ण किया,
 जय.पाखण्डःपन्थ में पड्या विखेरा ॥

व्रत अवत दान दया बतावत,
 सावद्य निर्वद्य करत निवेरा ।
 श्रीजिन आगन्था माहें धर्म बतावत,
 ए तो है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा ॥२॥

॥ ढाल तेहिज ॥

पन्थ अनेरा में रह्यो, तिण सूं भमण भमावै हो ।
 प्रभु अब आयो तेरा पन्थ में, तेरी ज्ञा सुहावै हो ।
 तेह थीःशिव पद आवैःहो ॥८॥ तेरा वचन गौ
 री, चारु धर्म चलावै हो । तेहिज छै तेरापन्थी,
 थिर कीरत थावै हो । भिक्षु समचित भावै हो ॥
 ६ ॥ हिन्सा भूठ दत हरे, मैथुन परिग्रह मिटावै
 हो । तीन करण तीन जोग सूं, त्याग करी तन गावै

हो, त हो ॥ १० ॥ इर्या भाषा एषणा,
रुडी रीत वै हो । ए भण्ड न वणा, पर
ठण ेणा रावै हो । ति सुमति सुह ै हो ॥ ११ ॥
मन नहीं आदरै, वच । वश वै हो ।
डुई परिहरै, तीन गुप्त तंत वै हो । थिरता
पद चि थ ै हो ॥ १२ ॥ र ढा । ति,
गुण भिक्खु गावै हो । नाम तेरापन्थ निरमलो,
र्थ अ पम वै हो । खरो सुजश गावै
हो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

भारी बुद्धि भिक्खुतणी, निर्मल मेल्या न्याय ।

अरिहन्त आहा थाप ने, श्रद्धा दी ओलखाय ॥१॥

कर तयारी हुवा, तेर जणा तिणवार ।

नाम कहं हिव तेहना, मि ण शृङ्गार ॥२॥

दि लजी फतेबन्दजी, बडा सुत बेह ।

भिक्खु आचारव भला, ज्ञान । गुण नेह ॥३॥

टोकरजी हरनाथजी, भारीमाल सुविनीत ।

भद्र सुखदायका, पूज्य सुं प्रीत ॥४॥

धीरमाणजी सातमो, दि मीचन्दजी लार ।

ाम ने गुलाबजी, वृजो भारमल धार ॥५॥

रूपचन्द ने पेमजी, ए तेरां रां नाम ।

नवी दीक्षा लेवा तणा, तेरां रां परिणाम ॥६॥

रुधनाथजी रा पञ्च लै, छः जंयमलजी राः जोय ।

दोय मन्य टोला तणा, एः तेरह ही होय ॥७॥

चर्चा केयक बोलनी, करी मांहोमा तास ।

केशक अल्पज चरक्या, ऊपर आयो चौमास ॥८॥

चौमासा लां मणी, नि दिया भलाय ।

आसाढ सुदि पुनम दिने, संजम लीज्यो ताथ ॥९॥

॥ ढाल द मी ॥

(सीहल नृप कहै चन्दने पदेशी)

भिक्षु मुख सूं इम भणै, मुहिनद मोरा ।
 चौमासो उत ि जाण हो । सरधा चार मीढ्यां
 पछै मु० भेलो करस्यां आहार ण हो । र गुण
 कर गोभतो ऋष भिक्षु गुण निलो मु० धिक्क
 ओ णर ण हो ॥ १ ॥ जो श्रद्धा ि र मिली
 नहीं ० तो भेलो न करां हार हो । इम पहलां
 मभाविया ० देश मे इ हो ॥ २ ॥
 सम्वत् अठारै तरे मै, मु० पञ्चाङ्ग ले दिख्खाण
 हो । ढ सुदी पुनम दिने, मु० केलवै दीक्षा
 ल्याण हो ॥ ३ ॥ रिहन्त नी लेई न्या, मु०
 पचख्या पाप ठार हो । सि खे ि जी
 ० गिधो ंज णर हो ॥ ४ ॥ हरनाथजी हाजर
 हुंता, मु० टोकरजी रि हो । परम भग
 भारीमालजी, ० पूरो ज्यांरो विश्वा हो ॥ ५ ॥
 तरोतरे केलवा मभै, ० चौमासो हो
 देवल अंधारी ओरी तिहां, मु० कष्ट सह्यो सुविशेष

हो ॥ ६ ॥ हिवै । सो खो, ० भे हुवा
 सहु हो। र ने गुलाबजी, ० -
 दी हुवा हो ॥ ७ ॥ तत्व ति,
 ० वि जीव हो। जे सिद्धां में
 ० नहीं; ० रवै दीव हो ॥ ८ ॥ थिर-
 जी फतेचन्द ती, ० भि
 हो। टो । हरनाथजी, ० भारीमात्र बहु जाण
 हो ॥ ९ ॥ रुड़ै चित्त भेला रखा, ० वर
 वदीत हो। जीव ग णज्यो, ० परम
 हों हिं प्रीत हो ॥ १० ॥ त णा भे
 रखा, ० केयक धुर ही थी न र हो। होय पाछै
 न्यारो गो, ० न पोंहता र हो ॥ ११ ॥
 वि वीर णजी, ० रखा भि रे हजूर हो।
 अवि व रो, ० तिण निषेध ने
 वि यो दूर हो ॥ १२ ॥ पछै । पिण फिर गई,
 ० वीर णरी विशेष हो। इन्द्रियां अछने,
 ० द्रव्य त्र जीव ण हो ॥ १३ ॥ ने बो
 धा प , ० बि डी विनय थी हो।
 ० से गण बारै कियो, ० पछै णाने मूं गो
 जात हो ॥ १४ ॥ रखा ते मांहेला, ०
 त हुवा इ दूर हो। पिण पुण्य भिखु।

तणां, ० दिन दिन चढ़ते नूर हो ॥ १५ ॥ शूरां
 सिंह तणी परे, मु० सुर-गिर जे धीर हो ।
 अङ्गज ओ गंर ति घणा, मु० विड़द निभावण
 वीर हो ॥ १६ ॥ टोला छोड़ी ने निस १, ० त्यांरी
 पिण नहीं त य हो । इन्ग हजारां गोड़ीने, मु०
 दीधी गो य हो ॥ १७ ॥ तिश्य धारी
 ओपता, ० । ए शिरमणि मोड़ हो । आचार्य
 इण कार में, मु० वर न एहनी जोड़ हो ॥ १८ ॥
 सावद्य निर्वद्य शोधने, मु० दान दया ओ य हो ।
 व्रत अव्रत वर वारता, मु० भि २ भेद बताय हो
 ॥ १९ ॥ उत्पत्ति बुद्धि पारी, मु० छी धिक
 अनूप हो । दृष्टान्त विविधज दीपता, मु० वि
 चरचा : ति चूप हो ॥ २० ॥ भली ए ठमी,
 मु० भिवखु गुणारा गडारं हो । उमङ्ग री चरण
 आदस्यो, ० ए शिरोमणि र हो ॥ २१ ॥

दोहा

स्वाम मारग सचो लियो, करवा जन्म कल्याण ।

कुगुरु कुबुद्धि अति केलवी, जन भरमाया जाण ॥१॥

मागल भेषधासां तणै, उपनो द्वेष अत्यन्त ।

लोकां भणी लगाविया, विविध विलपन्त ॥२॥

कोई सङ्ग यांरो कीज्यो मती, लाग जावेला लाल ।

निन्हय छै ए निकल्या, कोई कहै जमाली गोशाल ॥३॥

यां देव गुरु ने उत्थापिया, दान दया ने उत्थाप ।

जीवः ब्रजवाँ तेह में, ए कहै भठारै पाप ॥४॥
भगु भिड़काया पुत्रां भणी साधां में चूक बताय ।

ज्युं भिक्षु सुं भिड़काविया, ओहिज मिलियो न्याय ॥५॥
जिहां जिहां भिक्षु विचरता, आगुंच जोवै बाट ।

कश्यो कन्हें जायज्यो मती, थोड़ा में होय जाय थाट ॥६॥
कोई तो प्रश्न पूछवा, केयक देखण काज ।

कुगुरां ग भरमाविया, ऊंधा बोलता नाणे लाज ॥७॥
उपसर्ग अनेक दे रखा, बदै वचन बिकरौल ॥८॥

पिण क्षमा भिक्षु तणी, बाव अधिक विशाल ॥९॥
अधिक नीत आचार नी, सुमति अधिक उपयोग ।

अधिक गुप्त गुण भागला, जशधारी शुभ जोग ॥१०॥

॥ टाल ६ मी ॥

(ब्रजवासी लाल कान्ह ते मेंरी गांगरे कांय मांरी पदेशी) :-

भिक्षु स्वाम भारी, जगत उद्धारक जशधारी
॥ ए आंकड़ी ॥ भारी रे खिन्यां गुण भिक्षु ना
भाल २ । निर्लोभी मुनि निर्मल न्हाल ॥ भि० ॥ १॥
कपट रहित शुद्ध सरल कहाय २ । निरहंकार
रुड़ी नरमाय ॥ भि० ॥ २ ॥ लाघव कर्म उपधि वर
लाज २ । सत्य वचन स्वामी सुख साज ॥ भ० ॥
३ ॥ वारु रे भिक्षु नो संजम वाह वाह २ । लीधो
मनुष्य जनम नो लाह ॥ भि० ॥ ४॥ बारु रे भिक्षु

नो तप तहती २ । रुद्धै चि नि । रमणीक
 ॥ मि० ॥ ५ ॥ रुरे द नि ने दे आण २ ।
 नित्य ति गोचरी रत प्रधान ॥ मि० ॥ ६ ॥ घोर
 ब्रह्म भिक्षु नो सार २ । सङ्ग रहित तिहुं गोग श्री
 कार ॥ मि० ॥ ७ ॥ इर्या धुन भिक्षु निराज २ ।
 एकै चाल रह्यो गजरा ॥ मि० ॥ ८ ॥ भ
 सुमति भिक्षु नी २ । निर्वद्य निर्मल
 न्हा ॥ मि० ॥ ९ ॥ एषणा ति अनुपम
 र २ । देखनहारो पा चमत्कार ॥ मि० ॥ १० ॥
 व । दि लेतां जैणा विशेष २ । भ्हेलतां अति उप-
 योग संपे ॥ मि० ॥ ११ ॥ पञ्चमी सुमति भिक्षु
 नी पिछाण २ । सावचेत भिक्षु सुविहाण ॥ मि०
 ॥ १२ ॥ व गु ण २ ।
 ूलि दया निग्रन्थ ॥ मि० ॥ १३ ॥ ऋष्ट सम्पदा
 गुण अधिकार २ । आचार्य भिक्षु अणगार ॥ मि०
 ॥ १४ ॥ आचारज गुण सु छती २ । भिक्षु
 में शोभै निश दि ॥ मि० ॥ १५ ॥ पञ्च महाव्रत
 निर्मल पालंत २ । च्यार कपाय भिक्षु टालंत ॥
 मि० ॥ १६ ॥ वश करै इन्द्रिय पञ्च विचार २ ।
 पञ्च सुमति त्रिण गुप्ति उदार ॥ मि० ॥ १७ ॥
 चार पञ्च भिक्षु अमो २ । इ हित

धिक तो ॥ मि० ॥ १८ ॥ उत्पत्ति
 बुद्धि मि नी उदार २ । तत्त्रिण ब दिये
 तंत र ॥ मि० ॥ १९ ॥ न्यमति मति णै
 वच सार २ । चित्त माहें चम र ॥ मि० ॥
 ॥ २० ॥ रु रे भिक्खु थारा न्त २ । यंकारी
 धिक अत्यन्त ॥ मि० ॥ ॥ २१ ॥ वारु रे भिक्खु
 तुक्क बुद्धि ना जाव २ । पूछतां उत्तर देवें सिताब ॥
 मि० ॥ २२ ॥ वारु रे भिक्खु तुक्क वीर्य चार २ ।
 तें वि यो उद्यम अधिक उदार ॥ मि० ॥ २३ ॥
 व रे भिक्खु तु नीत ग २ । तूं द्यो बहु
 ने भाग ॥ मि० ॥ २४ ॥ रु रे भिक्खु तूं
 गिर्वो गम्भीर २ । तूं ण-दधि कुण तीर ।
 मि० ॥ २५ ॥ व रे मि मुद्रा ऐन २ ।
 पे त मे चित्त में ॥ मि० ॥ २६ ॥ ति
 सूरत दीर्घ देह विशाल २ । नयण हस्ती
 नी ॥ मि० ॥ १७ ॥ जीव घणा तिरणा इण
 २ । गुंच देख्या दीन दया ॥ मि० ॥
 २८ ॥ त्यां जीवां रे तरण रे । २ । तूं प्रगट्यो
 मोटो मुनिरा ॥ २६ ॥ याद वै भिवु दिन
 रैन २ । न वि सावे नैन ॥ मि० ॥ ३० ॥
 धाखो शुद्ध २ । म भजन मुनि

तू महा भाग ॥ भि० ॥ ३१ ॥ नघ अथग गुण
 भिक्षु मभार २ । मैं संक्षेप कह्यो सुविचार ॥ भि०
 ॥ ३२ ॥ नवमी ढाले भिक्षु ऋष्य न्हाल २ । महिमा
 गर मोटा गुण माल ॥ भि० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

भारी गुण भिक्षु तणा, कहा कटा लग जाय ।
 मरण धार शुद्ध मग लियो, कमिय न राखी काय ॥१॥
 परम दुर्लभ श्रद्धा ट, आधी श्रिति आप ।
 तीजै उत्तराध्ययन तन्त, थिर भिक्षु चित्त थाप ॥२॥
 बहुलकर्मो जीव बहु, उपजिया इण आर ।
 दिलमें बैसणी दोहिली, श्रद्धा महा सुखकार ॥३॥
 परम पूरी धूर-पगथियो, श्रीजिन श्रद्धा सार ।
 शुद्ध सरध्यां समकित सही, भिक्षु कियो विचार ॥४॥
 धर्म तणा ह्येपो घणा, लागू बहुला लोग ।
 समभाया समझे नहीं, अधिक मूढ़ अयोग ॥५॥
 जय भिक्षु मन ज णिशो, कर तपकरु कल्याण ।
 मग नहीं दिखै चालतो, अति घन लोग अजाण ॥६॥
 घर छोड़ी मुझ गण मन्हे, सज्जम कुग ले सोय ।
 श्रावक ने बलि श्राविका, हुन्ता न दिसै फोय ॥७॥
 पदार्थ करे आलोचना, एकतर अवधार ।
 आतापन ब्रलि आदरी, सन्ता साथे सार ॥८॥
 चौविहार उपवास चित्त, उपधि ग्रही सहु तत ।
 आतापन लेवन मन्हे, तप कर तन तावंत ॥९॥

॥ ढाल १० मी ॥

(पूज्यजी पधारो हो नगरी खेविया पदेरी)

थिरपालजो स्वामी फतेचन्दजी, संत दोनूँ
सुखकार हो महामुनि । तात सुतं दोनूँ तपसी
भलां, सरल भद्र सुविचार हो ॥ म० ॥ थे भला ने
अवतरिया हो भिक्षु भरत क्षेत्र में ॥ १ ॥ टोला में
छतां बड़ा स्वामी भिक्षु थकी, त्यांने बड़ा राख्या
भिक्षु स्वाम हो । म० । यांने छोटा करने हूं बड़ो
होऊं, इण में सू परमार्थ ताम हो ॥ म० ॥ २ ॥
एकान्तर भिक्षु ऋष भला, लेवै आतापना लाभ हो
। म० । व्रत अव्रत लोकां ने बतावता, जन हर्षे सुण
जाब हो । म० ॥ ३ ॥ सरल भद्र केइक लागा सम-
भवा, बारु केइक बुद्धिवान हो । म० । ओलखणा आई
श्रद्धा आचारनी, पायो धर्म प्रधान हो । म० ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

पंच वर्ष पहिचाण रे, अन्न पण पूरो ना मिल्यो ।
बहुल पणो वच जाणरे, घी चोपड़ तो जिहांई रह्यो ॥

॥ ढाल तेहिण ॥

थिरपालजी फतेचन्दजी इम कहै, स्वामी भिक्षु
ने सोय हो । म० । क्यूं तन तोड़ो थे तपस्या करी,

समभक्ता दिसै बहु लोय हो । म० ॥ ५ ॥ थे वृद्धि
वान थारी थिर वृद्धि भली, उत्पत्तिया अधिकाय हो
। म० । मभावो बहु जीव सैणा भणी, निर्मल
वतावी न्याय हो । म० ॥ ६ ॥ तपस्या करां म्हे
त्तम तारणी, अधिक पहाँच नहीं और हो । म० ।
आप तरो थे तारो अवर ने, जाभो वृद्धि नो जोर
हो । म० ॥ ७ ॥ संत वड़ारो वचन भिक्षु सुणी,
धाखो धर चित्त धीर हो । म० । न्याय विशेष वता-
वता निर्मला, हरण्यो हिवड़ो हीर हो । म० ॥ ८ ॥
दान दया हृद न्याय दीपावता, ओलखावता आचार
हो । म० । जिन वच करी प्रभु माग जमावता,
समभया बहु नर नार हो । म० ॥ ९ ॥ प्रगट मेवाड़
पूज्य पधारिया, युक्ति आचार नी जोड़ हो । म० ।
अनुकम्पा दया दान रे ऊपरे, जोड़ां करी धर
कोड़ हो । म० ॥ १० ॥ अति उपकार करी पूज्य अत्रिया,
मुरधर देश मभार हो । म० । सखर पणें वर जोड़ां
सुणावता, इम करता उपगार हो । म० ॥ ११ ॥ व्रत
अव्रत मांड वतावता, सखरी रीत सुचह्न हो । म० ।
श्री जिन आज्ञा में धर्म श्रद्धावता, सुण जन पावै
उमह्न हो । म० ॥ १२ ॥ यशधारी भिक्षु नो जगत
में, वाध्यो जश विख्यात हो । म० । वृद्धि प्रबल

गुण पुण्य पोरसो, स्वाम भिवखु साख्यात हो । म० ।
 १३ ॥ भद्र प्रकृति बुद्धि पुण्य गुणो भला, परम
 पूज्य सू प्रीत हो । म० ॥ १४ ॥ दशमी ढाल पूज्य
 दयाल नी, जामी कीरति जाण हो । म० । देश
 प्रदेश माहें जश दीपतो, विस्तरियो सुविहाण हो
 । म० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

साध श्रावक ने श्राविका, सखर भला सुविनीत ।
 समणी न हुई खाम रे, चर्ष कित्ता इम बीत ॥१॥
 किण ही मिक्खु ने कह्यो, तीर्थ धारे तीन ।
 साध श्रावक ने श्राविका, समणी नहीं सुचीन ॥२॥
 तिण कारण छै थांहरे, मोदक मोटो माण ।
 समणी विण खाण्डो सही, प्रत्यक्ष देख पिछाण ॥३॥
 मिक्खु ऋष भाषे इसो, लाडू खाण्डो लेख ।
 पण चौगुणी तणी पवर, स्वाद अनूप सपेख ॥४॥
 भाळी बुद्धि उत्पात सूं, उत्तर दियो अनूप ।
 दिन केते हुई दीपती, समणी तीन सदुप ॥५॥
 तीन बायां ल्यारी हुई, संजम लेवा साथ ।
 मिक्खु ऋष भाषे भलो, सुन्दर सीख साख्यात ॥६॥
 संजम लेवो साथ त्रिण, पण तीना में पेख ।
 वियोग एक तणुं हुवां, स्युं करिवो सुविशेष ॥७॥
 सलेषणा करणी सही, त्यां दोयां ने ताम ।
 करार पको इम करी, संजम दीधो स्वाम ॥८॥
 कुशलांजी मटू कही, त्रोजी अजबू ताय ।
 एक साथ अदराधियो, साधपणुं सुखदाय ॥९॥

॥ हफल ११ मी ॥

(स्वामी ऋषय रायचन्द्र राजा प्रदेशी)

गजव गुण ज्ञान करी गाजें रे, गजव गुण ज्ञान करी गाजें । गुरु भिक्षु पै अजव छटा हद भारी-माल छाजें ॥ ए आंकडो ॥ सरल भद्र भल श्रमण शिरोमणि. ऋषय रुडा राजें । चर्ण कर्ण धर समखां चित्त सं. भ्रम कर्म भाजें ॥ ग० ॥ १ ॥ चान्त दांत चित्त शान्ति खरालज, उभय थकी लाजें । परम विनीत मीत हद पूरण, शिव रमणी साजें ॥ ग० ॥ २ ॥ जोडी गोयम वीर जिती वर, शिष्य वारु जै, कार्य भलायां वेकर जोडी, करत मुक्ति जें ॥ ग० ॥ ३ ॥ परम पीत पूज्य सुज पयसी पद भव दधि पाजें । कठिन वचन गुरु सीख कहै तो, समचित्त मुनि साजें ॥ ग० ॥ ४ ॥ उत्तराध्ययन छत्रीसे अध्ययने, उभां छता अधिकारी । वार अनेक गुणियां विध सं, धुर गुरु आज्ञा धारी । गजव गुण ज्ञान गरव गारी रे ॥ ग० ॥ गुरु भिक्षु पै जव छटा हद भारी माल भारी ॥ ५ ॥ भिक्षु भापै भारी-माल ने सांभल सुवारी । काडें खूंचणो गृहस्थ कोई तो तेलो डंड त्यारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ भारी भापै भिक्षु ने, साचो कहै सारी । तव तो तेलो

तन्त रो, पिण्ण द्वेष गत् धारी ॥ ग० ॥ ७ ॥
 भूठो नाम लिये कोई जन, लागू अति ारी ।
 करिवो ते स्वामी प्र शो, आज्ञा धिकारी ॥ ग० ॥
 ८ ॥ भिक्खु कहै जो तो भाषै, तो तेलो त्पारी ।
 अण तो कोई आल दिये, तो सञ्चित सम्भारी ॥
 ग० ॥ ९ ॥ पूरव संचित पाप उदय नो, तेलो तंत
 ारी । स्वामो नो वच छ कियो कर जोड़ी अंगी
 ारी ॥ ग० ॥ १० ॥ भारीमाल सुवनीत इसा भड़,
 सुगुणा सु कारी । पुण्य प्रबल थी भिक्खु पाया,
 ममत म ारी ॥ ग० ॥ ११ ॥ घोर घटा घन
 गरजारवसी, बाण सुधा उवारी । भि २ भेद भली
 पर भाषत, दा त दमि ारी ॥ ग० ॥ १२ ॥ हृद
 ना त सुण जन हर्षत, निर त नर नारी । नयना
 नन्दन मति निकन्दन, पद सूरत प्यारी ॥ ग० ॥
 १३ ॥ हिये निर्मल हरनाथ मुनि, टोकरजी तंत
 ारी । परम त्रिनोत भार जो, भल सन्त साता
 ारी ॥ ग० ॥ १४ ॥ घर छोड़ी बहु थया मुनि,
 धन्य ज्ञान गर्ब गारी । समणी पिण्ण बहु थई सयाणी
 ारी ॥ ग० ॥ १५ ॥ दिन २ भिक्खु
 नो ग दीपत, ासण शिण्णगारो । पंचम का स्वाम
 परगटिया, तसु बलिहारी ॥ ग० ॥ १६ ॥ एकाद

शमी ढाल अनोपम, वारु त्रिस्तारी । कठे तलक
मिक्खु गुण कहिये, पामत किम पारो ॥ ग० ॥ १७ ॥

आगम रहिस अनुपम लही, स्वाम मिक्खु सार ।

शुद्ध श्रद्धा शोधी सही, बलि आचार विचार ॥१॥

दान सुपात्रे दाखियो, सन्त मुनी ने सार ।

असंजती ने आपियां, एकन्त पाप असार ॥२॥

भगवती अष्टम शतक भल, पण्डप उद्देशे आप ।

असंजती ने आहार दे, प्रभु कह्यो एकन्त पाप ॥३॥

दे गृहस्थ ने दान ते, अनुमोदे अणगार ।

निशीथ पनरमें निरखल्यो, डंड चौमासी धार ॥४॥

सावज दान अशंसियां, हिन्सा रो बांछणहार

सूयगडा अङ्ग सूत्र में, आख्यो मुनि आचार ॥५॥

आवक सामायक मन्हे, अधिकरण अति जाण ।

भगवती सप्तम शतक भल, प्रथम उद्देशे पिछाण ॥६॥

आवच गृहिनी वर्णश्री, अणाचार में आम ।

दशवैकालिक देखल्यो, तीजे अध्ययने ताम ॥७॥

आवक नो खाणो सर्व, अवत में अधिकार ।

वर्ण उववाई बीसमें, बलि सुगडांग विचार ॥८॥

इत्यादिक जिनवर अखी, शोधी मिक्खु स्वाम ।

बले संक्षेपे वर्णबूं, सूत्र साख सुख ठाम ॥९॥

ढाल १३ मी ।

(पूज्यने नमै शोभो गुण करै पदेशी)

पुत्र भगुनो परवरो, उत्तराध्ययन उमंग । सुज्ञानी
रे । त्रि जिमायां तमतमा, अउदमे ज्मयण
सुचंग सुज्ञानी रे ॥ श्रद्धा दुर्लभ देवां कही ॥

१ ॥ आद्रमुनि इम आखियो, सूयगडांग छुट्टे
सम्भा । सु० । ब्राह्मण वे सहंस जिमावियां
नरय तणा फल न्हाल । सु० ॥ श्रद्धा० ॥ २ ॥
आणन्द श्रावक लियो अभिग्रहो, सात में अङ्ग
श्रीकार । सु० । अन्य तीर्थी ने आपूं नहीं अस्यादिक
च्यारुं हार । सु० ॥ ३ ॥ प्र च गोशालाने पिया,
सकडाल सेम्भा संथार । ० उपासग सातमें खियो
नहीं धमं तप खिगार । सु० ॥ ४ ॥ देतो लेतो
वतमान देखने, मून नही तिणकाल । सु० । पंचम
अध्येने परवरो, सूयगडा इ म्भ । ० ॥
५ ॥ दुःखी गालोढो देखने, प्रमुने गौत पुछन्त
। सु० । 'किंद ।' इण दान किसो दियो, विपाक सूत्रमें
वृत्तन्त । सु० ॥ ६ ॥ अत्रत भात्र शत्र भाखियो ठाणा-
अंग दश में ठाण । सु० । कोई व्रत सेवायां
धर्म कहै, जिन मारग रा अजाण । सु० ॥ ७ ॥ नव
प्रकारे पुण्य नीपजै, नवमा ठाणा न्हाल । सु० ।
समचै नत्रं ही कह्या सही, समचै मन वचन संभाल
। सु० ॥ ८ ॥ करणी धर्म अधर्म नी कही, जुजई
दोन सुजाण । सु० । आचारंग चौथा ध्ययनमें,
तीजो मिश्रनी करणी म ताण । सु० ॥ ९ ॥ आज्ञा
माहें धर्म आखियो, बोलवो जुगतो न बाहार । सु० ।

उत्कृष्टी चरचा आचारंगमें ॥ छट्टे अध्ययन रे दूजे
 विचार । सु० ॥ १० ॥ जिन आज्ञा तणा अजाणने,
 समकित दुर्लभ सुजाण । सु० । आचारंग चौथे
 ध्ययनमें, चौथे उदेशे पिछाण । सु० ॥ ११ ॥ उद्यम
 करै आज्ञा विना, आज्ञामें लस । सु० ।
 सुगुरु कहै वे बोल होज्यो मती, आचारंग पांचमारै
 छट्टा मांय । सु० ॥ १२ ॥ आज्ञा लोपी छान्दै चालै
 आपरै, ज्ञान रहित गुण हीण । सु० ॥ आचारंग
 दूजा अध्ययन में, छट्टे उदेशे सुचीन ॥ सु० ॥ १३ ॥
 प्रमादी द्रव्यलिंगी पासत्था, वीर कह्या आज्ञावार
 अवधार । सु० । आचारंग चौथा अध्ययनमें, पिण
 धर्म न कह्यो आज्ञा वार सु० ॥ १४ ॥ साधां छोड्यो
 उन्मार्ग सर्वथा, आइस्यो मार्ग उदार । सु० । आव-
 सग चौथा अध्ययनमें, साधां छोड्यो, ते अधिक
 असार । सु० ॥ १५ ॥ चार मंगल उत्तम शर्ण चिहुं,
 केवली परुष्यो धर्म मंगलीक । सु० । एहिज उत्तम
 शरणो पिण एहनो, तंत आवसगमें तहतीक । सु० ।
 ॥ १६ ॥ इत्यादिक बोल अनेक छै, आगममें अधि-
 काय । सु० । स्वामी मिश्रु शोध शोधने; आछो
 रीत दिया ओलखाय ॥ सु० ॥ १७ ॥ पाखंडियां
 प्रभु पंथ उत्थापियो, उलव्यो जिन वचन अमोल

। सु० । भिक्षु आगम न्याय शोधी भला, प्रगट
 कीधी पा एडी रो पोल । सु० ॥ १८ ॥ व
 दानमें धर्म द्वायने, मतिहीण न्हाखै फन्द मांय
 । ० स्वामी सूत्र सम्भालने; व्रत अव्रत दीधी
 व य । सु० ॥ १९ ॥ धम आगन्या बारै धारने,
 भेषधा ं मां ो भ्रम जाल । सु० । धिर नीव
 ज्ञा भिक्षु थापने, बारु जिन वच थाप्या विशा
 । सु० ॥ २० ॥ आगन्या बारै धर्म पा ं आद ं
 वर भिक्षु पूज्यो इम वाय । सु० । आगन्या
 बारै धर्म किण परुषियो, इणरो मोने नाम वत
 । ० ॥ २१ ॥ विकल कहै म्हारो म । बांजणी,
 दियो तिणरो दृष्टान्त । सु० । वेरयाना पुत्र तणुं
 बलि, रा न्याय मेल्या धर न्त । सु० ॥ २२ ॥

मि खु स्वाम कृन

जिण धर्म री जिन ज्ञा दिये, जिन धर्म
 सि त्रै जिनराय । भविक जन हो । ज्ञा बारै
 धर्म केणै सिखावियो, इणरो आज्ञा देवै ण ताय ।
 । भ० । श्री जिण धर्म जिन आज्ञा तिहां ॥१॥ कोई
 कहै म्हारो माता है बांजणी, हूं छूं तिणरो अंग
 त । म० । ज्यूं मूरख कहै जिन आज्ञा बिना,
 करणी कियां धर्म साख्यात । भ० ॥ २ ॥ मा विन

बेटारो जन्म हुवै नहीं, जनमें ते वांज न होय । भ० ।
 धर्म छै तो जिन आगन्या, ज्ञानहीं तो धर्म नहीं
 कोय । भ० ॥३॥ वेश्या पुत्र ने पूछा करै, थारी कुण
 माय ने ए तात । भ० । तो ओ नाम बतावै किए
 तात रो, ज्युं । आगन्या वारला धर्म नी वात । भ०
 ॥४॥ वेश्या रो अंग जात उपनो, उणरो कुण हुवै
 उदेरी ने वाप । भ० । ज्युं गन्या वारै धर्मने पुण्य
 तणी, जिन धर्मी तो कुण करै थाप । भ० ॥ ५ ॥
 वेश्या रो अंग जात उपनो, उण लखणो हुवै उदेरी
 ने वाप । भ० । ज्युं आज्ञा वारै धर्मने पुण्य तणी,
 भेषधारी र कक्षा थाप । भ० ॥ ६ ॥ इण ज्ञा
 वारला धर्म रो कुण धणी, कुण ज्ञा देवै जोड्यां
 हाथ । भ० । देव गुरु मून साभ न्यारा हुवा, इणरी
 उत्पत्ति रो कुण नाथ । भ० ॥ ७ ॥ दुष्ट जीव मंजारी
 ने चीतरा, छल सं करै पर प्राणी नी घात । भ० ।
 ज्युं दु हिंसा धर्मी जीवड़ा, छल सं घालै लोकारे
 मिथ्यात । भ० ॥८॥

॥ हा तेहि ॥

इत्यादिक ज्ञा उपरै, स्वामी न्याय मेव्या
 सुखदाय । सु० । भाख्यां भिन्न २ भेद भली परै,
 कसर न राखी काय । सु० ॥ २३ ॥ वारु ढाल कही

ए रमी. दान आ ऊपर सार । ० । बलि
श्रद्धा तणी बहु बार , तिणमें सूत्र स तंत
सार । सु० ॥ २४ ॥

दोहा

पुण्यरी करणी, परबड़ी, श्रीजिन आगम सिन्ध ।
मिक्षु. भली परै, प्रगट करी प्रबन्ध ॥१॥
निर्जरारी करणी निमल, जिन आक्षा में जाण ।
ते शुभ जोग निर्वध त्याँ, पुण्य बन्ध पहिचाण ॥२॥
विर्ह आक्षा बारली, सावद्य करणी सोय ।
पाप बन्धे तेहथी प्रगट, जिण थी पुण्य म जोय ॥३॥
शुद्ध बहिरावै साधने, कहि निर्जरा एकन्त ।
भगवती अष्टम शतक भल, छट्टे उद्देशे सुचिन्त ॥४॥
शुभ लाम्बो आऊ सखर, तसु बन्ध तीन प्रकार ।
हिन्सा मूठ सेवे नहीं, सन्त भणी दे सार ॥५॥
बहिरावै वन्दना करि, आहार मनोश्च उदार ।
भगवती पंचम शतक भल, छट्टे उद्देश विचार ॥६॥
वन्दना ना फल वर्णव्या, नीच गीत क्षय नाश ।
ऊंच गीत नो बन्ध इम, उत्तराध्ययन उजास ॥७॥
न्यावच कीधां बन्ध बलि, तीर्थकर पुण्य ताम ।
गुणतीसम ज्ञानी कह्यो, उत्तराध्ययने आम ॥८॥
इत्यादिक आक्षा तिहां, पुण्य नो बन्ध पिछाण ।
समय शोध मिक्खु सखर, आखी-उज्जम भाण ॥९॥

॥ दाल १३ मी ॥

(पुण्य नीपजै शुभ जोग सूं रे दाल पदेशी)

दाखी व्यावच दश प्रकारनी रे लाल । ठाणा
अङ्ग दशमें ठाण हो । भविकजन । प्रगट दर्शो ही

१४ पिच्छाणज्योरे लाल । जिण सू पुण्य बंधे निर्जरा
 जाण हो । भ० ॥ स्वामी श्रद्धा देखाई श्रीजिन
 वयण सू रे ला ॥ १ ॥ कालोदाई पूछ्यो
 कर जोड़ने रे लाल । भगवती में भाख्यो भगवन्त
 हो । भ० । पाप स्थानक अठारह परहस्यां रे लाल ।
 कल्याणकारी कर्म वन्धन्त हो । भ० ॥ स्वा० ॥ २ ॥
 सेवै पाप स्थानक अठारह सही रे लाल । वन्धै पाप
 कर्म विकराल हो । भ० । सातमें शतक सम्भाल
 ज्यो रे लाल । दाख्यो दशमें उद्देशे दयाल हो । भ०
 ॥ ३ ॥ कस वेदनी पिण इमहिज कही रे लाल ।
 अठारह पाप सेव्यां असराल हो । भ० । न सेव्यां
 अककस भर्त नी परै रे लाल । भगवती सातमा रे
 छट्टे भाल हो । भ० ॥ ४ ॥ आख्यो ज्ञाता रे आठमा
 अध्ययनमें रे लाल । वीस वोल तीर्थङ्कर पुण्य बंधाय
 हो । भ० । वीस ही निर्वद्य वर्णव्यारे लाल । श्री
 जिन आज्ञामें शोभाय हो । भ० ॥ ५ ॥ सूत्र विपाक
 में सुवाहु तणी रे लाल । गौतम पूछा करी प्रभु
 पास हो । भ० । 'किं दत्ता' इण दान किसो दियो रे
 लाल । वारु निर्वद्य करणी विमास हो । भ० ॥ ६ ॥
 अणुकम्पा सर्व जीवारी आणियां रे ला । प्राणी ने
 दुख नहीं उपजाय हो । भ० । सातावेदनी तिणरै

बन्धै सही रे लाल । शतक सातमें भगवती सुहाय
 हो । भ० ॥७॥ करणी आठ कर्म बन्धनी कही रे
 लाल । भगवती आठमारे नवमे भेद हो । भ० ।
 तिणमें निर्वद्य करणी पुण्य तणी रे लाल । सांवद्य
 पापरो करणी संवेद हो । भ० ॥८॥ जयणा सूं
 साधु अहार करै जिहारे लाल । पाप न बन्धै पिछाण
 हो । भ० ॥९॥ साधुरी गोचरी असावज सही रे
 लाल । दशवैकालिक देख हो । भ० । अध्ययन
 पंचमें आरि यो रे लाल । बाणमी गाथा विशेष
 हो । भ० ॥१०॥ त कर्म ढीला पड़े सहीरे लाल ।
 शुद्ध आहार करतां सार हो । भ० । पहिले शतक
 भगवती नवमें पे ल्यो रे लाल । एहवा श्रीजिन
 वचन आराध हो । भ० ॥ ११ ॥ इ ।दिक बहु बोल
 नेक छैरे ल । िजिन आज्ञामें सोय हो । भ० ।
 तिणसूं निर्जरा हुवै पुण्य बन्धै तिहारे लाल
 ।मी ओल ।या सूत्र जोय हो । भ० ॥ १२ ॥
 सावज करणी आज्ञा बारै सही रे लाल । प्रगट
 थाप्यो पाखण्डयां पुण्य हो । भ० । भिक्षु आगम
 न्याय शोधी भला रे लाल । ज्यांरी श्रद्धा देखाई
 जबून हो । भ० ॥ १३ ॥ तंत ढाल कही ए तेरमी रे
 लाल । निर्वद्य करणी पुण्य री निर्दोष हो । भ० ।

भिक्षु ओलखाई भांत भांत सूं रे ला । मिलै तिण
सूं विच मोच हो । भ० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

सूत्र में समचै कही, अणुकम्पा अधिकार ।

भिक्षु तास भली परै, शोध लागा तन्तसार ॥१॥

जीव असंजती जेहनो, जीवण बान्छै जाण ।

सावज भु म्पा सही, मोहराग महि माण ॥२॥

मरणो बंछ्या द्वेष महि, जीवण राग जिचार ।

पाप अठारमें प्रगट, भ्रमण करावै भार ॥३॥

मोहराग अनुकम्प में, आज्ञा न दिये आप ।

इण कारण सावज छै; प्रगट राग है पाप ॥४॥

मरणो बांछै ते सही, श्रीजिन आज्ञा सार ।

पाप टलावै पार को, ते निर्दध इकतार ॥५॥

निर्वध करुणा निर्मली, सावज अधिक असार ।

विविध सूत्र निर्णय सखर, स्वाम दियो तंतसार ॥६॥

प्रायश्चित आचै प्रगट, अरिहन्त आज्ञा बार ।

अनुकम्पा सावज छै, बारु हिये विचार ॥७॥

बाप भैंस आक थोर नो, प चारुं ही दूध ।

ज्युं अनुकम्पा जाणज्यो, मनमें राखी सुध ॥८॥

आक दूध पीधां थकां, जुदा हुवै जीव काय ।

ज्युं सावज अणुकम्पा कियां, पाप कर्म बंधाय ॥९॥

॥ ढाल १४ की ॥

(.इया धर्म श्री जिनजी री वाणी पदेशी.)

अनुकम्पा स जीवनी आणी, बान्धै छोड़े धु
तिण वारोजी । छोड़ताने अनुमोद्यां चौमासी, निशीथ

बारमें निरधारोजी ॥ स्वाम भिक्षु निर्णय कियो
 सूत्र सं ॥ १ ॥ बाघ सिंह हिंसक जीव विलोकी,
 मार न कहै मतिवन्तो जी । मति मार नहीं कहै राग
 आणी मुनि, सूयगडांग इकत्रीस में संतोजी ॥ २ ॥
 वीर असंजम जीतव बरज्यो, दशमें सूयगडांग दया-
 लोजी दशमें ठाणै बलि आचारङ्गमें, बारुं बचन अनेक
 विशालो जी ॥ ३ ॥ उत्तराध्यायन बावीसमें अध्येने,
 नेम पाछा फिख्या जीव न्हालोजी । इतरा जीव
 हणै मुझ अर्थे, बारु फल पर भवन विशालोजी ॥४॥
 मिथिला नगरी बलती जाण नमि मुनि, स्हामो न
 जोयो सोयोजी । उत्तराध्ययन रे नवमें अध्ययने,
 कुरणा सावज नाणी कोयोजी ॥ ५ ॥ मनुष तिर्यच
 देव मांहों मांहीं, विग्रह देखी विशेषोजी । जीत हार
 बांछणी बरजी जिन, दशवैकालिक सात में देखोजी
 ॥ ६ ॥ बायरो वर्षा शीत तावड़ो कलह उपद्रव
 रहित सुकालोजी । बोल सातूं ही बांछणा बरज्या,
 दशवैकालिक सात में दयालोजी ॥७॥ दूजै आचा-
 रङ्ग अध्ययन दूसरे, प्रथम उद्देशे सुपन्थोजी । माहोंमा
 गृहस्थ लड़ता देखी ने मुनि, मार मत मार न कहै
 महन्तोजी ॥ ८ ॥ तीन आत्मश्रृष तीजा ठाणा रे
 तीजै, देणो उपदेश हिंसक देखीजी । न समझे

तो मून राखणी निरम , वलि एकन्त जाणो विशेषी
 जी ॥६॥ उत्तराध्ययन रे इकवीस में अध्ययने, तस्कर
 ने मारतो देखी तायोजी । समुद्रपाल लियो वर
 संयम, मोह कुरणा नाणी मन मांयोजी ॥ १० ॥
 समचे अनुकम्पा कही ते साम्भलो, लखण आज्ञा
 थकी मीढ लीज्योजी । प्रभु आज्ञा देवै तेतो निर्वद्य
 प्रत्यक्ष, आज्ञा नहीं ते सावज ओलखोज्योजी ॥११॥
 अणुकम्पा सुलसारी आणी, सुर हरण गवेषी सोयोजी ।
 पुत्र देवकीरा म्हेल्या प्रत्यक्ष, अन्तगढ़ में अवलोयो
 जी ॥ १२ ॥ ईंट उपाड़ मूकी कृष्ण आवत, अणु-
 कम्पा पुरुष नी आणीजी । अन्तगढ़ दशा में पाठ
 अनोपम, जिन आगन्या नहीं जाणीजो ॥ १३ ॥
 उत्तराध्ययन वारमें अध्ययने, अणुकम्पा हरकेशी
 नी आणीजी । छात्राने ऊंधा पाड्या यक्ष हलकर,
 प्रत्यक्ष सावद्य पिछाणीजी ॥१४॥ रेणादेवीरो करुणा
 करी जिन ऋष, स्हामो जोयो साक्षातोजी । नवमें
 अध्ययने ज्ञाता मांहे न्हालो, अनर्थ दुःख उत्पतो
 जी ॥ १५ ॥ कोई कहै कलुणारस छै करुणा,
 अणुकम्पा नहीं आखीजी । अनुकम्पा करुणा दया
 अनुक्रोस ए, कलुण रसना नाम अमर साखीजी ॥
 १६ ॥ करी नेम जीवारी अनुकम्पा, अनुक्रोस पाठ

आछोजी । तिण अनुक्रोस नो अर्थ कुरणा टीका में,
सावज निर्वद्य कलुणरस साचोजी ॥ १७ ॥ सम्यक्त
बिन मेघ गज भव साम्प्रत, अणुकम्पा सुसत्तारी
आणीजी । प्रत संसार मनुष्य आयु प्रगट, प्रथम
व्ययन ज्ञाता में पिछाणीजी ॥ १८ ॥ निज गर्भरी
णुकम्पा निमते, रूडो भोगव्यो धारणी राणीजी ।
प्रथम अध्ययन ज्ञा हीं प्रत्यक्ष, जिहां जिन
आगन्या किम जाणीजी ॥ १९ ॥ अभयकुमार नी
र णु ग, दोहलो पूखो धारणी रो देवोजी ।
ए पिण ज्ञाता रे प्रथम अध्ययने, सम्प्रत सा
णो स्वयमेवोजो ॥ २० ॥ ी तेजू लेश्या
म्हेली ६ ी, अनुकम् गोशाला री णीजी ।
सूत्र भगवती पनरमें शतके, वृत्ति माहिं सराग ब १-
णीजी ॥ २१ ॥ प वणा सूत्र रे छत्रीसमें पद,
लब्धी तेजू फो ि ि या गौजी । तिणरा दोय
भेद उष्ण शीतल तेजू छै, शी तेजू फोड़ी वीर
गौजी ॥ २२ ॥ ही साधुरी हर्ष छेयां वैद्य ने
क्रिया, नहीं धुरे ब्रिया निहालीजी । पिण धर्म
अन्तराय साधुरे पाड़ी वैद्य, भगवती सोलमारे तीजे
लीजी ॥ २३ ॥ इत्यादिक बोल अनेक आख्या
छै, चै सूत्र माहीं सोयोजी । जिन ज्ञा नहीं

ते सावज जानो, आज्ञा ते निर्वद्य अवलो-
 योजी ॥ २४ ॥ नेम समुद्रपाल ने नमि ऋषि, आतम
 ऋष अवधारोजी । निर्वद्य गन्यां में छे निर्मल,
 सावज भ्रमण संसारोजी ॥ २५ ॥ स्वामि भिक्षु ए
 सूत्र शोधो, अनुकम्पा लेखाईजी । विवध हेतु
 न्याय जुगति वताया, कुमिय न राखी काईजी ॥ २६ ॥
 भेयधारी भ्रम पाड़ें भोलाने, दया हेरागने
 दिखाईजी । सिद्धान्तरा जोर सूं भिक्षु स्वामी,
 असल श्रद्धा लेखाईजी ॥ २७ ॥ चकदमी ढाल
 सुन जन चतुर, अनुकम्पा निर्वद्य आदरजोजी ।
 रुद्धी आसता भिक्षुनो राखी, पा एड मत परहरजोजी
 ॥ २८ ॥ दान दया सूत्र सम्ब देखाई, खसड प्रथम
 धर खंतोजी । सूत्र नेश्राय ए ज्ञान स्वामनो, ति
 ज्ञान नो भेद सुतंतोजी ॥ २९ ॥

कृष्ण १

जय जश कारण दुःख विडारण, सुमग धारण
 स्वामजी । शुद्ध सुमति सारण कुमति वारण, जगत
 त्तारण कामजी । प्राक्रम मृगपति सखर धर चित्त,
 ज्ञान नेत्रे ऋषि गुणी । जिन मया केतु हद सुहेतु,
 नमो भिक्षु महा मुनि ॥

तिथय खर

सोर १ १

प्रथम खण्ड पहिवाण रे, रचियो कड़ी रीतं सू ।
खण्ड दुजे गुण जाण रे, दृष्टन्त कहं दयाल वा ॥

॥ देहा ॥

भाख्यो दान द्या अस ह, जिम भाख्यो जिनराज ।
बुद्धि उत्पत्तिया महाबली, साध्यो शिव कथ साज ॥१॥
मति ज्ञान महिमा निलो, दीय भेद तसु देख ।
सूत्र नेत्राय सिद्धन्त छै, सूत्र बिना सम्पेख ॥२॥
सूत्र कहीजे बात सह, निर्मल सूत्र नेत्राय ।
बुद्धि सूं मिलती बात बर, सह असूत्र नेत्राय ॥३॥
सूत्र अद्दा सखर, दिखार्हे सार ।
सूत्र तणो नेत्राय शुद्ध, अ अर्थ उदार ॥४॥
बार बुद्धि सूं दि वी, दिये विविध दृष्टान्त ।
असूत्र नेत्राय ओ तो, बर नन्दी वि ॥५॥
हिवे असूत्र नेत्राय हद, दिया स्वाम दृष्टान्त ।
मति महा निर्मलो, तणो शोभत ॥६॥
केवल रतो कह्यो, मति ज्ञान महाराज ।
वा लेख पिछाणज्यो, सूत्र भगवती साज ॥७॥
सखरो मिश्रु - नो, महा मोटो मति ज्ञान ।
सावा न्यायज शोधिया, दृष्टान्त देई प्रवान ॥८॥
उत्पत्तिया बुद्धि सूं अख्या, मिलता न्याय मुणिन्द ।
केशी नी परे शुद्ध कथा, दृष्टान्त मति दीपन्त ॥९॥

॥ ढाहल १५ मी ॥

(अमड भड रावणा इन्दा सुं अडियो रे पदेशी)

पाखण्डियां वज दान परूपियो, त्याने भिखु
 पूछयो तिणवार । वज में पुन्य श्रद्धियो, ए
 ंभ ज्यो हेतु उदार ॥ स्वामी बुद्धि गरु, बार
 ेल्या न्याय विशाल । धि बुद्धि गरु भ
 उत्पतिया बुद्धि ल ॥ १ ॥ पांच सीरी यो ेत
 परवरोजी, चणा तणो चित्त धार । नाज पांचसौ
 मण चणा निपना, तव म जो कियो तिणवार ॥ २ ॥
 घर मांहे तो धन पांरे घणुंजी, करां दान धर्म
 कहि वार । एक जणौ सौ मण चणा आपिया, बहु
 भिख्याखां ने बोलाय ॥ ३ ॥ दिया ँ मण चणारा
 दूसरे, सेकाय भूगरा सोय । त्यांरी गुगरी तीजे करा-
 यने, जिमाया भिखाखां ने जोय ॥ ४ ॥ चौथे रोठ्यां
 ै मण चणा तणी, कडी पाखती कराय । भि ारी
 रांकादिक भणी, जुगि सुं दिया जिमाय ॥ ५ ॥
 सौमण चणा पांचमें वोसराविया, तिणरे हाथ
 लगावा ना त्याग । कहो धम पुन्य घणो केहने,
 सखरो उत्तर देवो सताव ॥ ६ ॥ भगवन्तरी आज्ञा
 किय भणी, कुण ज्ञा र कहात । एम सुणने
 उत्तर आयो नहीं । ऐसी भिखुनी बुद्धि उत्पा ॥७॥

दानं उपरान्त दूसरो, स्वामि मिश्रुं दियो
सुखदाय । हलुकर्मी सांभल हर्षे घणां, भारी कर्मी
द्वेष भराय ॥ ८ ॥ मिश्र्या मांगतो डोगरो, भमर गो
भ्यागत दुखियो ए । धर्मात्मा भूखाने धानं घो,
बिरुआ बोलै बचन विशेष ॥ ९ ॥ एक जगौ अणु-
म्पा आणने, सेर चणा दिया सोय । आंघाम
मिारी रै घणा, आशी देवै तोय ॥ १० ॥
आगै जाई एम बोरियो, सेर चणा दीधा सेठ
ए । पिदान्त नहीं कोई पीस दो, रु छै कोई
धर्मी वि ॥ ११ ॥ एक बाई कम्पा आणने,
दियो हते पाण । बरि गौ ई इम
बोलियो, कोई धर्मी पिछाण ॥ १२ ॥ ए सेठ
सेर चणा पि पीस दिया दूजी पुण्यवान ।
गो फाणी नहीं, जिण रोटि कर दो
धन ॥ १३ ॥ कम्पा तीजी आणने, सेर
चणारा फाफड़ा सोय । निन्धो घा र दीधा सही,
जीमी तृप्त हो गयो जोय ॥ १४ ॥ तृषा लागी तिण
रे, आगै जाई बोल्यो न । सेर चणा दिया
एक सेठ, पी दिया दूजी पुण्यव ॥ १५ ॥ भट
रोट्यां कर तीजी जीमाविधो, अति लागी है तृषा
थाय । है धर्मात्मा एहवो, ए आताने पाणी

पाय ॥ १६ ॥ चौथी बाई अणुकम्पा चित्त धरो,
 पायो त्रस सहित काचो पाण । कहो धर्म घणो हुवो
 केहने, पाछै कहा च्याहूं ही पिछाण ॥ १७ ॥ आज्ञा
 बारला दान ऊपरै, दियो स्वामो मिश्रु दृष्टन्त ।
 प्रत्यक्ष कारण पापनो, किण विध पुन्य कहंत ॥ १८ ॥
 हलुकर्मी सांभल हर्षे हिये, भारी कर्मी भिड़कन्त ।
 सूत्र न्याय साचा सही धारे उत्तम पुरुष धर खंत
 ॥ १९ ॥ पत्र ढाल कही पनरमो, स्वामी थापो है
 श्रद्धा सार । उत्पत्ति ग बुद्धि ओपती, बलि आगलि
 बहु विस्तार ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

जाब सुणी बुद्धिवान जन, चित्त पामे चमत्कार ।

सांभल केइक समझिया, पाग्या हर्ष अपार ॥१॥

केयक बलि इग पर कहै, थे दान दया दी उथाप ।

श्रद्धा किहां ही ना सुणी, प्रत्यक्ष श्रद्धो पाप ॥२॥

मिश्रु बलता इम भणै, पञ्जुसणा में पेल ।

आखा आटो आदि दे, आपै नहीं अशेष ॥३॥

पर्व दिवस पञ्जुसणा, धर्म तणा दिन धार ।

अधिक धर्म तिहां आदरै, पाप तणो परिहार ॥४॥

दान अनेरा ने दियां, जाणे धर्म जिवार ।

कीधो बंध किण कारणे, चित्त सूं करो विचार ॥५॥

ए घात है आगली, परम्परा पहिचाण ।

कहो ए थाप करी किणे, वारु करो विनाण ॥६॥

इं तो हिवड़ाइज हुवो, जद तो नहीं थो जाण ।

जाव दियो भति जुगत सूं सुण हरष्या सुबिहाण ॥७॥

सुत्र न्याय शुद्ध परम्परा, सखर मिलावे ।

जग पूरव धारी जिसा, ओजागर अरि म ॥८॥

अपर दान रे ऊपर, वीधा बलि दृष्टान्त ।

विविध न्याय घर बारता, सांमलजो वित्त शांति ॥९॥

ढा १६ ि ।

(घोड़ी री देशी)

शहर रेवै पध स्वामी, ओटो शाल प्र
 पूछयो एम । श्रावक कसाई गिणो थे रीखा, कहै
 खोटी श्रद्धा इसड़ी धारां म्हें केम ॥ स्वाम भिवखु
 रा न्त सुणजो ॥ १ ॥ ६ है किम गिणा
 सरीखा, जब ते कहै त्वक ने दियां पाप णो ।
 कसाई ने दियां पिण पाप कहो छो, प्रत्य दोनूं
 सरीखा इण न्याय पिछाणो ॥ २ ॥ स्व कहै इम
 नहीं सरीखा, श्रावक कसाई बे जुआ पे । गोटो
 कहै दोनूं थया सरी १, दोयां ने दियां पाप कहो
 ते लेख ॥ ३ ॥ पूज कहै थारी माता ने पायो,
 चित पाणी री लोटी भर सोय । कहो तिणमें थारो
 निपनो काई, ओटो कहै पाप छै अवल्लोय ॥ ४ ॥
 पुनरपि स्वाम ओटा ने पूछयो, पाणी लोटी भर
 वेश्या ने पायो । धर्म थयो के पाप हुवो थाने, गोटो

कहै तिण में पिण पाप थायो, ॥ ५ ॥ पूज कहै
 दोयां में पाप थायो, थारी माता ने वेश्या रीखी
 थारे न्यायो । जो माता वेश्या ने न गिणो सरीखी,
 तो श्रावक कसाई सरी । न थायो ॥ ६ ॥ अति
 क थयो गोक कहै ओटेजी, माता ने वेश्या सरी ी
 मानी । चित्त महिं चमत्कार लहे चातुर, अणहुन्ता
 अवगुण धारै अज्ञानी ॥ ७ ॥ सम्बत् अठारै पैंता-
 ीसे स्वामी, प्रगट चौमासो कियो पीपार । जनक
 हस्तु स्तु नो जगु गांधी, वारुं चरचा सूं श्रद्धा
 चित्त धार ॥ ८ ॥ भेषधारी तिण ने गा भड़-
 का ; खोटी छा भीखणजी री खार । ए
 गृहस्थ श्राव ने वासती आपी, पाप कहै तिण
 हीं पार ॥ ९ ॥ बलि किण गृहस्थ री वासती
 चोर ले गयो, तिण रो पिण गृहस्थ ने पाप बतावे ।
 श्रावक ने चोर गिणो इम सरीखो, जब गु स्वामी
 जी ने पूछयो प्रस्तावै ॥ १० ॥ पूज कहै उणनेज
 पूछणो, चदर थारी एक ले गयो चोर । एक चदर
 थै श्राव ने आपी, जद थाने डंड किण रो वै
 जोर ॥ ११ ॥ तस्कर चदर ई गयो तिण रो,
 श्रित मूलन रधै पेख । आ ने दीधां रो
 प्राश्रित सरधै, जद तो देणोज गोदो ठह गो त्यांरे

लेख ॥ १२ ॥ जाब सुणी समज्यो जगु गांधी, ऐसी
स्वामीजी री बुद्धि उत्पात । सिद्धन्त री सरधा ने
थापण साची, न्याय त्रिविध मेलठ्या स्वामी नाथ ॥
१३ ॥ सोलमी ढाल में भिक्षु स्वामी री, ओलखाई
बुद्धि श्रद्धा उदार । श्रीजिन आगन्या धारी सिर पर,
सरधा दिखाय दोधी तन्त सार ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

श्रद्धे सावज दान में, पुन्य मिश्र एकन्त ।

पूछ्यां कहै मुझ मून है, केई इसड़ो कपट करंत ॥ १ ॥

पूछ्यां न कहै पाधरो, पुन्य मिश्र पख एक ।

आख्यो हेतु ओपतो, वारु स्वाम विशेष ॥ २ ॥

किण ही पुरुष पूछा करी, नार भणी पिउ नाम ।

थारै धणी रो नाम कुण, स्यूं पेमो है ताम ॥ ३ ॥

कहै पेमो क्यांने हुवै, बलि पूछ्यो तिणवार ।

नाथू नाम है तेहनो, कन्त तणो अवधार ॥ ४ ॥

कहै नाथू क्यांने हुवै, बलि पूछ्यो सुदिशेष ।

पाथू है नाम तेहनो, तुझ पीतम संपेक्ष ॥ ५ ॥

कहै पाथू क्यांने हुवै, इम बहु नाम विचार ।

सागे नाम आयां थकां, रहै अघोली नार ॥ ६ ॥

सैणो तव जाणे सही, इण रा पिउ रो नाम ।

एहिज छै तिण कारणै, मून रही इण टाम ॥ ७ ॥

जो सावज दान में पाप है कहै क्यांने हुवै पाप ।

मिश्र पूछ्यां पिण इम कहै, क्यांने है मिश्र थाप ॥ ८ ॥

पुन्य पूछ्यां सूं मून रहै, न करै तास निषेह ।

सैणो जव जाणै सही, इणरी श्रद्धा यह ॥ ९ ॥

॥ हा १७ की ॥

(प्रभवो में चिन्तवै पदेशी)

पूज्य भीखराजी पधारिया, वर गा
विम । साध अमरसिंघजी तणा, पूज या त्यां
पा ॥ १ ॥ प्रश्न भिखु स्वाम पूछियो, अणु ।
मन आण । मरता ने मूला दिया, जिणमें सूं हुवो
जाण ॥ २ ॥ तामस आणी ते कहै, प्र इ रो
पूछन्त । जे मिथ्याती जाणिये, भिखु वं
भाषन्त ॥ ३ ॥ पूछण वाले पूछियो, समकती होवे
सोय । थवा मिथ्याती मानवी, जे पिण पूछै
जोय ॥ ४ ॥ उत्तर आपै एहनो, जो मिथ्याती होय
जाय । उत्तर तो आपो मति, नहीं तो । गो
न्याय ॥ ५ ॥ तव ते बोल्यो तड़क ने, मू । माहें
पाप । पूज्य कहे पुन्य पाप विहुं, के केवल पाप
किलाप ॥ ६ ॥ देण वाला ने दाखिये, पुन्य प
पिछाण । जाव न देवै जाण ने, बलि भिखु कहे
वाण ॥ ७ ॥ केई मू खवायां मि कहै, इम
पूछ्यां कहै आम । मिश्र कहै ते पापी सही, तव
स्वामी कहै ताम ॥ ८ ॥ केई मूला वायां पाप कहै,
बलि ते बोल्यो वाण । पाप कहै ते पापिया, भूठा
इएकन्त जाण ॥ ९ ॥ फिर स्वामी पूछा करी, मू ॥

खवायां माण । कई एक पुन्य कहै सही, तब ते
 बोल्यो जाण ॥ १० ॥ पुण्य कहै सोही पापिया, सुण
 ने स्वाम विचारै । अद्धा पुन्य री दीसै सही, बात
 तीनूईं बरै ॥ ११ ॥ बलि मन भिवखु विचारियो,
 कहिण वाला ने कह्यो पापी । पिण अद्धण वाला
 पुरुष नी, थिर पूछा करुं थापी ॥ १२ ॥ इम
 चिन्तवी पूछियो, नुकम्पा ण । मू देवै ते
 मनुष्य ने, पुन्य केई अद्धे पिछाण ॥ १३ ॥ स्वाम
 तणी पूछा सांभली, बलि बोल्यो ते बाण । मन
 सी ज्युं सरधसी, स्वाम लियो ण ॥ १४ ॥
 इम चिन्तवी स्वामी उचरे, मूला यां माण । प्रगट
 पुन्य प्ररूपो नहीं, पिण द्धा पुन्यरी पिछाण ॥ १५ ॥
 इत्यादि जाब नेकसूं, क कियो धिकाय ।
 या ठिकाणे णणे, र मी महा खदाय ॥ १६ ॥
 मोटी मति महाराज नी, रु बुद्धि सुविचार । जाब
 हि गो अति जुगतूं, उपरसूं अवधार ॥ १७ ॥ सखर
 ढा कही तरमी, णे बहु धिकार । स्वाम
 द न्त सुणी करी, चतुर लहै चमत्कार ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

भी जी स्वामी भणी, किगही पूछा कीध ।

दान असंजती ने दियां, पाप कहो प्रसिद्ध ॥ १ ॥

कड़वा फल किण कारणे, निर्मल व्रतावो न्याय ।

कहै भिक्षु किण सेठ रे, नवली कड़ी बंधाय ॥ २ ॥

ते नवली रुपया तणी, तस्कर देखी ताम ।

सेठ तणै लारे हुवो, रुपया लेण काम ॥ ३ ॥

पूठै तस्कर पेखने, साहुकार न्दासन्त ।

लारे तस्कर दौड़तो, इतले पग अखुइन्त ॥ ४ ॥

पग आखुइ हेठो पड़यो, चित्त बिलखाणो चोर ।

इतले किण ही मानवी, अमल खवायो जोर ॥ ५ ॥

ल खवाय पायो उदक, सेंठो कियो शूर ।

दुश्मन ते तिण सेठ नो, साम दियो भरपूर ॥ ६ ॥

अमल खवायो ते पुरुष, वैरी सेठ नो बाध ।

साम दियो वैरी भणी, भरि थी हुवै उपाधि ॥ ७ ॥

ज्यूं छःकाय नां हिन्सक भणी, जे नर पोपै जाण ।

ते वैरी पट काय नो, प्रत्यक्ष हिये पिछाण ॥ ८ ॥

हणणहार पट काय नो, तसु पोषे कियो शूर ।

तिण कारण जीवां तणो, वैरी ते भरपूर ॥ ९ ॥

॥ ढाल १८ मी ॥

(सीता दिये रे ओलभइो पदेशी)

वज दान द्वायवा, दियो भिक्षु दृष्टान्त ।

खेत बायो ए करसणी, पाको खेत त्यन्त । तन्त

दृष्टान्त भिक्षु तणा ॥ १ ॥ इतले धणी रे बालो

हुवो, दूखणी आयो देख । किणहि औषध दे

करी, सांतरो कियो विशेष ॥ तं० ॥ जो

हुवो तिण वसरै, खेत काख्यो धर न्त । साम

देण वाला ने सही, लागै पाप एकन्त ॥ ३ ॥ कहै
 पाप हुवै खेत काटियां, तो काटण वाला ने सोय ।
 साभ देई ने साभो कियो, तिण ने पिण पाप
 जोय ॥ ४ ॥ तिमहिज और पापी तणे, साता कीधी
 विशेष । तिण माहें धर्म किहां थकी, दिल महि
 दे ॥ ५ ॥ कैंकेइक भेषधारी कहै, धन दीधां
 धर्म । बलै कहै ममता उतरी, भोलारे पाड़े भ्रम ॥ ६ ॥
 पूज्य भिखु तिण उपरै, निरमल मेला न्याय ।
 म लोकां रो भांजवा, स्वामी महा सुखदाय ॥ ७ ॥
 किणही मनुष्य रे खेती हुन्ती, बीस विघा विचार ।
 दश विघा ब्रा ण ने दिया, धर्म अर्थे धार ॥ ८ ॥
 बीस हलारी खेती विषै, दश हल ेती दीध । ए
 पिण ममता उतरी, तिणरे लेखे प्रसिद्ध ॥ ९ ॥ क रो
 परिग्रह नव ारनो, दौपद चौपद देख । पांच
 दास्यां दीधी पर भणी, पांच गायां संपे ॥ १० ॥
 ए पिण ममता उतरी, तिणरे ले तहतीक । धर्म
 कहै रुपया दियां, तो इणमें पिण धर्म ठीक ॥ ११ ॥
 दास्यां ेती गायां दियां, पुन्य रो अंश म पे ।
 इमहिज रुपया आपियां, धर्म पुन्य म दे ॥ १२ ॥
 प अ रा में पंचमो, परिग्रह महा विकराल ।
 सेव्यां सेवायां पाप छै, भगवती में सम्भाल ॥ १३ ॥

सावद्य ता रै ही, इणू पाप एकन्त । जिन
 आजा वाहिर जाणज्यो, सूयगड़ा हू शोभन्त ॥ १४ ॥
 भिक्खु स्वा भली परै, गोलकाया ऐन । हलुकर्मी
 हरण्या घणा, चित्त में पाभ्या नैन ॥ १५ ॥ ॥
 अट्टार पी, वरु स्वामी ना वो । चोल साराही
 सुहामणा, छा ने गोल ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कछो, असंजती अवलोय ।

तिण ने दान देवा तणा, त्याग करावो मोय ॥ १ ॥

भिक्खु स्वामी इम भणै, सरण्या मुफ बच सोय ।

प्रतीतिया रुचिया पवर, जिण सूं त्याग सुतोय ॥ २ ॥

के रहाने भाण्डण भणी, करै इसा पचखाण ।

इमै कही कण्ट कियो अति हि. सखर स्वाम बुद्धिवान ॥ ३ ॥

वि हिक भिक्खु ने गो, टोला चाला ताहि ।

प्रत्यक्ष पुन्य प्ररूपै नहीं, सावज दान रे मांहि ॥ ४ ॥

स्वाम कहै कोई असतरी, जल लोटो भर जाण ।

म्हारे हाटे सूपज्यो, कहा किणी ने थाण ॥ ५ ॥

पिउ नो ना लियो, पिण सूप्यो कर सान ।

इम सानी कर पुन्य कहै, पुन्य री धद्धा पिछाण ॥ ६ ॥

किणहिक स्वामी ने कछो, पडिमाधारी पेख ।

दान निर्दोषण तसु दियां, सूं फल कहो विशेष ॥ ७ ॥

स्वाम कहै ले सुफतो, पडिमाधारी पिछाण ।

तसु फल होवै ते सही, देणचाला ने जाण ॥ ८ ॥

लेण चाला ने पाप कहै, पाप लगायो दातार ।

तिण में पुन्य किहां थकी, स्वाम जाय श्रीकार ॥ ९ ॥

॥ १६ ॥

(वीर सुणो मोरी बिनती पदेशो)

...चो ..णी पायां मांहे पुन्य कहै, स्वामी दीधो
 हो तेहने दृष्टन्त । कोई खाई लुटावै पारकी, थारै
 लेखै हो इणमें पुन्य एकन्त ॥ तन्त दृष्टन्त भिक्षु
 तणा ॥ १ ॥ खाई लुटायां जो पाप है, पाणी पायां
 हो किम होसी पुन्य । दोनूं बरोबर देखल्यो,
 सावद्य दोनूं हो कण रहित है शून्य ॥ तं० ॥ २ ॥
 अब्रत में अन धन दियां, भेवधारी हो थापै धर्म ने
 पुन्य । स्वाम भिक्षु दियो शोभतो, हद हेतु हो
 सुणज्यो तन मन ॥ ३ ॥ लायमां सं काढ दूजी-
 लायमें, धन न्हाख्यां हो काम न आवै ते धार । आप
 कन्हे धन अब्रत में हुन्तो, अब्रती ने हो दियो अब्रत
 मभार ॥ ४ ॥ लाय लागां यहस्थ रो घर जलै, बलतो
 देखी हो किण ही धन काढ्यो धार । ले न्हाख्यो
 दूजी लायमें, तत्खिण आयो हो सेठ पास
 तिवार ॥ ५ ॥ अहो सेठजी तुम्ह घर आग थी,
 सखरी वस्तु हो धन काढ्यो म्हे सार । सेठ सुणी
 हरण्यो सही, ते धन किहां छै हो आपो वस्तु
 उदार ॥ ६ ॥ ओ कहै न्हाख्यो दूजी आगमें, सेठ
 जाणयो हो परो मूरख सोय । लायमां सं काढी

न्हाख्यो लायमें, काम न आवै हो तिण लेखै
 कोय ॥ ७ ॥ अत्रत रूप लाय हुन्ती आपरै, अत्रती
 ने हो दीधो और ने धन । लाय लगाई और रे,
 प्रत्यक्ष देखो हो तिण में किम हुवै पुन्य ॥ ८ ॥
 आवकरे त्याग तेतो व्रत सही, अत्रत जाणो हो बांकी
 रह्यो आगार । अत्रत सेत्रावै और री, तिण माहें हो
 धर्म नहीं लिगार ॥ ९ ॥ अत्रत व्रत न ओलखै,
 भेषधारी हो करै भेल संभेल । दृष्टान्त स्वाम दियो
 इसो, घी तम्बाकू हो भेला कदेय न मेल ॥ १० ॥
 औवध जोभ आख्यां तणो, आहमो साहमो हो
 घाल्यां दोनुं विलाय । ज्युं अत्रत में धर्म सरधियां,
 पाप व्रत में हो सरध्यां दुर्गति जाय ॥ ११ ॥ शोरी-
 गर रा घ में शोर वासदी, न्यारा राख्यां हो घर
 विणसै नांय । ज्युं व्रत अत्रत फल जु जूआ, जन
 जाण्यां हो समकित न जलाय ॥ १२ ॥ प्रगट पसारी
 रे पारखा, न्यारा राखै हो मिथ्री सोमल न्हाल ।
 ज्युं धर्म अधर्म खातो जू जुआ, सैठी समकित हो
 शुद्ध सरध्यां संभाल ॥ १३ ॥ कोई कहै गृहस्थ रो
 छन्दो अछे, दान देवै हो गृहस्थ ने देख । भिक्षु
 कह्यो छान्दा में तो भूल छै, घृत तो छै हो कूड़ी
 में संपेख ॥ १४ ॥ मैदो खाएह घृत शुद्ध मिल्यां

सखरा कहिये हो लाडू सरस स द । ज्युं चित्त
 वित्त पात्र तीनुं जू ां, ति फल लहिये हो, भव
 दधि तिरिये अगाध ॥ १५ ॥ घृत ाण्ड बिहुं
 शुद्ध घणा, मैदारी जागां हो लाद है मांय । ज्युं
 चित्त वित्त दोनुं चोखा मित्या, पात्र जागां हो
 असाधु ने बहिराय ॥ १६ ॥ घृत मैदो चो घणा,
 खाण्ड जागां हो माहें ि धूल । ज्युं चित्त पात्र
 दोनुं ही शुद्ध जूड्या, वित्त जागां हो सूक्तो
 ि तुल्य ॥ १७ ॥ ाण्ड मैदो चोखा रा, घृत
 जागां हो माहें घाल्यो गौ-मूत । ज्युं वित्त पात्र दोनुं
 ही शुद्ध जूड्या चित्त जागां हो देवणावालो कपूत
 ॥ १८ ॥ त री ठौर गौमूत , ाण्ड ठामे हो
 घाली महा खार । ाद मैदारी जायगां,
 मित्लिया हो तीनुं अधिक सार ॥ १९ ॥ ज्युं
 देण लो हो असूक्तो, वस्तु दीधी हो सूक्त
 । व्रत हीं ले अंगीकरी, प्रत्यक्ष
 हो इणमें किम हुवै पुन्य ॥ २० ॥ चित्त वित्त
 पात्र चो । मित्यां, निर्जरा हो पुन्य बन्ध कहि-
 । एक अधुरो तीनां मक्के, थिर चित्त देखो
 हो तिण में पुन्य न थाय ॥ २१ ॥ दृष्टान्त ऐसा
 भिक्षु दिया, र मी मेल्या हो सूत्र ने न्य

सिंध । यां विन इसड़ी कुण कथे, पूर्वधारी हो जैसा
 भिक्खु प्रक्ख ॥ २२ ॥ पञ्चम आरै प्रगट्या, आप
 ओजागर हो आप सूं अनुराग । हूं पिण हिवड़ां
 उपनो, साची श्रद्धा हो पामी ए मुक्क भाग ॥ २३ ॥
 आखी ढाल उगणीसमी, चित्त उमग्यो हो भिक्खु
 आया चीत । याद आयां हो हियो हुलसै, गुण
 गावत हो हुवो जन्म पवित्र ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

सखरो मारग शोध ने, दियो खाम उपदेश ।

कुचुद्धि कुकळा केलवी, पूछे प्रश्न अशेष ॥ १ ॥

थानि असाध सरघने, वीधो में तुक्क दान ।

तिणगे मुक्कने स्पूं हुवो, इम पूछयो किण जान ॥ २ ॥

भिक्खु कई मिश्री मर्दी, किण खाधी विष जाण ।

मन सुख पावै के मरै, उत्तर पह पिछाण ॥ ३ ॥

ज्यूं थे असाध जाणने, दियो सुक्कतो दान ।

अजाण पणो घट थांहेरे, पात्र उत्तम फल जान ॥ ४ ॥

इत्यादिक बहु आखिया, दान ऊपर दृष्टन्त ।

किञ्चित् मात्र में कथ्या, वधतो जाणी ग्रन्थ ॥ ५ ॥

विविध दया ऊपर बलि, हेतु महा हितकार ।

आक थोहर रा दूव सम, सावज दया असार ॥ ६ ॥

अनुकम्पा इही लोकरी, जीवणो चांछै जाण ।

मोह राग माहें तिका, तिणमें धर्म म ताण ॥ ७ ॥

जे आरम्म सहित जीवणो, असंजती रो अंभ ।

जिण चांछयो ए जीवणो, तिण चांछयो आरंभ ॥ ८ ॥

सूत्रे श्री जिवं वरजियो, भसंजम जीतव भास ।

भिक्षु स्वाम भली परै, मेल्या न्याय विमास ॥ ६ ॥

॥ ढा २० म्फि ॥

(नगर सौरीपुर राजवी २० पदेशी)

केई पा एडी इम कहै रे, लाय बुझावै लोयो ।
 अल्प प बहु निर्जरारे, दम्भ करी थापै दोयो ॥
 दम्भ करी दोय थापे बेशर्मो, तेउ जीव मुआ ते
 पाप कर्मो । आगला जीव बच्या तिणरो धर्मो ।
 भोलां तणै मन पाड़े भ्रमो जी, सहु कोई जी
 हो ॥ १ ॥ उत्तर भिक्षु आवियो रे, सांभलज्यो
 चित्त लायो । हलुकर्मि सुण हर्षियेरे, भारी मी
 भिड़कायो । भारीकर्मि भिड़के लहै तापो । तेउ
 जीव वां रो कहै पापो । और बच्या तिण रो धर्म
 थापो । कर रखा मूरख कूड़ किलापो । तिणरी श्रद्धा
 रो लेखो सुणो आपो । नाहर मा ि एकलो नहीं
 पापो जी ॥ २ ॥ नाहर हिल्यो एक आकरो रे, करै
 मनुषां रो खैगालो । गायां भैस्यां जा वाकरा
 रे, सांभर रोभ सियालो । सांभर रोभ सिया
 पिङ्गाणो । प्रत्यक्ष लूट रह्यो पर प्राणो । जीव
 घणा रो करै घमसाणो । पङ्क प्रभा उत ष्टी
 पयाणो जी ॥ ० ॥ ३ ॥ किणही विचार इसो

कियो रे, एतो है । आहारी । ए विद्यां
 जीव रे घणारे, एहवा अध्यवसाय धारी । एहवा
 अध्यवसाय स्थं रिं ह मारी । उणारी श्रद्धा रे ले
 विचारी । नाहर रो पाप हुवो निरधारी । और
 बच्चारो धर्म हुवो भारी जो ॥ ० ॥ ४ ॥ बीजो
 दृष्टन्त भिक्षु दियो रे, छै एक पी कसाई । पांच
 पांच सौ भै । ने मारतो रे, करुणा न आणै । ई ।
 मन माहें रुणा आणै न काई । कियं ही विचार
 कियो मन मांही । एहने मा । बहु जीव बचाई ।
 एम विचारी ने मा गो साई, घणा जीवांने बचा-
 वण ताई । ॥ ० ॥ ५ ॥ । ए बुभायां मि
 कहै रे, तिणारी श्रद्धा रे ले गो । साई ने । ।
 पिण मि छै रे, पोतानी श्रद्धा पेखो । पोतारी
 श्रद्धा पे गो निज नैणो । पाप कसाई नो ए
 ल्य वैणो । जीव घणा बच्यां रो धर्म लेणो ।
 पोतारी श्रद्धा लेखै कहिदेणो, साई ने माख्यां
 एकन्त पाप न हिणो जी ॥ स० ॥ ६ ॥ तीजो
 दृष्टन्त स्वामी दियो रे, उरपुर एक अजोगो ।
 घणा ऊंदारां रा गटका करै रे, मनुष्य पहुंचावै पर
 लोको । मनुष्य मार परलोक पहुंचावै । घणा पंख्यां
 ना अरडा पिण खावै । प घणा जीवां ने तावै,

उत् ष्टे धूमप्रभा लग्ग जावै जी ॥ स० ॥ ७ ॥ किण
हो विचार इसो कियो रे, सर्प घणा ने सतावै । एक
सर्प मा ि थकां रे, जीव घणा सु पावै ।
जीव घणा सु पावै सुजाणी । नुकम्पा बहु
जीवांरो जाणी । सर्प मार बचाया बहु पाणी ।

य बुभ्कार्या कहै मिश्र बाणी, तिणारे ले
इणमें मिश्र पिछाणीजी ॥ स० ॥ ८ ॥ चौथो
दृष्टान्त स्वामी दियो रे, कोई पुरुष नो एहवो
आचारो । बाप मुवां पहली कह्यो रे, काल करतां
तिणवारो । काल रतां सुत कही थो बाणो ।
सुखे तुम्हारा निसरो णो । थां लारै अटठ्यादिक
बालस्युं जाणो । घणा ग्राम नगर बाल करस्युं घम-
साणोजी ॥ स० ॥ ९ ॥ मनुष्य ढांढा घणा मारस्युं रे,
बाप ने एहवो सुणायो । पिता पहुंतो परलोकमें रे,
पछै करवा लागो सहु तायो । करवा लागो छै जीवां
रो घमसाणो । किणहिक मनमें विचाख्यो जाणो ।
एक माख्यां सूं बचै बहु प्राणो, इम चिन्तव ते पुरुष
ने माख्यो अचाणो जी ॥ स० ॥ १० ॥ लाय बुभ्कार्यां
मिश्र कहै रे, तिणारे लेखै ए पिण मि होयो । एक
मा भो पाप तेहनो रे, बहु बचिया तिणारो धर्म
जोयो । बचिया रो धर्म त्यारि लेखै बाजै । अल्प

पाप बहु पुन्य फल राजे । एक मास्यो घणा राखण
काजे, इण में पिण मिश्र कहितां कांय लाजे जी ॥
स० ॥ ११ ॥ पूज्य कह्यो बलि पांचमो रे, दृष्टान्त
अधिक उदारो । कोई तुरकादिक आकरो रे, साथ
सेना ले अपारो । सेना लेई देश ऊपर आयो ।
ग्राम नगर कतल करवाने ध्यायो । मनुष्य तिर्यंच
मारण उमाह्यो, सेन्य अधिकारी ना हुक्म थी थायो
जी ॥ स० ॥ १२ ॥ किये ही विचार इसो कियो रे,
करसी घणा जीवरो संहारो । सेन्य अधिकारी ने
मारियां रे, सबजीव वचें इणवारो । जीव वचें कतल
नहों हुवें तायो । इम जाण अधिकारी ने परभव
पहुंचायो । मास्यो ते पाप वच्यो पुन्य थायो, तिण
रे लेखें इण में पिण मिश्र कहिवायो जी ॥ स०
॥ १३ ॥ वचियारो धर्म वताय ने रे, कहै लाय
बुझायां धर्म । जीव अग्निरा जीविया रे, तिणसूं घणा
मरें ते अधर्म । अग्नि जीव्यां घणा मरें ते पापो ।
इण विध कर रह्या कूड़ किलापो । अग्नि जीव हणियां
मिश्र थापो । तेहनो न्याय सुणो चुप चापो, तिणरे
लेखें गायां मास्यां केवल न पापो जी ॥ स० ॥ १४ ॥
गायां भेस्यां आद जीवसी रे, ते पिण घणी छः काय
हणतो । मनुष्यादि पवन छतीस छै रे, मच्छा-

दिक जलचर जन्तो । जन्तु मच्छादिक जलचर
जाणी । ते पिण हणै छःकाय ना प्राणी । मि
जीवने हययां मिश्र णी, तिणारे ए व
हयया मिश्र जाणी; जी ॥ स० १५ ॥ संसार माहिं
साधू बिनां रे, सर्वहिंसा रा त्याग न दीसै । प वणा
पद बीस में रे, भाख्यो ते जगदीश । ते जगदीश
भा ते इम रेंसो । प्राणातिपात बेरमण सु अशेषो
मनुष्य बिनां और रे न कहेसो । बुद्धिवन्त जोय
बिचारज्यो रेंसो जो ॥ स० ॥ १६ ॥ साधू बिना
संसारी सहुरे, हिंसक जीव कहायो । त्यां सगलां ने
मारियां रे, एकलो पाप न थायो । किण ही ने मा ।
एकलो पापो । जण ने मा ते तिणारो महा तापो ।
और बच्या तिणारो पुन्य मिलापो । साधु ने मा ।
रो एकन्त पापो । खोटी श्रद्धारा लेखां री ए थापो
जी ॥ स० ॥ १७ ॥ लाय बुझायां मिश्र कहै रे,
तिणारी श्रद्धारे न्यायो । हिंसक ने मारण तणा रे,
त्याग करावणा नहीं तायो । त्याग करावे छै किण
न्यायो । हिंसक बच्या घणा जीव हणायो । हिंसक
माखां मिश्र धर्म थायो । ऊंची सरधा रो तो ओहिज
न्यायो जी ॥ स० ॥ १८ ॥ दृष्टन्त स्वाम भिक्खु दिया
रे, सूत्र न्याय तंत सारी । जीव बच्या धर्म थापने

रे, भूल गया भेषधारी । भूल गया भ्रम में भेषधारी
मोहराग माहें दया विचारी । भिक्षु ओल तसु
कियो परिहारी । तिरणो बछै जिन पर नो तिवारी,
तिण माहें धर्म कह्यो तंतसारी जी ॥ स० ॥ १६ ॥
बीसमी ढाल विषै कह्यारे, दया ऊपर दृष्टन्तो ।
सूत्र सिद्धन्तरा जोर सूं रे, न्याय मिलायो तंतो ।
स्वाम भिक्षु शुद्ध न्याय मिलायो । दानदया रुढ़ी
रोत दि ।यो हलुकर्मी सुण २ हर्षायो, भारी मा
रे तो मन नहीं भायो जी ॥ स० ॥ २० ॥

॥ दोहा

पाली शहर पधारिया, पूज्य भवदधि पाज ।

एक जणो तिहां आवियो, चरचा करवा काज ॥ १ ॥

ऊंचो बोलतो कहै, दुष्ट श्रावक तुम देख ।

फांसी कोई रा गलहुन्ती, काढ़ै नहीं सपेख ॥ २ ॥

थारा गहारा मति करो, स्वामी भाखै सोय ।

समचे वात करो सही, न्याय हियै अवलोय ॥ ३ ॥

फांसी ली किण रुंख थी, देख्यो जावत दोय ।

क ढै नहीं ते केहवो, काढ़ै ते केहवो होय ॥ ४ ॥

ते कहे फांसी काढ़ ले, उत्तम पुरुष ते तन्त ।

जाणहार शिव स्वर्ग नो, दयावन्त दीपन्त ॥ ५ ॥

नहिं काढ़ै ते नरक रो, जाणहार दौभाग ।

भिक्षु कहै तुम तुम गुरु, जाता दोनूं माग ॥ ६ ॥

कुण फांसी काढ़ै कहो, कहै हूं काढ़ूं तिहां जाय ।

मुझ गुरु तो काढ़ै नहीं, मुनि ने कल्पे नांय ॥ ७ ॥

स्वाम कहै शिव स्वर्ग नो, जाणहार तूं पेल ।

तुम्ह गुरु नरक निगोदना, जाणहार तुम्ह लेख ॥ ८ ॥

सुण नै कष्ट हुवो घणो, जाब देन असमर्थ ।

ऐसी बुद्धि स्वामी तणी, उर में अधिक ओपंत ॥ ९ ॥

॥ टा २१ मी ॥

॥ पर नारी संग परिहरो ए देशी ॥

सावध उप र सं र तणा छै, तिणमें ।
जाणज्यो गो । पूज्य भिक्षु ओल यवा प्रगट,
दियो इसो दृष्टतो ॥ स्वाम भिक्षु रा दृष्टान्त
सुणज्यो ॥ १ ॥ एक नृपति चोर पकड़या इग्यारह,
दुवो मारण रो दीधो । साहुंकार एक अरज करी
इम, सांभलज्यो प्रसिद्धो ॥ स्वा० ॥ २ ॥ पंच पंच
सौ रुपया प्रकट, इक इक चोर ना लीजे । आप
वृ पानिधि अरज मानी ने, चोर इग्यारा छोड़ीजे ॥
६ ० ॥ ३ ॥ राजा भाखै महा अपराधी, दुष्ट घणार्ई
दु दाता । छोड़ना जोग नहीं छै तस्कर, मान मछर
मद माता ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ सेठ कहै दश मूको ६ मी,
लाभ रुपयां रो लीजे । तो पिण नृप नहीं छोड़े
तस्कर, कहे चोरां रो पख नहीं कीजै ॥ स्वा० ॥ ५ ॥
नव तस्कर मूको कृपानिधि, आठ सात आदि
जाणी । इण पर अरज करी अधिकेरी, महिपति तो
नहीं मानी ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ रोकड़ा पांच सौ देई रा

ने, चोर एक छोड़ायो । ते पिण विनती अधिक करी
 तव, तस्कर मूक्यो तायो ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ पुर ना लोक
 करै गुण प्रगट, सेठ तणा सहुकोयो । धन्य धन्य
 लोक कहै यो धर्मी, हर्ष हिये अति होयो ॥ स्वा०
 ॥ ८ ॥ वन्धीछोड़ लोकां में वाजै, अधिक कियो
 उपगारो । तस्कर पिण गुण गावै तेहना, सुयश
 फैल्यो संसारो ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ महिपति दश चोरां
 ने मराया, इक निज स्थानक आयो । समाचार
 न्यातीला ने सुनाया, परियण दुख अति पायो ॥ स्वा
 ॥ १० ॥ तस्कर दश ना न्यातीला ते, भारी द्वेष
 भगणा । वैर बाल ने भेला हुवा, बहु प्रत्यक्ष ही
 प्रगटाणा ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ चोर सारां ने साथ लई
 चाल्यो, पुर दरवाजे पिछाणो । चिट्ठी बांध लोकां ने
 चेतायो, सांभलज्यो सहु वाणो ॥ स्वा० ॥ १२ ॥
 मुक्त तस्कर दश माच्या तिणरो, इग्यारे गुणो वैर
 गिणस्यूं । मनुष्य एक सौ दश माच्यां स्यूं, पछै
 विषटालो करस्यं ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ साहुकार ना
 पुत्र सगा ने, मित्र भणी नहीं मारूं । अवर न छोड़ूं
 उराणो आयो, पंथ रह्या पिण पारूं ॥ स्वा० ॥ १४ ॥
 एम कही जन मारण उमग्यो, सुत किये ही रो
 संहारै । किये ही रो तात भाई हणै कियारो, माता

विणारी मारै ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ किणारी नार हणै
 ति कोण्यो, बहन कोई री बिणसै । किणही री
 भूः भतीजी किणारी, तस्कर इम न त्रासे ॥
 स्वा० ॥ १६ ॥ भयङ्कर नगर में प्रगळ्यो, होय
 रह्यो हा कारो । सेठ ने निंदवा लागा सहु न,
 भवै बचन प्रहारो ॥ स्वा० ॥ साहुकार रे घर
 ई ।, रोवे तोग लुगाई । कोई है भ
 मराई, कोई कहै प्रिय भाई ॥ ० ॥ १८ ॥
 पा तु घर ब थो, तो कू में नही
 न्हाख्यो । चोर छोड़ाई म्हारा ष मराया, र
 जीवतो राख्यो ॥ ६ ॥ १९ ॥ सेठ रियो
 शहर छोड़ी ने, बीजे म बस्यो जाई । इण भव
 फिट २ हुवो धिको, परभव दुर्गति ई ॥ स्वा०
 २० ॥ जे ण । तेहिज, अवगुण करत
 थागो । संसार नो उपगार इसो छै, मो तणो
 नही णो ॥ ० ॥ २१ ॥ मोख तणो उप र है
 मोटो, र शिव पद चरिये । जिण णि तिण
 है जाणी, उ ट धरी आदरिये ॥ स्वा० ॥ २२ ॥
 भिक्षु स्वाम ली पर भाख्यो, दया ऊपर दृष्टन्तो ।
 उत्पत्ति बुदि अधिक तोप, हलुकरमी हरषंतो
 ॥ ६ ॥ २३ ॥ बीसमी ढ में आख्यो, अघ

हेतु उपगारो । त्यज ही फल सेठज पाया, गलि
वहु धिकारो ॥ स्वा० ॥ २४ ॥ -

॥ दोहा ॥

शिव संसार तणा सही, कह्या दोय उपगार ।

मिश्रु तिण ऊपर भला, दृष्टन्त दिया उदार ॥ १ ॥

उरपुर खाधो एक ने, उजाड़ में अवधार ।

किण भाडो देह करी, ताजो कियो तिवार ॥ २ ॥

पिता कहे मुफ सुत दियो, भाई बहिन भापंत ।

ते म्हाने भाई दियो, श्री कहे दीधो कंत ॥ ३ ॥

चूड़ो चूंदड़ी अम रही, ते थारो उपगार ।

इम कहे यंत्रणहार ने, स्वजन सगा परिवार ॥ ४ ॥

ए उपगार संसार नो, तिण में नी तंत सार ।

बंध कारण कह्यो, नहीं धर्म पुण्य लिगार ॥ ५ ॥

उरपुर खाधो एक ने, साधां ने कहे सोय ।

यन्त्र मन्त्र बूटी जड़ी, औपध थापो मोय ॥ ६ ॥

संत कहे कल्प नहीं, बलि बोल्यो ते यान ।

करामात हो तो कहो, के लियो मेय तुफान ॥ ७ ॥

करामात मुनि कहे इसी, दुखी कदे नहीं थाय ।

ते कहे मुफ ते पिण कहो, अणशण मुनि राय ॥ ८ ॥

शरणा सूंस दिया घणा, शिवगामी सुर थाय ।

मोख तणो उपगार ए, स्वाम दियो ओलजाय ॥ ९ ॥

॥ हाल ३३ की ॥

(डाम मुंजादिक नी डोरी पदेशी)

दूजो दृष्टन्त मिश्रु दीधो, सांभलज्यो प्रसिद्धो ।

लोक मोच ने मग नहीं मेले, तेतो कठे ही न थावे

भेल ॥ १ ॥ साहुकार रे हि यां दोय, एक श्राविका
 शुद्ध बल्लोय । वंराग त्यन्त बखाण, किया रोवण
 रा पच । एण ॥ २ ॥ दूजी घर्म में समझे नाहीं, चित्त
 म भोग री चाहि । केतलाइक काल विचार, पर-
 देश माहें भरतार ॥ ३ ॥ काल कर गयो ते, किय
 बार, त सांभली छै बेहुं नार । तिण रे रोवणरां छै
 त्याग, ते तो रोवे नहीं धर राग ॥ ४ ॥ समता धार
 बैठी सोय, कियो नेम न भांगै कोय भ अ भ
 कर्म स्वभात्रै, प्रत्यक्ष ओल लियो प्रभावे ॥ ५ ॥
 दुः पाप प्रभावे देखै, बलि कर्म बांधू किय ले ।
 उदै बांध्या जिसाइज । य, इम चित्त ने दियो
 समभाय ॥ ६ ॥ बीजी रोवे करत विलाप कहै
 वण उदय हुवा प । छाती माथो कूटे तन भाड़े,
 ति रोवती बांगा पाड़े ॥ ७ ॥ हाहाकार हुवो तिण
 बेलां, लोक कड़ा भेला । रोवे तिण ने अधिक
 सरावै, पतिव्रता ये दुः पावै ॥ ८ ॥ बले बोले घणा
 लोग लुगाई, धन्य धन्य ये नार सुहाई । इण रे
 प्रीतम स्युं ति प्यार, तिण स्युं रोवै छै बांगां पाड़
 ॥ ९ ॥ नहीं रोवे तिण ने जन निन्दे, गो पापणी
 थी अपछंदे । तो मुवोज बांछती कन्त, आं में
 आंसू नहीं आवन्त ॥ १० ॥ सारी रे मन इस भावै,

गोह बसे र त्रै । अधु हो किरण ने रावै,
 परमारथ त्रि पावै ॥ ११ ॥ मो ने शोक रो
 न्यारो, बुद्धिवन्त हिया में त्रिचारो । दियो स्व
 भिक्षु दृष्टान्त, त्यक्ष देव दोनूं पंथ ॥ १२ ॥
 इम ही र नो उपगारो, मोक्ष रा मारग
 न्यारो । बारुं गो तणो उपगार, सार ने छेदण र
 ॥ १३ ॥ ऐ भिक्षु उजागरारो, न य त्रि
 तन्तसारी । कही ढ बावी ति , भिक्षु रा
 णा रो न र्ति ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

श्रद्धा उपर स्वामजी, दिया ा दृष्टान्त ।

कहि २ ने कितरो कहू, न्याय मिलाया तंत ॥ १ ॥

बलि आचार रे ऊपरै, न्याय मि सा सार ।

ग्रन्थ बधतो जाण ने, न क्रियो बहु विस्तार ॥ २ ॥

इन्द्री बादी ऊपरै, काल बादी पर सोय ।

दृष्टांत पूज्य दिया घणा, महे बहु न कहा जाय ॥ ३ ॥

प्रस्ताविक प्रगट पणे, हेतु हद हितकार ।

आख्या भिक्षु ओपता, उत्पत्तिया अधिकार ॥ ४ ॥

कथा नंदी सूत्रे कही, बुद्धि पहिचाण ।

तिण कारण दृष्टांत सुण, चमको मति सुजाण ॥ ५ ॥

केसी स्वामी पिण कहा, सखरा हेतु सार ।

हिज भिक्षु जाणज्यो, पं काल ॥ ६ ॥

मूरख दृष्टांत सुण, उलटा बांधे कर्म ।

लखर नहीं जिन घर्म री, भूला अज्ञानी ॥ ७ ॥
 हलुकर्मीं दूष्टांत सुण, पामै अधिको प्रेम ।
 भारी कर्मा साभली, बोले भावे तेम ॥ ८ ॥
 बिचरत २ भाविया, शहर केलवै स्वाम ।
 ठाकुर मोह सिंहजी, वांछण आया ताम ॥ ९ ॥

॥ १ २३ ॥

(आगे जातां अठवी ए देशी)

सहु परषदा एतां, सिरदार हायो रे । मोह-
 सिंहजी, बोले इम बायो रे ॥ मि खु
 भणी ॥ १ ॥ म २ री बिनर , ति अपने
 आवै रे । न बहु दे नां, सहु पने चाहवै रे,
 भिक्खु ब ॥ २ ॥ नारी आपने, देखी वै
 राजी रे, र जोड़ो रै, जन गिरति ती रे ।
 मि० ॥ ३ ॥ पुण्यवन्ता प्रत्यक्ष, नर नारी निरखै रे ।
 सूरत दे ने, द्विबड़े ति हर्षे रे ॥ मि० ॥ ४ ॥
 घणा गोकु ने बल्लभ लागो रे । ते
 तरण किसो, यारे हर्ष थागो रे ॥ मि० ॥ ५ ॥
 इसो ए ई प में, ते मुक्त ने बत गो रे ।
 पणै सही, दि में द लो रे ॥ ६ ॥
 भिक्खु इम भा , एक सेठ प्रदेशे रे । वर्ष बहु
 तिया, त्रिय छै निज देशे रे ॥ मि० ॥ ७ ॥ ते
 नार पति ता, शीले गह गहती रे । निज प्रीतम

थकी प्रेमे अति रहती रे। भिक्षु नृष भणै
 ॥ ८ ॥ घणा महीना हुवा, कागद नवी आयो रे।
 त्रिय चिन्ता करे, मन प्रीतम मांहो रे ॥ भि० ॥
 ९ ॥ ते सेठ प्रदेश थी, कासीद पठायो रे खरची
 दे करी, तिण पुर ते आयो रे ॥ भि० ॥ १० ॥
 सेठ तणी हवेली, आय उभो तायो रे। किणहिक
 पूछियो, किण पुर थी आयो रे ॥ भि० ॥ ११ ॥
 लियो नाम ते पुर नो, नारी सुण हरखी रे। आवी
 बारणै, नैणा तसु निरखी रे ॥ भि० ॥ १२ ॥ कासीद
 ने देखी, हिवडे हरषाणी रे। सुखसाता सुणी, रू
 रू बिकसाणी रे ॥ १३ ॥ उन्हा पाणी सूं
 उणारा पग धोवै रे। आनन्द जल भखा, नेत्रां सूं
 जोवै रे ॥ भि० ॥ १४ ॥ वर भोजन करने, कन्हे वेस
 जीमावै रे। पूछै बलि बलि, समाचार सुहावै रे ॥
 भि० ॥ १५ ॥ साहजी डी ां में, किसाइ छै जाणी
 रे। साता छै, पूछै हरषाणी रे ॥ भि० ॥ १६ ॥
 साहजी कठे पोढ़े, किण जागां वैसे रे। बात सारी
 हो, सुण ने ति उलसै रे ॥ भि० ॥ १७ ॥ गेई
 रण नहीं छै, साहजी रे तन में रे। उ र
 भिली, त्रिय हर्षे न में रे ॥ भि० ॥ १८ ॥
 हाजी हो मुकने, माचार ह्या छै रे। इहां

आसी कदे, वर्ष बहोत थया छै रे ॥ मि० ॥ १६ ॥
दिल संत्रि हूं तो, दिल आत चिन्ता करती रे ।
कागद ना दियो, मन में दुख धरती रे ॥ मि० ॥ २० ॥
सीद कहै सुणो, साहजी रां जावो रे । एम कह्यो
सही, अवां छां उतावो रे ॥ मि० ॥ २१ ॥ पिण
कोइक कारण सूं अल्प दिन रेजो रे । मुक ने
मेलियो, सुण बाध्यो हेजो रे ॥ मि० ॥ २३ ॥ समा-
चार आपने, साहजी कहिवाया रे । म्हे ताकीद स्यूं
आया के आया रे ॥ मि० ॥ २३ ॥ पैदास घणी छै,
सुख से तुम रहिज्यो रे । किण ही बात री, मन
फिकर म कीजो रे ॥ मि० ॥ २४ ॥ समाचार ज्यूं
ज्यूं कहै, त्यूं त्यूं मन हरषै रे । राजी हुवै घणी,
कासीद ने निरखै रे ॥ मि० ॥ २५ ॥ कासीद ने
देखी हर्षे अपि नारी रे । ते कहै पिउ तणी, वतका
अति प्यारी रे ॥ मि० ॥ २६ ॥ एहवो बिरतंत देखो,
कहे अजाण एसो रे । इण दलिद्री थको, पतिव्रता
नो पेसो रे ॥ मि० ॥ २७ ॥ सुण बोख्यो सैणो, नहीं
इण स्यूं धारो रे । पिउ समाचार थी, हरषी है
नारो रे ॥ मि० ॥ २८ ॥ और अम भति राखो, आ
महा गुणवन्ती रे । सत्यवन्ती सतो, शुद्ध भाग चलती
रे ॥ मि० ॥ २९ ॥ समाचार प्रयोगे, पतिव्रता हर-

बाणी रे । और भरम नहीं, तिमहिज म्हे जाणी रे ॥
 भि० ॥ ३० ॥ भगवान रा गुण म्हे, विध रीत बत्तावां
 रे । शिव संसार नो, मारग ओलखावां रे ॥ भि०
 ॥ ३१ ॥ भीणी २ म्हे, सूत्र रहिस बत्तावां रे । लोभ
 रहित पणै, भिन्न २ दरशावां रे ॥ भि० ॥ ३२ ॥ दुःख
 नरक निगोद ना, दूरा टलजावै रे । ते वातां कहां,
 तिण कारण चाहवै रे ॥ भि० ॥ ३३ ॥ घणा लोग
 लुगाई, इण कारण राजी रे । गामो गाम थो, विन-
 तियां ताजी रे ॥ भि० ॥ ३४ ॥ कवडी नहीं मांगां,
 शिव पंथ बत्तावां रे । नर नाखां भणी, इण कारण
 सुहावां रे ॥ भि० ॥ ३५ ॥ कासीद निर्गुण थो,
 पिण पिउ समाचारो रे । तिण मुख स्यूं कहा तिण
 स्यूं हरषो नारो रे भि० ॥ ३६ ॥ म्हे महाव्रत धारी
 जिन बैण सुणावां रे । बहु प्रकार थो, नर नाखां ने
 सुहावां रे ॥ भि० ॥ ३७ ॥ नरपति सुरपति पिण
 राख्यां इन्द्राणी रे । ते मुनिवर भणी, निरखे हर-
 खाणो रे ॥ भि० ॥ ३८ ॥ मुनि नो अभरोसो, कोई
 नहीं राखै रे । अण समझू तिको, मन आवै ज्यूं
 भाखै रे ॥ भि० ॥ ३९ ॥ ठाकुर मोहकमसिंह, सुण
 ने दरशाणो रे । सत्य वचन आपरा, स्वामी बैण
 सुहाणो रे ॥ भि० ॥ ४० ॥ ऐसा भिक्षु स्वामी, बुद्धि

अधिक उदारी रे । उत्तर अति भला, सुणतां सुख-
कारी रे ॥ मि० ॥ ४१ ॥ मिश्रु ना जबाब स्युं,
अनुरागी हर्षे रे । मिश्रु गुण भला, गुण गही
परखेरे ॥ मि० ॥ ४२ ॥ द्वेषी अगुणी जन, सुण
मंह मचकोड़े रे । ते अवगु थकी, आ ने जोड़े
रे ॥ मि० ॥ ४३ ॥ तन्त ल तेवीसमी, सुणतां
सुखदाई रे । ६ म मिश्रु तणी, वतका मन भाई
रे ॥ मि० ॥ ४४ ॥

दोहा

किण ही मिश्रु ने गो, लागूं तुम बहु लोय ।

अवगुण काहै थांहरा, ६ कहै तब सोय ॥ १ ॥

अवगुण काहै मांहरा, छोनी काढ़ता सोय ।

भारै अवगुण काढ़णा, माहें न रांखणा कोय ॥ २ ॥

क तप संयम करी, अवगुण काढ़ां आप ।

क जन अवगुण करे, रहि काटां पाप ॥ ३ ॥

संवली बैची स्वामंजी, इम बहु बात अनेक ।

देपुरी जातैं मिल्यो, द्वेषी जन ॥ ४ ॥

तिण धो सूं नाम तुम, भीखण कहीज ।

तिण गो तेरापन्थी ते, ६ कहै तेहीज ॥ ५ ॥

तब कहै तुम मुख देखियां, जावै नरक मभार ।

पूज्य कहै तुम मुख देखियां, किहां जावै कहो धार ॥ ६ ॥

मुम मुख देख्यां शिं स्वर्ग; तब बोल्या महाराय ।

भे तो इसड़ो ना कहां; मुख थी नरक मि ॥ ७ ॥

पिण मुन्न देख्यो धांदगे, म्हार तो शिव स्वर्ग ।

म्हारा मुन्न देख्या तुहें, तुम कडिणो तुम नर्क ॥ ८ ॥

सुण ने कष्ट हुवो घणा, पेसी बुद्धि अधिकाय ।

बलि उदत्तिया बुद्धि करी, निर्मल मेर्या न्याय ॥ ९ ॥

॥ ढाल २१ मी ॥

(कहें छे रूप श्री नार सुणज्यो पदेशी)

स्वाम भिक्षु सुखदाय, मणिधारी महा मुनि-
 राय हो ॥ भिक्षु बुद्धि भारी ॥ अति मति श्रुति
 पर्यव अथाय, जसु गुण पूरा कल्या न जाय हो ॥
 भिक्षु बुद्धि भारी ॥ बुद्धि अति अधिक अपारी,
 ए तो स्वाम सदा सुखकारी हो ॥ मि० ॥ १ ॥ धुर
 देव गुरु ने धम्म, पद तीन दिखाया पम्म हो ॥ मि०
 शुद्ध सरध्यां समकिन्न सार, धुर शिव पावडियो धार
 हो ॥ मि० ॥ २ ॥ दियो गुरु ऊपर दृष्टन्त, तकड़ी
 री डांडी रो तन्त हो ॥ मि० ॥ तीम वेच डांडी रे
 समीच, विहु पासे ने इक वीच हो ॥ मि० ॥ ३ ॥
 विचले हें फरकज वाण, कहिये तसु न्तर काण
 हो ॥ मि० ॥ तसु विचलो वेच हुवे तंत, कोई अन्तर
 काण न कहन्त हो ॥ ४ ॥ ज्यं देव गुरु धम्म
 जाणी, पद गुरु नो वीच पिछाणी हो मि० गुरु
 होवे शुद्ध गुणवंत, तो देव धम्म कहै तंत हो ॥ मि०
 ॥ ५ ॥ होवे गुरु हीण आचारी, बलि अच्चा भ्रष्ट

बिचारी हो ॥ भि० पाड़ै देव मांहे पिण फेर, धर्म
में पिण कर दे अंधेर हो ॥ भि ॥६॥ गुरु मिले ह्यण
तत् खेव, तो देव कहे महादेव हो भि० अने धर्म
वतावै एह, जन विप्र जिमावे जेह हो ॥ भि० ॥ ७ ॥
भोपा गुरु मिले भरमाजा, देव कहै देव धर्मराजा
हो भि० सुरह गायनो बाहरुसावो, धर्म पाताल्यो
भोपा जिमावो हो भि० ॥ ८ ॥ गुरु मिले कांवरिया
कहेजी, देव बताय देवै रामदेजी हो भि० धर्म
कहै कांवर जिमावो, बले जमारी रात्रि, जगावो हो
॥ भि० ॥६॥ अरु गुरु मिल जावे मुझा, तो देव बताय
दे अज्ञा हो भि० धर्म जबे करण जलपंता, एर,
चरति आदि कहंता हो भि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

पर चरति मैरु चरति, खेर चरति बहुतेरा ।

हुकम आयाः अज्ञा साहिबत, गला काटूंगा तेरा ॥११॥

ए साखी पढ़ पापिया, कती करे पर जीव ।

ते पाप उदय आयां छटां, पामै दुःख अतीव ॥ १२ ॥

॥ दाल तेहि ॥

जो गुरु मिले हिंसा धर्मी, कहै निगुणा देव
कुकरमी हो भि० धर्म फूल पाणी में थापे, सूत्रां रा
वचन उत्थापे हो भि० ॥ १३ ॥ गुरु मिले असल

निग्रन्थ, देव बताय देवै अरिहन्त हो भि० धर्मजिन
 आज्ञा बतावै, इहां अन्तर काण न आवै हो
 भि० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

गजो मैमूदि वासतो, तीनुं एकण गौत ।

जिण ने जे जा गुह मिल्या, तिसा कादिया पोत ॥ १५ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

इण दृष्टन्त गुरु हुवै जैसा, तिके देव ब वै
 तैसा हो भि० बलि धर्म इसोज बतावै नर मभू
 न य मिलावै हो ॥ १६ ॥ उत्तम पुरुष आचारी.
 गुरु सत वो गुण धारी हो भि० निर्म धर्म देव
 निदोष, न सूं सरध्यां हे मोख हो ॥ १७ ॥ वर
 ले भिक्षु बताया, दि में भि २ दरशाया हो
 भि० ए कही चौशीसमो ढा , भिक्षु यश अधिक
 र । हो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

ण कैयक कहै, म्हादे करणीं सूं नहों काम ।

म्हेतो ओघो मुंहपति, वांदां छां सिर नाम ॥ १ ॥

भिक्षु कहै ओघा भणी, वंशणा कियां तिरन्त ।

तो ओघो हुवै ऊनरो, ऊन गाढर उपजन्त ॥ २ ॥

पग गाढर ना पकरना, जो तिरै ओघा थी तास ।

धिन है माजा तूं सही, सो ओघा करे पैदास ॥ ३ ॥

मुंहपति हुवे कपासनी, स बणि नो होय ।

जो तिरै मुंहपति बांदियां, तो बणिने वंदनो जोय ॥ ४ ॥

धिन है बणि सो तांहरो, हुवे मुंहपति एह ।

मेव भणी इम बांदियां, भव दधि कैम तिरैह ॥ ५ ॥

गुण लारे पूजा कही, तो निगुण पूजता जाय ।

चौडे भूला मानवी, किम आणीजे ठाय ॥ ६ ॥

जिन मारण में देख्यो, गुण लारे पूजाह ।

निगुणा ने पूजे तिके, ते मारण पूजाह ॥ ७ ॥

गुण गोली सीरे भरी, पुरन्यां पांन घषाय ।

गुण बिन ठाली ठीकरो, देख्यां भूख न जाय ॥ ८ ॥

एक व्रत भागे इलो, दोषण थापै जण ।

इम इक व्रत भांगां छतां, पानूं जःय पिछाण ॥ ९ ॥

॥ १ २५ ॥

(कामण गारो है कुण ए देशी)

किणहिक स्वाम भणी कह्यो रे, किम ए बात
मि ।य । एक महाव्रत भांगां छतां रे, पञ्च वरत किम
जाय ॥ सुणज्यो दृष्टन्त भिक्वु तणा रे ॥ १ ॥ स्वाम
कहै तुमे सांभलो रे, पाप उदे थी पिछाण । इण भव
में पिण दुः उपजै रे, सुण एक हेतु स न ॥ तंतं
दृष्टन्त भिक्वु तणा रे ॥ २ ॥ एक भि ।री भीख
मांगतो रे, किरतां २ पुर मांहि । पंच रोटी रो ।टो
पामियो रे, अन्तर भूख थाय ॥ तं० ॥ ३ ॥ रोटी
करण लागो तदारै, भिखु चर भाग्य हीन । एक

रोटी ने उतार ने रे, चुला लारं मेली दीन ॥ तं ॥ ४॥
 स्वान एक आयो तिण समे रे, पाप तणे परमाण ।
 लोयो कठोती रो ले गयो रे, जद ते स्वान लारं
 न्हाटो जाण ॥ तं० ॥ ५ ॥ स्वान लारं भिख्याचर
 न्हासतां रे, आखुर पडियो अचाण । हाथ माहें जे
 लोयो हुन्तो रे, ते धूल में विखरियो पिछाण ॥ तं०
 ॥ ६ ॥ तत् खिण पाछो आत्री तदा रे, देखण लागो
 तिवार । चूला लारं रोटी पडी हुन्ती रे, लेगई तास
 मंजार ॥ तं० ॥ ७ ॥ तदा तणी तवे वलगई रे, खीरां
 रो खीरे हुय गई छार । पांच विललाई इण रीत सं रे,
 पाप तणा फल धारं ॥ ८ ॥ इमंहिज एक भांगां
 थकां रे, पांच जात्रे परवार । दोषण थापे जे जाण ने
 रे, भव २ होत्रे खुवारं ॥ तं० ॥ ९ ॥ दोष सेव्यां डंड
 संयजे रे, डंड जितोई भागंत । नवी दिख्या आवे
 जेह थो रे, ते दोष सेव्यां सुर्व जावन्त ॥ तं० ॥ १० ॥
 भिक्षु स्वान भली परे रे, दीक्षो वारु दृष्टन्त । हलु-
 कर्मा सुण हरपिये रे, भारी कर्मा भिडकन्त ॥ तं०
 ॥ ११ ॥ पचीसर्मा ढाल परवरो रे, भिक्षु बुद्धि भर-
 पूर । नित्य प्रति हूं वन्दना करुं रे, पोह उगन्ते सूर
 ॥ तं० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

आधा कर्मो जायगां, थानक तिणरो नाम ।

एहना थ नक भोगवे, बले कहै निरदोषण ताम ॥१॥

बलि कहै म्हे मुख सूं कद कह्यो, जद बोल्या भिक्षु स्वाम ।

जाय जमाई सासरे, ते पिण न कहै ताम ॥ २ ॥

मुझ निमते सीगे करो, इम तो न कहै तेह ।

पिण कीधो ते भोगवै, जद दूजी बार करेह ॥ ३ ॥

जो सीरा त्रा सूं करै, तो न करै दूजी बार ।

त्याग न ीं तिण सूं करै, भोजन विविध प्रकार ॥ ४ ॥

ज्यूं भेषधारी रहे थ नक मझे, बले कहै मुख सूं ताम ।

थानक मुझ निमते करो, इम म्हे कद कह्यो ताम ॥५॥

त्यां निमते कियो भागवै, निर करै दूजी बार ।

त्याग करै थानक तणा, तो आरम्भ टलै अपार ॥ ६ ॥

बले डावरो बद कहै, करो सगाई मोय ।

पिण सगपण कीघां पछै, कुण परणीजे सोय ॥ ७ ॥

बलि बहु बाजे केहनी, घर किणरो मंडाय ।

डावड़ा तणोज जाणज्यो, थानक एम गिणाय ॥ ८ ॥

थानक बाजे तेहनो, मांहे पिण रहै तेह ।

न कह्यो थानक नो तिणां, पिण सहु काम करेह ॥९॥

॥ द्वाल २६ मी ॥

(कवि रे प्रिया संदेशो कहेय० पदेशी)

गछवास्यां रे उपासरे रे, मथेण तणे पोशाल ।

फकीर रे तकियो कहै रे, नाम में फेर निहाल रे ॥

जीव स्वाम बुद्धि विशाल ॥ १ ॥ स्वाम बुद्धि अति

शोभती रे, निर्मल न्याय निहाल रे ॥ जी० ॥२॥ कान
 फोडां रे आसण कहै रे, भक्तां रे स्तल भाल । भक्त
 फुट र तेहने रे, मंडी नाम निहाल ॥३॥ सन्यासां रे
 मठ है रे, रामसनेह्यां रे गेह । राम दुवारो केबक
 कहै रे, राम.मोहल कहै केह ॥४॥ घरराधणी रे घर
 है रे, सेठ रे हवेली सुहाय । कहै गाम धणी रे
 कोठरी रे, किहांएक रावलो कहाय ॥ ५ ॥ राजा रे
 हल कहै ही रे, कांयक ठौर दरवार । साधां रे
 थानक वाजतो रे, नाम में फेर विचार ॥६॥ सगलाई
 घररा घर अछै रे, कठेएक बुहा कोदाल । किहांयक
 कसी बुही सही रे, आधाकर्मी असरा ॥ ७ ॥
 आरम्भ तो षटकायनो रे, हुवो ज्यूं रो ज्यूं जाण ।
 अरिहंत नी नहिं गन्यां रे, छः कायनो घमसाण
 ॥ ८ ॥ घर छोड्या मुख.सूं कहै रे, गाम २ रह्या घर
 मांड । तिण घर रो नाम थानक दियो रे, रह्या भेय
 ने भांड ॥ ९ ॥ आधाकर्मी थानक भोगव्यां रे, महा
 व किरिया संभाल । दूजे आचारङ्ग देखल्यो रे,
 कह्यो दूजे अध्ययने दया ॥ १० ॥ आधा कर्मी
 आद.स्यां रे, चौमासी डंड पिछाण । निशीथ दशमें
 निहालज्योरे, वीर तणो एह वाण ॥ ११ ॥ आधा
 कर्मी भोगव्यां रे, रुले अनन्तोकाल । पहले तक

भगवती में पेखल्यो रे, नवमें उदेशे निहाल ॥ १२ ॥
 इत्यादिक बहु बारता रे, खी आगम मांय । भिक्खु
 तास भली परै रे, रुड़ी रोत दीधी ओल य ॥ १३ ॥
 उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे, अधिक उजागर प ।
 निश दिन मनडो मांहरो रे, जप रह्यो आप रो जाप
 ॥ १४ ॥ स्वप्ने सूरत मनो रे, देखत ही सु होय ।
 प्रत्यक्ष नो कहियो किसूं रे, शरण आपनो मोय ॥ १५ ॥
 आदि जिणंद तणी परै रे, ओल त्यो श्रद्धा चार ।
 जनम जनम किंम विसरे रे, तुम्ह ए अनब पार
 ॥ १६ ॥ बारु ल छवीसमी रे, भिक्खु ए मुक्क चित्त ।
 याद यां हियो हुलसै रे, परम प सुं प्रीत ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

भारी शोमै , पूज्य भीखणजी पास ।

बारुं कला बखाण की, घन जिम शब्द गुंजास ॥ १ ॥

नित्य बखाण दे निरमलो, ऊपर भिक्खु आप ।

दान दया दीपावता, सुणतां टलै सन्ताप ॥ २ ॥

इलुकम्मों हरषे घणा, भारी कम्मों भिडकन्त ।

अलगा ही अवगुण करै, बिकल वचन बिलपन्त ॥ ३ ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, बर तुमें करो बखाण ।

निन्दक ए निन्द्या करे, अलगा बैठ अजाण ॥ ४ ॥

भिक्खु-उत्तर दे भलो, खान तणुज स्वभाव ।

भालर रो भिणकार सुण, रोवण केरो राव ॥ ५ ॥

नीच इती जाणे नहीं, ए झालर अधिकार ।

व्याव तणी वाजे अछे, के मूवांनी धार ॥ ६ ॥

ज्युं ए पिण जाणे नहीं, वांचे ज्ञान बलाण ।

राजी रहणो ज्यांही रह्यो, अवगुण करे अजाण ॥७॥

उलटी निन्द्या ए करे, निन्द्या तणोज न्हाल ।

स्वभाव यांगो छै सही, झूटी करे ज्वाल ॥ ८ ॥

ऐसी बुद्धि उत्पात री, निर्मल अपूर्व न्याय ।

मेले मुनि महिमा निला, स्वाम घणा सुखदाय ॥ ९ ॥

॥ हृल्ल २७ मी ॥

(हां म्हाग राजा रा)

स्वाम भिक्खु गुरु महा सुखदाई. भारीमाल
शिष्य अति भारी । अमृत वाण सुधासो अनोपम,
हृद देशना महा हितकारी ॥ हो म्हारा शासण रा
शिणगार, स्वामीजी भिक्खु भारीमाल ऋप
भारो ॥ १ ॥ हृद वाण सुणो हल्लकर्मि हरपे, द्वेषी
बोल्या धर्म द्वेष धारी । वादोय पोहर रात्रि
आई सो, थाने कल्पे नहीं इणवारी ॥ २ ॥ भिक्खु
कहै दुःखनी रात्रि भूडी, झूट सुख निशा गोहरी
जावै । समी सांज मांहे मनुष्य मूआं सूं, लोकां में
रात्रि मोटी लखावै हो ॥ ३ ॥ संत बखाण देवै ते
न सुहावै, ज्यांने रात्रि घणीज जणावै । दम्भ मिठ्यां
तो अधिक न दीसै, आतो पोहर रे आसरे आवै
॥ ४ ॥ दोहा सहित दिया हृष्टान्त दोनुं, पैतालीसै

शहर पीपार । तन्त चौमास सोजत में तपने, उठै
 वो घणो उपगार ॥ ५ ॥ किण्हिक स्वाम भिक्षु
 वे गो, इम उप र तो लो कीधो । जीव
 घणा ने समभाया जुगति सू. लाभ धर्म रों लीधो
 ॥ ६ ॥ बलता भिक्षु कहै ेती तो बाही, पिण
 गाम रे गोरवें पे गो । सो र नहीं आय पढ़यां
 तो टिकसी, बाकी कठिन है अधिक विशेषो ॥ ७ ॥
 गधा समान खरडी गिणिये, जिहां जासे विशेष
 जिणारो । ेती समान धर्म खय करदे, तिण सू
 न करणो तिणारो ॥ ८ ॥ किणही कह्यो देवो
 दृष्टन्त कर , स्वामी थ बोल्या सुण वायो ।
 करडो रोग उपनां गंभीर केरो, दु फुजाल्यां केम
 मिटायो ॥ ९ ॥ हलवाणी रा डाम गां हुवै हलको,
 गंभीर रो रोग गिणायो । करडो मिथ्यात रोग
 मिटावण काजे, करडा दृष्टन्त कहायो ॥ १० ॥ किणही
 स्वामोजो ने पूछा कीधो, क गो बुद्धिवालो समभे
 न काई । मुनि भिक्षु कहै दा मूंग मोठारी,
 फिर दाल चणा री पिण थाई ॥ ११ ॥ पिण गौहारी
 दाल हुवै नहीं प्रत्यक्ष, ज्युं भारी करमा न समभे
 जाणी । हलुकर्मी बुद्धिवान हुवै ते, पक्ष छडै जिण
 धर्म पिछाणी ॥ १२ ॥ शुद्ध जाब दूजो देवे तिण में

न समझे, आपरी भापा रो ही अजाण । दृष्टन्त स्वाम
 ते ऊपर दोधो. मसभावण काज सयाण ॥ १३ ॥
 एक वाई बोली म्हारो भर्तार एहवो, अखर लिखे
 ते अधिक अजोग । बीजा सं खर वचे नहीं
 विरुआ, मोने ठोठरो मिल्यो संयोग ॥ १४ ॥ इतरे
 दूजो कहै मुक्त पिउ इसडो, पोतारा लिख्या अखर
 पिछाणो । जे-पिण पोता सं वच्या नहीं जावै, अति
 ही मूर्ख एहवो अजाणो ॥ १५ ॥ ज्युं अपरी भापाने
 आप न जाणै, केवली भाख्यो धम्म किम आवे ।
 सरधा तो परम दुर्लभ कही सूत्रे. परवीण हलुकम्मो
 पावै ॥ १६ ॥ पाखड्यां रो मग गायां रो पगडांडो,
 दूर थोड़ी तो मारग दीसै । आगे उजाड़ मोटी
 अटवी में, दुष्ट कांटा विपम दूधरी से ॥ १७ ॥ ज्युं
 दान शीलादिक अल्प दिखाई, पाखणडी पछै हिंसा
 पमावै । गे चले नहीं ये उन्मारग, जाव माहें
 घणा अटकजावै ॥ १८ ॥ पातशाही रास्ता जिम
 पन्थ प्रभु नो, नहीं अटक कठेई ते न्यायो । दृष्टन्त
 पाग तणो स्वाम दोधो, पार थेट ताई पोंहचायो
 ॥ १९ ॥ पाग चोरी ल्याया पूछ्यां न पूग, मुदो थेट
 ताई न मिलाई । साचो कहै मोल लियो कुण सेती,
 रुड़ी अमकडियां पास रंगाई । इम साची सरधा न्याय

किहांई न टके, भूठी सरधा टकै भोला वै
 दृष्टन्त स्वाम भिक्खु एहवा दीधा, दान दया आज्ञा
 दरशावै ॥ २१ ॥ एहवा भिक्खु स्वाम आप उजागर
 ज्यांरा गुण पूरा कह्या न जावै । हद न्याय सुणी हरषे
 हल्लकम्मर्मा, भारो कम्मर्मा सां भिड़कावे ॥ २२ ॥
 स र ढाल कही स समी, दृष्टन्त भिक्खु रा
 दिखाया । मति त सुं बर न्याय मि ई, स्वामी
 जीव घणा समभाया ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

किण्हिक भिक्खु ने कह्यो, सुंस करावो सोय ।

ते लेई भागे तिको, पाप आपने होय ॥ १ ॥

स्वामी माखे सांभलो, कोयक साहूकार ।

बन्न किणने बेचियो, सौ रुपया रो सार ॥ २ ॥

नफो मोकलो नीपनो, बेच्यो तास विचार ।

बलि वस्त्र लेवांल रा, सांभलजो समाचार ॥ ३ ॥

कपड़ो लीघो तिण किया, एक एक रा दोय ।

तो पिण नफो उण तणो, बेच्यो तास न होय ॥४॥

कपड़ो जो लेई करी, जालै अग्नि मभार ।

तोडो पिण उण रे तिको, बेच्यो तसु म विचार ॥५॥

समभाईं म्हे सुंस छां, तिणरो नफो अमाम ।

हमने तो ते हो गयो, तोटा में नहीं ताम ॥ ६ ॥

सुंस पालसी अति सखर, थिर फल तेहने थाप ।

भाग्यां दोषण उण भणी, पिण म्हांने नहीं पाप ॥ ७ ॥

बलि दूजो दृष्टन्त थर, दमिने किण घृत दीध ।

मुनिने बहरार्द जिय मूधा, पाप तास प्रलिद्ध ॥ ८ ॥

अथवा मुनि अन्य साध ने, घृत ते बन्धे जिन गोत ।

तो पिण फल ते मुनि तणे, हिय गृही ने नहिं होत ॥९॥

॥ ढाल ३८ मी ॥

(आज शहर में आई पदेशी)

वैरागी री वाणी सुण्यां वाधै, दियो स्वाम
 भिक्षु दृष्टान्तो रे लो । सुंवो आप गल्यां गालै
 कपड़ो, आवै रंग अत्यन्तो रे लो स्वाम भिक्षु तणा
 दृष्टन्त सुणजो ॥ १ ॥ गांठ कसुंवा री गाढ़ी वांधै,
 पोते गलियां विण रंग न पमावै रे लो । ज्युं वैराग
 हीण तणी वाणी सुं, अति वैराग किण विध आवै रे
 लो ॥ २ ॥ भेयधारी कहै म्हे जोव वचावां, भोखण जी
 नाहिं वचावै रे लो । भिक्षु कहै थारा रह्या वचावणा.
 मारणाज छोड़ो मन ल्यायो रे लो ॥३॥ थानक मांहे
 रहौ किवाड़ जड़ो थे, जीव घणा मर जावे रे लो ।
 किवाड़ जड़वारा सुंस कियां सुं, घणा जीवारी घात
 न थावै रे लो ॥ ४ ॥ चौकीदार हुंतो सो चौकी
 देणी तो छोड़ी, चोरी करवा लागो छाने छाने रे लो ।
 कहे लोकां ने चौकी द्युं करूं जावता, मैन्त रा पै
 देवो थे म्हानेर लो ॥ ५ ॥ चौकी रही थारी चोखां

छोड़ नूं बोल्या लोक तिवारे रे लो । दिनरा तो घर हाट देखी जावै, पछै रात्रि समै आय फाड़ै रे लो ॥ ६ ॥ पइसो पइसो तोने देसां परहो, घर बैठी ने गिणायो रे लो । ज्युं भेषधारी कहै म्हे जीव बचावा, मारणा छोड़ो भिखु फुरमायो रे लो ॥ ७ ॥ किणही पूछयो ऋषपाल मुनि कह्या, रिख्या करै किण रीतो रे लो । भिखु कहै ज्युं छै तिम हिज राखणा, आघा पाछा न करणा अनीतो रे लो ॥ ८ ॥ पशु निलोतो चरता ने मुनि पेल्ले, किम ऋषपाल कहीजे रे लो । त्रिविधे त्रिविधे हणवा त्याग्यो ते, रत्नक अभय सर्व ने आपीजै रे लो ॥ ९ ॥ कोई कहै हित्रड़ां पंचम काल छै, पूरो साधपणो न पलायो रे लो । तव पूज्य कहे चौथा आरा में तेलो, कितरा दिनारो कहायो रे लो ॥ १० ॥ तव ते बोल्या तोन दिनरो तेलो, चौथे आहारै चित्त चाह्यो रे लो । भिखु पूछयो एक भंगरो भोगव्यां, तेलो रहे के भागै ताह्यो रे लो ॥ ११ ॥ ते बोल्यो परहो भागै तेलो, इम चौथे आरा रो तेलो उलखायो रे लो । फेर स्वामी पूछै पंचम आरै, किता दिवस रो तेलो कहायो रे लो ॥ १२ ॥ तव ते बोल्यो तेलो तोन दिनारो, पंचम आरै पिछाणी

रे लो । भिक्षु कहै एक भूंगरो खाधां, शुद्ध रहे
 के भागे सो जाणी रे लो ॥ १३ ॥ तब ते बोल्यो
 परहो भागै तेलो, बलि पूज बोल्यो बायो रे लो ।
 भंगरा सं ई तेलो पहरो भागै, दोष थाप्यां संजम
 किम ठहरायो रे लो ॥ १४ ॥ काल दुखमरे माथे
 कांय न्हाखो, नेयंठे छहूं चरण ते नीको रे लो ।
 पंचम चौथा आरा में प्रत्यक्ष, सहुरे त्याग है एक
 सरीखो रे लो ॥ १५ ॥ दोष लागं रो डंड दोनूं
 आरा में, डंड लीधां चारित्र दोनूं आरो रे लो ।
 दोनं आरा माहिं दोष थाप्यां सं, चारित दोनूं
 आरा में हुवै आरो रे लो ॥ १६ ॥ भिक्षु स्वाम
 दृष्टन्त भली पर, वारु भिन्न २ भेद बताया रे
 लो । ज्यां पुरुषां जिण माग जमायो, स्वामी चार
 तीर्थ सुखदाया रे लो ॥ १७ ॥ एहवा पुरुषां रा
 औगुण बोलै, कृतत्र कर्म रेख कालीं रे लो ।
 दुर्लभ बोध अवरणाद सं दाख्यो, सूत्र ठाणांग
 लीजो संभाली रे लो ॥ १८ ॥ अष्टबीसमीं ठाल
 अनोपम, भिक्षु रा दृष्टन्त भाली रे लो । उत्प-
 त्तिया भेद मति रो है आखो, नन्दी में पाठ निहाली
 रे लो ॥ १९ ॥

३१

किणहिक नि ने गो, म लेऊं ।
 मन उठै है मांहरौ, कहै सुखकार ॥ १ ॥
 घर में पुत्रादिक, खदन करै घर ।
 तुम्ह काचो हियो तेहथी, अति ही कठिन अ ॥ २ ॥
 ध्यासी रोता निरखने, मोह धरो मन मांहि ।
 तू पिण १ करे १, कठिन कति ॥ ३ ॥
 त्रिण कछो स्वामी तहत, आंसु तो ।
 परियण रोता पेखने, ग्हारे पिण मोह आय ॥ ४ ॥
 खाम कहे कोई सासरे, जायः जमाई जाण ।
 आणो ले आतां, त्रिय सो रोवै ताण ॥ ५ ॥
 पिण उणरी देखा देख पिड, जेह ई जोय ।
 खदन करै मोह सुं, हांसी में होय ॥ ६ ॥
 त्रिय रोवै पीयर दे, वियोगः पड़े बिसेष ।
 घर रोवै किण वासतै, अशेष ॥ ७ ॥
 ऊयूं संयम जरे, ।
 तत चारित तिको, मोह धरे किम ॥ ८ ॥
 तिण सुं सं कठिन तुम्ह, दियो इसो दृष्टन्त ।
 बलि हेतु विविध, शोभंत ॥ ९ ॥

३२

(ति ० पदेशी)

तो रोह ने दया । दया ओ -
 एी दोहरी, प्रत्यक्ष २ रे में, ची
 । नहीं सोरीरा ॥ भवि भिक्खु टन्त

भारी ॥ १ ॥ पूज मोह ओलंखायो प्रत्यक्ष, दियो
 एहवो दृष्टान्तो । परण्यां पद्ये कोई परभव पोंहतो,
 बाल अवस्थावन्तो ॥ २ ॥ मुञ्चो देख हाहाकार
 माच्यो, त्रिया रोवै तिण बेला । प्रत्यक्ष हाय हाय
 शब्द पुकारै, भय चक्र जन हुवा भेला भ० ॥ ३ ॥
 कहै वापरो छोरी रो घाट काई होसी, इणरी देखो
 अवस्था ऐसी । वारह वर्ष री विधवा होई सो, किय
 विधं दिन काढैसी भ० ॥ ४ ॥ एम विलाप करै
 लोक अधिका, जगत इणने दया जाणै । करुणा
 दया यह छोरी री करै छै, मूरख तो इम माणै ॥ ५ ॥
 पण भोला इतरी नहीं पेखै, ए वंछे इणरा काम
 भोगो । जाणै ओ रह्यो हुन्तो जीवतो तो, सखर
 मिल्यो थो संजोगो भ० ॥ ६ ॥ दोष चार होता
 डावरा डावरी, भोग भला भोगवती । पिण न जाणै
 आ काम भोगथी, माठी गति माहिं पढ़ती ॥ ७ ॥
 तिणारी चिन्ता तो नहीं तिणाने, तथा पिउ किय
 गति पांगरियो । ते पिण मूल चिन्ता नहीं त्याने,
 जगत् माया मोह जड़ियो भ० ॥ ८ ॥ ज्ञानी पुरुष
 मरण जीवण सम गिणै, उलट सोग नहीं आणै ।
 मूढ़ मिथ्याती मोह राग ने, जीवण ने दया जाणै
 ॥ ९ ॥ अथवा राग द्वेष रे ऊपर, दृष्टान्त दूजो दीधो ।

डावरां रे किणही माथा में दीधी, म्प्रत द्वेष
 प्रसिद्धो ॥ १० ॥ उण ने सहु कोई देवै ओलंभा,
 डावरां रे माथा में कांई देवै । क्रोध करि दियां द्वेष
 कहे सहु, कोई आछो नहीं कहवै ॥ १ ॥ डावरां ने
 किणही लाडू दीधो, अथवा मूलो दियो आणी ।
 कोई न कहे इण ने कांई डबोवे, प्रत्यक्ष राग पिछाणी
 ॥ १२ ॥ ओ राग ओलखणो ढोहरो अति ही, इण ने
 दयाक हे छै अजाणो । दुर्जय राग दशम ताई देखो,
 बीतां बीतराग कहाणो ॥ १३ ॥ इम राग द्वेष भिवखु
 गोलखाया, मोहराग पाखंडी दया माणै । स्वाम भिवखु
 न्याय सूत्र शोधी, निरवंच दया आज्ञामें जाणै ॥ १४ ॥
 भरत खेत्र में दीपक भिवखु, दीपा समानं दीपायो ।
 जिहाज तुल्य भिवखु यशधारी, प्रत्यक्ष ही पेखायो
 ॥ १५ ॥ याद आवै भिवखु मुक्त हृदिश, तन मन
 शरण तुमारो । त्यां पुरुषां नी आसता तीखी, जिण
 रो है सफल जमारो ॥ १६ ॥ गुणतीसमी ढाले ज्ञानी
 गुरुंना, बारु वचन बताया । कठा तलक भिवखु गुण
 कहिये, चिर जश कलश चढ़ाया ॥ १७ ॥

दोहा ॥

विहरत पूज पथारिया, काफरले किण वार ।

सन्त गोवरी संवसा, आहा छेई उदार ॥ १ ॥

एक जाटणो रे उदक, जाच्यो साधां जाय ।

ते धोवण नहिं दे तिका, कहै देवै सो पाय ॥ २ ॥

साधां आय े सही, स्वाम पास सुबिहाण ।

जाटणी रे अधिक, पण नहीं देवै पाण ॥ ३ ॥

तब स्वामी आया तिहां, बाई जल बहिराय ।

जब ते कहै देवै जिसो, परभव में फल पाय ॥ ४ ॥

ओ धोवण छूं आपने, परभव धोवण पाय ।

जे जल पीयो जाय नहीं, मुक सेतो मुनिराय ॥ ५ ॥

पूज तास पूजा करी, गाय भणो दे घास ।

तिण रो स्थूं दे ते गऊ, आपे दूध उजास ॥ ६ ॥

इम मुनि ने जल आपियां, परभव सुखफल पाय ।

निर्दोषण ना फल निमल, स्वाम दर्द समभाय ॥ ७ ॥

जद आहा दी जाटणी, बहिरी ते शुद्ध चार ।

आप ठिकाणे आविया, ऐसी बुद्धि उदार ॥ ८ ॥

मति ज्ञान महा निर्मलो, भिक्षु नो भरपूर ।

नौत चरण पालण निपुण, स्वाम सिंघ सम शूर ॥ ९ ॥

॥ हा ३० की ॥

(भगवन्त भाष्या पदेशी)

ज म्हारा पूज सूं रे पाखण्ड थरहड़े, सुरगिर
आप सधीरो जी । पारश साचो रे भिक्षु प्रगत्यो-
हद स्वाम अमोल हीरो जी ॥ १ ॥ दु

शहरे रे पूज पधारिया, उतच्या उपासरे आणो जी ।
शिष्य हेम संघाते रे गोचरी उठता, इते कृण

ानो जी ॥ २ ॥ आया दोय जणा तिण अव-
रे, सामदा जी रा साधो रे । खांधे पोथ्यां तणा

जोड़ा खरा, मेला व मथ्यादो रे ॥ १० ॥ २ ॥
 बिहार रन्ता उगरे आविया, बोले मुख सूं बोलो
 रे । कठे भीखणजी रे भीखणजी कठे, तब भिक्खु
 बोल्या तोलो रे ॥ ४ ॥ भीखण नाम म्हारो
 स्वामी भणे, बलि ते बोल्या विशेषो रे । थाने देखण
 री मन में हुन्ती, तब स्वाम कहै तुम देखो रे ॥ ५ ॥
 बलि उवे बोल्या थे सगली बारता, आछी कीधी
 आमामोजी । एक बात आछी नहीं आदरी, तब
 पूज कहै कहो तामो जी ॥ ६ ॥ बलि ते कहिवा रे ।
 लागा बारता, म्हें बावीस टोलां रा साधो रे । त्यां
 सगलां ने असाध कहो तिका, बिरुई बात बिराधो
 रे ॥ ७ ॥ मुनि भिक्खु कहे तुम्ह टोला मम्हे, लिखत
 इसो अवलोयो रे । इकबीस टेलारो तुम्ह गण
 आवियां, संयम देणो सोयो रे ॥ ८ ॥ ऐसो लिखत
 थारा गण में अछे, जाणो के थे न जाणो रे । जद
 उवे बोल्या म्हे जाणां अछां, छै मुम्ह लिखत अछानो
 जी ॥ ९ ॥ भिक्खु पभणे इकीस टोलां भणो,
 थेइज प्रत्यक्ष उथाप्या रे । गृही ने दीख्या देई लो
 गण मम्हे, थे गृही तुल्य त्यांनेई थाप्या रे ॥ १० ॥
 इकबीस टोलां रा तुम्ह गण आवियां, दीख्या दे
 लेवो माह्यो रे । गृही ने दीख्या देई लो गण विषै,

गृही तुल्य तास गिणायो रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ इक-
 वीस टोला इम थेइज उथापिया, तुम्ह टोलो रह्यो
 तेहो रे । तिण रो लेखो वताऊं तो भणी, सांभल-
 जो ससनेहो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ डंड वेला रो आवै
 जिण भणी, तेलो देवै तहतीको रे । तेलारो डंड
 आवै तिण भणी, श्री जिन वैण सधोको रे ॥ १३ ॥
 इकवीस टोला ने साध श्रद्धो अछो, बले नवो साध
 पणो देवो रे । तिण लेखे दीख्या रे तुम्ह आवे नवी,
 विवेक लोचन सूं वेधो रे ॥ १४ ॥ थारो टोलो पिण
 इण लेखा थको, उथप गयो उवेखो रे । इम चात्रीस
 टोला उथप गया, दम्भ तजी ने देखो रे ॥ १५ ॥
 एम सुणी ने ते बोलया इण विधे, वारु वयण विचारी
 रे । सुणो भीखणजी रे साचो वारता, बुद्धि तो थारी
 भारो रे ॥ १६ ॥ इम कहि जात्रा रे लागा उण सम,
 स्वाम कहै सुखकारी रे । रहो तो चर्चा करां रुढ़ी
 तरे, न्याय तणी, निर्धारो रे ॥ १७ ॥ तव उवे बोलया
 मुम्ह रहिवा तणी, हिवड़ां थिरता न होयो रे तत्
 जण एम कही ने तिहां थको, रह्या चालन्ता दोयो
 रे ॥ १८ ॥ ऐसो बुद्धि अनोपम आपनी, बुद्धिवन्त
 पामे विनोदो रे । चिमत्कार अति पामे चित्त मभो;
 प्रगट पणो प्रमोदो रे ॥ १९ ॥ रागी सुणने रे चित्त

में रति लहे द्वेषी द्वेषज धारै रे । उलट बुद्धि नर
 वगुण आदरे, बच सुग मुंह विगाड़ै रे ॥२०॥ बर
 भिक्खु रो सुन्दर रता, सांभलतां सुखकारी रे ।
 हलुकर्मी जन सुग हर्षे घणा, पूज रता ८ री रे
 ॥ २१ ॥ तन्त तीसमी ढाल तपासनी अति बुद्धि
 भिक्खु नी ऐनो रे । अन्तर्ध्यामी रे याद । यां कृतां,
 चित्त में पाभे चैनो रे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

विचरत पून पधारियां, शिरियारी में सोय ।
 प्रश्न बोंहरै पूछिया, जाति खीवसरा जोय ॥ १ ॥
 जीव नरक में जाय तसु, तारण वालो ताम ।
 कुण है कहो कृपा करी, इम पूछयो . भमिराम ॥ २ ॥
 भिक्खु उत्तर इम भणे, सखर जाब सुखकार ।
 पथर कुत्रा में न्हाखियां, कुण तसु खांचणहार ॥ ३ ॥
 कठिन पत्थर भारे करी, आफोई तल जाय ।
 भार सूं कुगति लहै, स्वाम कहै इम घाय ॥ ४ ॥
 बोरे पूछा बलि करो, जीव स्वर्ग दि.म जाय ।
 कुण लेजावणहार तसु, वारु अर्थ वताय ॥ ५ ॥
 भिक्खु कहै बोरा भणी, प्रत्यक्ष पाणी मांय ।
 काष्ट न्हाखे कर प्रही, ते किण रीत तिराय ॥ ६ ॥
 तिण काष्ट रे तल कहो किण मांड्या है हाथ ।
 हलका पणे स्वभाव सूं, ऊपर तिरने भात ॥ ७ ॥
 हलको कर्म करी हुत्रां, जीव स्वर्ग में जाय ।
 सगला कर्म रहिन सो, परम मोक्ष गति पाय ॥ ८ ॥

येसा उत्तर आपिया, बुद्धि बिनाण ।

बलि उत्पत्ति । बुद्धि थकी, ८ ० दि । ण ॥६॥

॥ ४ ३ ४ ॥

(देवै मुनिवर देशना, पक्षी)

पूज भणी किण पूछियो, को जीव किम होय
 । ललना । दृष्टान्त स्वा ी दियो इ नो । अमलजो
 सहू कोय, ल ॥ तन्त न्त भिबखु तणा ॥१॥
 तन्त वचन तहती ० तन्त । व तारणी,
 न्याय तन्त निरभी ० तं ॥ २ ॥ पइसो ०
 पाणी मभे, त रि डूबे तेह । उ हिज पइसाने
 अग्नि में, अधिक प देवै एह ० तं ॥ ३ कूटी
 कूटी बाटकी करी, तिरे उदक ताहि । ० बलि
 उण बाटकी ने विषै, पइसो ० ल्यां तिराय ०
 तं ॥ ४ ॥ तिम गोव जम करी, रे । त्म
 हलकी कोय ल ० करम भार गो कियां, तिरिये
 भव दधि तोय ० तं ॥ ५ ॥ किणही स्वा भणी
 कह्यो, दुरंगा पात्रा दे ल ० । धो । ।
 किण कारणे, स्वाम कहे सुवि ० तं ॥ ६ ॥
 विधिध रंग कुंथुवा हुवै, इ रंग सूं दूजा पर आय ।
 साम्प्रत दीसणो सोहिलो, । रण यह हाय ल ०
 ॥७॥ अति भार हींगलु ए लो, कालो फौड़ो कहि-

वाय ल० बलि सोहरो बासी उतारणो, इत्यादिक
ओलखाय ल० ॥८॥ जु जूवा रंग देवै जूदा, निगम
में बरज—नाहिं। बज्या—मत्त्व भावे करी, ते
तरी थाप न हि ० ॥ ६ ॥ पणै स्वामी बेणी
रामजी, भिक्षु प्रते भाषंत ० हींगू पात्रा
रंगणा नहीं, तब है भिक्षु तन्त ० ॥ १० ॥ रे
तो प । रंग्या छै, तुम्ह न हुवै म ० ।
तो तु रंगो मती, म्हें तो दोष न णा
० ॥ ११ ॥ तब बोलया बेणीरामजी, केलुथी
रंगवा रा भाव ० । भि तास भली परै, निर्मल
ब वै न्याय ० ॥ १२ ॥ जो के लेवा तू छै,
पहिला पी गो कचा रंग रो पे ल० । रंग
रो गे पड्यो, पहिलो छोड़णो नहीं तुम्हले ॥ १३ ॥
पहिला देख्यो । रंग रो परिहरि, चोखो के हेरे
चित्त हि ० । द तो ध्यान घणा रंगरोज छै,
इम हिने दिया मभाय ० ॥ १४ ॥ ऐसी बुद्धि
उत्पात्तरी, नहीं न बड़ाई री नीत ० । तम
थी ओपता, पूरी ज्यांरी प्रतीत ० ॥ १५ ॥ प
ववहार में गो खी, दोष णी किया दूर । निरदोष
जाणयो निर्मलो, दरियो शूर ० ॥ १६ ॥
प्रथम । चारंग पेखल्यो, पंचम अध्ययने पिछा

ल० । पंचम उदेशो पर्वडो, वीर तरणी ए वाण . ०
 ॥ १७ ॥ शुद्ध व्यवहार आलोचियां, सम्य पिण
 सम्य थाय ल० । ते कामी नहीं तिण दोष नो, शुद्ध
 धुनी रीत सुहाय ल० ॥ १८ ॥ उत्तम ए पाठ
 ओलखी, कोई धोलरो भ्रम कर्म योग ल० । तो
 भिक्खु री । ता राखियां, पामै सुख परलोग ल०
 ॥ १९ ॥ आखी ढाल इकतीसमी, भिक्खु बुद्धि
 भण्डार । दृष्टान्त दिल में देखतां, चित्त पामै चिम-
 त्कार ० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

किणही भिक्खु नै कह्यो, जीव छोड़ावै जाण ।
 सुं फल तेहनो संपजे, वर भिक्खु कहै थाण ॥ १ ॥
 घट में ज्ञान घाली, करी, हिंस्या छोड़ायां घर्म ।
 जीवन बंछै जेहनो, फटै नहीं तसु कर्म ॥ २ ॥
 उंची कर वे बांगुली, आखै भिक्खु थाप ।
 ओ बकरो रजपूत ओ, कहो बांधै कुण पाप ॥ ३ ॥
 मरणहार डूवै महा, के डूवै मारणहार ।
 ओ कहै मारणहार सो, जासी नरक मभार ॥ ४ ॥
 भिक्खु कहै दुबता भणी, तारै सन्त तिघार ।
 समभावै रजपूत ने, शिव मार्ग ओकार ॥ ५ ॥
 जे रो जीवणुं, बांछै नहीं लिगार ।
 तिण ऊपर दृष्टान्त ते, सांभलजो सुखकार ॥ ६ ॥
 साहुकार रे दोय सुन, एक भवधार ।
 ऋग करड़ी जागां तणुं, माथे करे अपार ॥ ७ ॥

दूजो सुत जग दीपत्रो, यश संसार मन्हार ।

करड़ी जागां रो करज, ऊतारै तिण वार ॥ ८ ॥

कशो केहने बरजै पिता दियो पुत्र में देख ।

बरजै कर्ज करे तसु, के ऋण मेइत पेख ॥ ९ ॥

॥ हाल ३२ मी ॥

(समता रस बिरला पंदेशो)

कर्ज माथे सुत अधिक करंतो, बार बार पिता बर-
जंतो रे ॥ समभू नर बिरला ॥ करड़ी जागां रा माथे
कांय कोजे, प्रत्यक्ष दुख पामीजे रे ॥सम॥१॥ अधिक
माथा रो जै कर्ज उतारे, जनक तास नहिं बारे रे ।
। सम० । पिता समान साधुजी पिछाणो, बकरो रज-
पूत वे सुत माणो रे ॥ सम० ॥ २ ॥ कर्म रूप ऋण
माथे कुण करतो, आगला कर्म कुण अपहरतो रे
। सम० । कर्म ऋण रजपूत माथे करे छै, बकरा
संचित कर्म भोगवै छै रे ॥३॥ साधु रजपूत ने बर्जे
सुहाय, कर्म करज करे कांय रे । सम० । र्म
बंध्या घणा गोता ासी, परभव में दु पासी
रे ॥ ४ ॥ खर पणे तिण ने समभायो, तिण रो
तिरणो बंछयो मुनिरायो रे । सम० । बकरा जीवा-
वण नहीं दे उपदेश, रूड़ी गोल बुद्धिवन्त रें
रे ॥ ५ ॥ इमहिज कसाई सौ बकरा हणंतो, शुद्ध
उपदेश दे ताखो सन्तो रे । म० । कसाई गुण

धु रा करन्तो, ऋ तार ण महन्तो रे
 ॥६॥ बकरा हर्ष्या णिव बचिया विशेष, यारे
 दियो उपदेश रे । ० । ज्ञानादि णि ऊं ई घट
 आया, पिण बकरा तो मू न पाया रे ॥ ७ ॥ कहे
 साई दोनू कर जोड़, नौ बकरा रे गोर रे । ० ।
 हो तो नीलो चारो याने चराऊं, पाछै चो पाणी
 त्याने पाऊं रे ॥ ८ ॥ ण हो तो एवर में उछेरूं,
 हो तो अमरिया रेहू रे । । ण हो तो
 सूपं आपने णी, पाइ नो धोवण उन्हो पाणी रे
 ॥ ९ ॥ तुम सूको चारो निरजो व तेरो, एवर णां
 रो उछेरो रे । ० । धु कहे सूं खरा पालीजे,
 जावता सूं सारी कीजै रे ॥ सम० ॥ १० ॥ सूंसारी
 एम भलावण देवै, व रां री मू न वेवै रे । स ० ।
 उपदेश देवै जो बकरा बचावण तो बकरां री देत
 भ ण रे ॥ ११ ॥ मभयो कसाई सखर शिव
 ई, इणरो मुनि ने दलाली आई रे । ० ।
 तेहिज धर्म धु ने गेय । पिण बकरां रो धर्म न
 कोय रे ॥ १२ ॥ साई ज्ञानी रो ज्ञानी कहायो,
 पिण बकरा तो ज्ञान न गे रे । ० । साई
 मिथ्याती रो म ती हिये, शुद्ध तत्व बकरा न
 दहिये रे ॥ १३ ॥ हिं रो दयावान हुवो साई,

दिल रां रे दया न ई रे । तिरियो कसाई
वकरां नहीं तिरिया, दुर्गति नहिं डरिया रे ॥ १४ ॥

साई तिरियो ते धरम इण काज, तार महामुनि
राज रे । म० । तिरण तारण ई रां तपासो,
वारु हिया में त्रि सो रे ॥ १५ ॥ तस्कर नो दूजो
दृष्टन्त तेह, सांभलजो ससनेह रे । म० । किणही

मेश्री नी हाटे किण बार, उतरि णगार रे
सम० ॥ १६ ॥ कर रात्रि समै तिणवार, खोल्या

है य क्रिम रे । म० । तव मुनिवर कहै जागी
ने ताम, कुण हो ाया किण काम रे ॥ १७ ॥ कहै
तस्कर रहे तो चोर हाया, इहां चोरी करण ने

रे । सम० । सहस रुपयां री थेली मेली सेठ,
निडरं लेजावसां नेठ रे ॥ १८ ॥ तब अधु उपदेश
देवै तिण वार, कहा चोरी रा फल दुः कार रे ।

स० । गै नरक निगोद ना दुःख अधिकाया, भिन्न
भि भेद बताया रे ॥ १९ ॥ धन तो न्यातीला सह

मिल ासी, पर भत्र दुः तूं पासी रे । सम० । रुड़ो
उपदेश देई मुनिराया, त्याग चोरी कराया रे
॥ २० ॥ तस्कर कहै मुझ दुः । ने गो, विषम,

करम गो रे । सम० । बारु विविध णः करत
त्रिख्यात, प्रगट थयो प्रभात रे ॥ २१ ॥ इतले दूकान

तणो धणी आयो, ज्ञान नहीं घट माह्यो रे । सम० ।
 पेड़ी ने नमस्कार करि प्रसिद्धो, कांयक लटको साधु
 ने ही कीधो रे ॥ २२ ॥ तस्कर ने पूछा करी तिवार,
 कुण हो खोल्या किण द्वार रे । सम० । तस्कर
 बोल्या म्हे चोर छां ताम, अब तो त्यागे दीधी आम
 रे ॥ २३ ॥ हुण्डी वटाय ने रुपया हजार, थेली
 मांहे मेहली थें तिवार रे । सम० । १० म्हे सांभे
 देखता था सोय, आया लेवण अबलोय रे ॥ २४ ॥
 साधां उपदेश देई समझाया, चोरी ना लखण
 छोड़ाया रे । सम० । साधां रो भलो होयजो कारज
 साखा, तुरत डूवता ने ताखा रे ॥ २५ ॥ मेसरी
 सुण ने हय्यो मन माह्यो, पड़ियो साधां रे पायो रे
 । सम० । आप म्हारी हाट भलाई उतरिया, सकल
 मनोरथ सरिया रे ॥ २६ ॥ थेली म्हारो आप राखी
 थिर थापी, प्रत्यक्ष लेजावता चोर पापी रे । सम० ।
 द्विदंडां लेजावता रुपया हजार, निपट हुन्तो निराधार
 रे ॥ २७ ॥ चार पुत्र मुक्त चतुर विचारा, कम्मं वश
 रहिता कुवारा रे । सम० । सुत चारुई परणावसूं सारं,
 ओ आप तणो उपगार रे ॥ २८ ॥ इम कहै मेसरी
 वयण अथागो, ऋपजी तणो तो न रागो रे । सम० ।
 धन राखण उपदेश म धार, ते तो तस्कर तारणहार

रे ॥ २६ ॥ कसाई समभयां बकरा कुशले कहाजी,
 तस्कर समभयां धन रो धणी राजी रे । सम० । कसाई
 चोर तारण ऋषः कामी, धन बकरा राखण नहीं
 धामी रे ॥ ३० ॥ तीजो दृष्टन्त कहुं तन्त सार, एक
 पुरुष लंपट अधिकार रे । सम० । सो पुरुष परनारी
 नो सेवणहार, अति ही बंधाणी पीत अपार रे ॥ ३१ ॥
 ते लंपट आयो मुनि तणे पाय, साधां दियो सम-
 भाय रे । सम० पर स्त्री नो पाप सुणी भय पायो,
 अधिक वैरागज आयो रे ॥ ३२ ॥ ते त्याग जाव
 जीव कीधा ते ठाम, गावै मुनि ना गण ग्राम रे । म०
 ॥ १५ मोने डूब ने उबा गो, निकुच बिसन थो
 निवा गो रे ॥ ३३ ॥ गील दरियो एयो तिण
 नार, उपनो द्वेष अपार रे । म० । उणने हे म्हें
 धा गो इकतार, धुरही थी थां पर धार रे ॥ ३४ ॥
 काम औरां नहीं मु कोय, इसड़ी री व-
 लोय रे । ० । कहतो म्हारो क गो मानले तास,
 म्हां रों यहवा रे ॥ ३५ ॥ ह्यो न मानो तो
 कूवै पड़सूं मोत मोते मरसूं रे । म० । जब ते
 कहे मोने मिलिया जिहाज, प्रत्यक्ष भव-दधि पां
 रे ॥ ३६ ॥ त्यां परनारी नो पाप बतायो, म्हे त्याग
 कियां मन लायो रे । सम० । तिण म्हारे थासूं

मूल न तार, करे अनेक प्रकार रे ॥ ३७ ॥ इम सुण
 स्त्री कुवै पड़ी आय, तिण रो पाप साधू ने न थाय रे
 । सम० । समभयो कसाई वकरा वच्या सोय, तस्कर
 समभ्यां रह्यो धन जोय रे ॥ ३८ ॥ नर लंपट सम-
 भ्यां कूवै पड़ी नारो, चतुर हिया में विचारो रे ।
 सम० । तस्कर कसाई लंपट ने तारण, साधां उपदेश
 दियो सुधारण रे ॥ सम० ॥ ३९ ॥ ए तीनू तिरिया
 साधु तारणहार, त्यांरो धर्म साधां ने उदार रे । सम० ।
 मुक्ति मारग यां तीनां रे वधाया, घणा जामण मरण
 मिटाया रे ॥ ४० ॥ वकरा वच्या धणी रे धन रहियो,
 तिण रो धर्म साधु रे न कहियो रे । सम० । नार कुवै
 पड़ी तिण रो न पापो, अदल विचारो आपो रे ॥ ४१ ॥
 केई अज्ञानी कहै भूला भरमो, जीव धन रह्यो तिण
 रो है धर्मो रे । सम० । उणरी सरधा रे लेखे इम
 थापो, प्रत्यक्ष नार मुआरो है पापो रे ॥ ४२ ॥ नार
 मुआरो पाप दिल नाणै, जीव वचियां रो धर्म कांय
 जाणै रे । सम० । वले धन रद्यां रो धर्म कांय धारो,
 बुद्धिवन्त न्याय विचारो रे ॥ ४३ ॥ भिक्षु स्वाम इम
 भेद बताया, असल न्याय ओलखाया रे । सम० ।
 कसाई तस्कर लंपट केरो, भिक्षु दृष्टन्त दियो भलेरो
 रे ॥ ४४ ॥ ऐसा भिक्षु ऋष महा अवतारी, त्यां श्रद्धा

शोधी तन्त सारी रे । स० । ज्यां पुरुषां री जे प्रतीत
 करसी, त्यां री जीवतव जन्म सुधरसी रे ॥ ४५ ॥
 ये भिक्खु याद मोय, हर्ष हिये ति होय रे
 । ० । स्मरण प तणो नि धू, भिक्खु पारश
 चो म्हे धू रे ॥ ४६ ॥ सुर-गिर प्रत
 धीरा, मोने मिलि मोल हीरा रे । ० ।
 पंचम रा में क्रियो , री फैली है
 सु रे ॥ ४७ ॥ दोय री ढाले दृष्टन्त, वर्णन
 बहु बिरतन्त रे । ० । स्वाम भिक्खु ओ गो
 विशेष, तिण म्हे पिण आख्यो सु शेष रे ॥ ४८ ॥

दोहा

किण्हिक भिक्खु ने कह्यो, जीव बच्या ते ।
 दया कहीजे तेहने, जीवण दया पिछाण ॥ १ ॥
 भिक्खु कहै कीड़ी भणी, कीड़ी जाणै कोय ।
 कहीजे तेहने, के कीड़ी होय ॥ २ ॥
 तब ते कहै कीड़ी भणी, जे कोय कीड़ी ।
 ज्ञान रीजे तेहने, पिण कीड़ी नहि ॥ ३ ॥
 बलि भिक्खु कहै कीड़ी भणी, कीड़ी सरथे कोय ।
 समकित कहिजे तेहने, के कीड़ी समकित होय ॥ ४ ॥
 ते कहै कीड़ी भणी, कीड़ी बे ।
 ते सही, पिण री नहि समकित ॥ ५ ॥
 त्याग कीड़ी हणवा तणां, दया तेह दीपाय ।
 के कीड़ी रही तिका दया, भिक्खु पूछी वाय ॥ ६ ॥

तव ते कहै कीड़ी रही, तिका दया कहिवाय ।

खोटी सरधा थापवा, बोल्यो झूठ बणाय ॥ ७ ॥

मिक्खु कहै पघने करो, कीड़ी उड़ गई ताहि ।

तुम्ह लेखे दया उड़ गई, निरमल निरखो न्याय ॥ ८ ॥

जद उ कहै विचारने, कीड़ी हणधा रा त्याग बियाह ।

दया तेहिज दीसै खी, पिण कीड़ी रही न दयाह ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३३ मी ॥

(कर्म भुगत्यांज छुटिये पदेशी)

ब ता मिक्खु बोलिया, कीड़ी मारण रा पच-
 ण । रे । तेहिज दया साची कही, वारु सुणो
 इ ण रे, जोयजो रे बुद्धि मिक्खु तणी ॥१॥
 रूड़ी दया निज घट में रही, के कीड़ी पास कहाय
 । रे । तव ते कहे पोता कने, कीड़ी पास न
 ंय १० ॥२॥ पूज कहै घट में दया, कीड़ी पै दया
 नहिं कांय १० । किणरा जतन रणा कहो, साचो
 जाव सुहाय १० ॥ ३ ॥ करणा जतन दया तणा
 के कीड़ी रा य कराय ला० । उ कहै यल दया
 तणा, इम साच बोली आयो ठाय ॥४॥ त्रिविध त्याग
 हणवा तणा, दया संबर रूप देख ला० । त्याग
 बिना ही हणै नहीं, सबर निर्जरा संपेख ला० ॥ ५ ॥
 इमज छकाय हणै नहीं, दया तेहिज दीपाय ला० ।

जगत हए जीवां भणी, निज पोतारी दया न जाय
 ० ॥६॥ भारी बुद्धि भिक्खु तणी, खरी सिद्धन्त
 संभा ला० । ८ य मिलाया निरम १, भांज्या म
 भयाल ला० ॥ ७ ॥ किण्हिक इम पूछा री, महा
 मोटो मुनिराय ० । अति ही थाको उ ड में,
 च ए शक्ति न कांय ० ॥ ८ ॥ हजेई गाड़ो
 वितो, तिण गाडा ऊपर बैसाण ला० । गा मांहे
 ायो ही, तेहने ई थयो जाण ॥ ९ ॥ भिक्खु
 है डो नहीं, पूणिया वत पे १० । गधै
 चढ़ाय ायो गाम में, तिणमें स्युं थयो तु
 ले १० ॥ १० ॥ तव उ बोल्यो तड़कने, गधारी
 क्युं करो त १० । म है धु भणी, दोनुं
 कल्य देखात ला० ॥ ११ ॥ गाड़े बैसाणे ायो
 गाम में, थे धर्म तणी करो थाप १० । तो गधै
 बैसाण्यां ही धर्म है, पाप छै तो दोयां में ही प
 ला० ॥ १२ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि परी, निर चारित
 नीत ला० । सरधा शुद्ध गोधी सही, ब स्वा
 बडोत ० ॥ १३ ॥ णी- णगल पावियां, केई
 पाखण्डी कहै पुन्य ला० । केयक मिश्र कहै तिहां,
 ते दोनुंई सरधा जबून ला० ॥ १४ ॥ पुण्यवाला
 कहै पूजने, सुणो भी णजी बात ला० । महा जोटी

सरधा मिथ्र री, किहांई मेल न खात ला० ॥ १५ ॥
 भिक्खु स्वामी इम भणो, किणरी फूटी एक ला० ।
 किणरो दोय फूटी सही, वारु करलो विवेक ॥ १६ ॥
 मिथ्र कहै छे मानवी, त्यांरी फूटी एक ला० पुन
 परूपे पाधरो, दोन फूटी देख ॥ १७ ॥ जाव दियो
 इम जगत सं. अहो अहो बुद्धि अनूप ला० । अहो
 अहो विम्या आपरी, चित्त चरचा हद चूप ला०
 ॥ १८ ॥ तुम चिन्तामणि सुरतरु, पंचमें क्रियो प्रकाश
 ला० । आशा पूरण आप छो, वारु तुम विसवास
 ला० ॥ १९ ॥ तन्त ढाल तेतीसमी, भिक्खु गुण
 भण्डार । न्तर्यामी मांहरा, सुख सम्पति दातार
 ला० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

पचावने वयं पूजर्ता, शहर पांकड़ोली सार ।

सेइलोतारी पोल में, ऊतरिया जिण वार ॥ १ ॥

प्रत्यक्ष बारी पोलरा, नडी हुन्ती जिण वार ।

अय भिक्खु रहिनां थकां, एक दिवस अवधार ॥ २ ॥

बारी खोली बारणें, दिशा जायवा देख ।

निमरिया भिक्खु निशा, पूछे हेम सपेस ॥ ३ ॥

स्वामी बारी खोलण तणों, नहीं काई अटकाव ।

तय भिक्खु खोल्या तुरत, प्रत्यक्ष ते प्रस्ताव ॥ ४ ॥

पाली शहर तणों प्रत्यक्ष, नाम चौथ जी नहाल ।

दर्शन करवा आवियो, ए देखे इण काल ॥ ५ ॥

अति शकिलो यह छै, पिण इण वातरी ताम ।

शंका इणरे नां पड़ी, केम पड़ी तुम आम ॥ ६ ॥

हेम कहै रहारे हियै, काई शंका रो काम ।

पूछण रूप रहे पूछियो, नहिं शंका रो नाम ॥ ७ ॥

पूज कहै पूछे इसी, इणरो नहिं अटकाव ।

अ व हुवै जो यहनो, रहे खोलां किण न्याव ॥ ८ ॥

हेम सुणी जाण्यो हियै, कि दिडियो खोलाय ।

आहार लियां में दोष नहीं, कोल्यां दोष किम थाय ॥ ९ ॥

१ ३४ १

(सुणजो नरनाथ पदेशी) :

१ म भिक्खुरा न्त सुहाया । भव्य उ
जीवां मन या, एणजो चित्त शांति भिक्खुना
री दृष्टन्त ॥ १ ॥ ब धा बागरै ब , शुद्ध
भविजन रण सारु । एणजो सुखदाया मीना
दृष्टन्त सुहाया ॥ २ ॥ असल न्याय भिन्न २ ओल-
खाया, प्रभु पन्थ भिक्खु हद पाया ॥ ३ ॥ भेषधारी
सरधा हीन भयाला, दियो दृष्टन्त पूज दयाला ॥ ४ ॥
समकत हीण जे अधिक असार, यांरो असल नहीं
आचार ॥ ५ ॥ थोथा चणारी भखारी थी एक,
साबतो चणो मूल म पेख ॥ ६ ॥ ऊंदरा रड़बड़
कीधी आखी रात, एक कण पिण नायो हाथ ॥ ७ ॥
सांग धाख्यां मांहे समकत नांय, पड़े ऊंदर सम नर

पाय ॥ ८ ॥ कहो साध श्रावकं त्याने केम कहाय,
 ए तो दोनूं सरीखा-देखाय ॥ ९ ॥ समकित रहित
 दोनूंई तन्त, दियो स्वाम भिक्षु दृष्टन्त ॥ १० ॥
 क्रोयलां री तो राव अतिकाली, काला वासण में
 रांधी राली ॥ ११ ॥ मावस नी रात्रि आंधा
 जीमण वा १, परसण वालाई आंधा पयाला ॥ १२ ॥
 जीमतां बोलै खुंवारा करता, कालो कुंखो टालजो
 मतिवन्ता ॥ १३ ॥ कहै खबरदार होय जीमजो
 सोय, रखे आय जायला कालो कोय ॥ १४ ॥ मूढ़
 इतरो नहीं जाणै समेलो, कालोहिज कालो हुवो
 भेलों ॥ १५ ॥ ज्यूं रधा आचार रो नहीं ठिकाण,
 रगलो मिलियो सरीखो घाण ॥ १६ ॥ साध श्रावक
 पणारो अंश नहीं सारो, संवर लेखे दोयां रे अन्धारो
 ॥ १७ ॥ न्याय री वात नहीं शुद्ध नीत, बले बोलै
 वचन विपरीत ॥ १८ ॥ व पात्रा अधि राखे विशेष,
 धा कर्मादि दोष अनेक ॥ १९ ॥ बले कहै भीखण
 जो काढो इण रो तार, शुद्ध स्वाम बोल्या सुखकार
 ॥ २० ॥ तव पूज कहै काढे तार काई, थाने डांडा ही
 सूभे नाहीं ॥ २१ ॥ सबल धाकर्मी आदि न
 सूभै, कहो नान्हा दोष किम बूभे ॥ २२ ॥ दोषरी
 थाप थारे दिन रैणो, कठिण काम रधारो तो

हणो ॥ २३ ॥ यरे बंग घरटी मांडी बाई, पीसती
 जावै ज्युं उ गो ई ॥ २४ ॥ आखी रात्री पीस
 कणी में गो, एहवो दृष्टन्त भिक्खु उ गो
 ॥ २५ ॥ ज्युं दोष लगाय ने डंड न लेवै, कुमति दोष
 री थाप करेवै ॥ २६ ॥ क्यारे क्यारे क्युंही नहीं रहे
 कांई, देश सर्व दृष्टन्त दे ई ॥ २७ ॥ ऐसा भिक्खु
 ष ण उजागर, शरणा महा छि णर
 ॥ २८ ॥ उत्पत्ति बुद्धि विक्र अमामी, धुर जिन
 ण परमति मी ॥ २९ ॥ जिन आगन्या माहिं
 ध यो, आज्ञा रै अशुभ हु आयो ॥ ३० ॥
 स ण्याय मेह सूत्र देख, ह ह णि ख बुद्धि
 विशेष ॥ ३१ ॥ याद ण्यां मन स , रस
 णुपि तूं षिराय ॥ ३२ ॥ स्युं उ ण तुम्हने
 क सार, अजिणा जिण रसा उदारं ॥ ३३ ॥ उव-
 वाई में उप एह अनूप, स र थिवरां ने दीधी
 सद्रुप ॥ ३४ ॥ दि ज्युं काढी धम्म णदि,
 री उपजाई आय धिं ॥ ३५ ॥ बारु रण
 णरो विशालं, म्हारे तूहिज दीन दयाल ॥ ३६ ॥
 स्वाम भिक्खु गुण गावत समरियो, म्हारो हिवडो
 हरष भरियो । चौती णि ल भिक्खु चित्त
 चा , बारु पर नन्द वर या ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

कालवादी करलौ धनो, नहि समकित शुद्ध नीच ।

सिद्धां में पावे नही, आश्रै तास अजीव ॥ १ ॥

बखतरामजी नाम तसु, पुर माहें पहिचाण ।

कुकला कुबुद्धिज केलवी, विहार करि गया जाण ॥ २ ॥

इतलें मिकवु आविया, चल्चा करत पिछाण ।

मेघ भाट मुनि ने कहै, बगताजीरी बाण ॥ ३ ॥

कालवादी इसड़ी कहै, अति धन बात अतीव ।

भीक्षण जी गाथा मुझे, कहे एकलडो जीव ॥ ४ ॥

ते गाथा ।

एकलडो जीव खसी गोता, जद आडा नहि आर्य वैठा पोंता ।

नरक माहें आतां मारो, पायो मनुष जमारो मत हारो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

इण बिध भीखगजी कहै, गाथा में इक जीव ।

बलि नच तत्व में पांच कहै बिखई यात अतीव ॥ ५ ॥

जो पांच जीव नच तत्व में, तो कहिणो पांचलडो जीव ।

एकलडो ते किम कहै, इम पूछा तिण कीच ॥ ६ ॥

पूज कहै तस पूछणो, सिद्धां में सुखकार ।

कहो आत्मा कैतली, तव कालवादी कहै चार ॥ ७ ॥

फिर त्यानि इम पूछणो, ते आत्म जीव के नाहि ।

जब कहै आत्म जीव है, चार जीव तस न्याय ॥ ८ ॥

बौलडो जीव त्यादि कह्यो, मुक लडु अधिकी एक ।

सांभल ने तै समझियो, मेत्रो भाट विशेष ॥ ९ ॥

॥ ह्यलु ३५ मी ॥

(सजा दशरथ दीपता रे ए देशी)

भीखण्जी पधारियां रे, देश दुंदार दीपायो
 रे। अति घणा श्रावगी विया रे, चरचा करण
 चित्त चाहो रे ॥ भारी बुद्धि भिक्षु तणा रे ॥ १ ॥
 स्वाम भणी कहै श्रावगी रे, नम्र मुद्रा मुनि नागा
 रे। तार मात्र व न राखणो रे, राखै ते परीषह थी
 भागा रे ॥ तन्त दृष्टन्त भिक्षु तणा रे ॥ २ ॥ वल्ल राखो
 शीत टालवा रे, तो भागा शीत परीषह थी ताहो
 रे। त्रिण सू वल्ल नहिं राखणो रे, जइ पूज बतवै
 न्यायो रे ॥ ३ ॥ स्वाम कहै कितरा सही रे, परीषह
 भेद प्रकशो रे। ते कहै परीषह वावीस छै रे, बलि
 पूछै पूज विमासो रे ॥ ४ ॥ कहो प्रथम परीषहो कैसो
 रे, ते कहे चुध्या रो ताहो रे। पूज कहै थारा मुनि रे,
 आहार करै नाहो रे ॥ ५ ॥ श्रावगी कहै करे
 सहीरे, इकटंक आहार ते जागां रे। पूज कहै तुम्ह
 लेखै मुनि रे, प्रथम परीषह थी भागा रे ॥ ६ ॥ ते
 कहै चुध्या लागीं सही रे, आहार करै अणगारो रे।
 स्वाम कहे सो लागीं सही रे, वल्ल भे राखां विचारी
 रे ॥ ७ ॥ पूज बलि पूछा करो रे, प्रकट तुम्ह मुनि
 पहिछाणी रे। पाणी पीवै के पीवै नहीं रे, उत्तर

आपो सुजाणी रे ॥ ८ ॥ श्रावगी कहै पीत्रे सही रे,
 इकटंक उदक ते जागां रे । स्वाम कहे तुभ लेखे
 तिके रे, दूजा परीपह थी भागा रे ॥ ९ ॥ ते कहै
 तृपा लागं छतां रे, उदक पिये आणगारो रे । स्वाम
 कहै सी टालिया रे, वस्त्र ओढां म्हे विचारो रे ॥ १० ॥
 भूख लागं अन्न भोगवै रे, प्यास लागं पिये पाणी
 रे । इम निर्दोषण आचर्यां रे, न भागे परीपह थी
 नाणी रे ॥ ११ ॥ तिम शीत मंसादिक टालवा रे,
 मूर्च्छा रहित मुनिगयो रे । व मानोपेत वावरै रे,
 ते परीपह थी भागे क्किण न्यायो रे ॥ १२ ॥ इत्या-
 दिक उत्पात्त सं रे, उत्तर दीधा आमामो रे । स्वाम
 गुणा रा सागरु रे ऊंडी बुद्धि अभिरामो रे ॥ १३ ॥
 एक दिवस बहु अविया रे, श्रावगी स्वामी पासो
 रे, कहै वस्त्र न राखो तो तुम तणी रे, वारु करणी
 विमासो रे, ॥ १४ ॥ स्वाम कहै श्वेताम्बर शास्त्र थी
 रे, घर छोड़ थया आणगारो रे । तिण माहें तीन
 पछेवड़ी रे, चोल पटादि कथा सुविचारो रे ॥ १५ ॥
 तिण कारण राखां तिके रे, आसता तुभ शा नी
 आयां रे । नम होय जासां वस्त्र न राखने रे, प्रतीत
 दिगम्बर नी पायां रे ॥ १६ ॥ जाव दिया अति जुगत
 सं रे, बुद्धिवन्त हर्षे विशेषो रे । न्याय नीत यरि

निरमज्जी रे, पच रहित संपेखो रे, ॥ १७ ॥ वाह
वाह भिक्खु मुनिवरु रे, अन्तर्ध्यामी आपो रे । दीपक
तू इण काल में रे, जपुं तुमारो जापो रे ॥ १८ ॥
पँतीसमी ढाल परवरी रे, चरचा दिगम्बर नी छाणी
रे । भिक्खु भजन सूं भय मिटै रे, जय जश सुख
हद जाणी रे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

दया धर्म अति दीपतो, श्री जिन थाण सहीत ।

मिखु स्वाम मली परे, पवर घसो अति पीत ॥ १ ॥

केई हिंस्या धर्मी कहै, दया दया पुकारो कांय ।

दया रांड लोटे पड़ी, रड़ी रे मांयि ॥ २ ॥

मिखु अर भाखै मली, दया मात दीपाय ।

उतराधयन बीबीस में, कहि आठ न मांय ॥ ३ ॥

किण सेठ आठ पुरो कियो, ली रही सोय ।

पूत है ते सही, यत्न करे ते जोय ॥ ४ ॥

कपूत है ते ने, वदै विकराल ।

रंडकार नी गाल दे, बीले आप पंपाल ॥ ५ ॥

धणी दया ना दीपता, महावीर महाराज ।

ते तो मोक्ष सिधाविया, कीधा आसम काज ॥ ६ ॥

श्रावक सार्धा सपूत ते, दया इम जाण ।

यत्न करे अति जुगत सूं, विरई न वदै बाण ॥ ७ ॥

प्रणट्या थां जिंसा, बीलावो कहि रांड ।

दया मात ने गाल दे, ते भव २ होवै भांड ॥ ८ ॥

जिन मत एम जमावता, ण्ड मत परिहार ।

स्वाम रवि जिहां संबसा, तिमिर हरण इकतार ॥ ९ ॥

॥ हस्त ३६ स्त्री ॥

(जोगाहों कपट करै है पदार्थी)

ऋणहिक भिक्षुने कद्यो रे, श्रै जात्रो जिण
 गांमरे मायि । धसका पड़े लोकां तणे, तिण रो काई
 कारण कहिवाय ॥ भिक्षु भवतारक भारी रे, आप
 प्रगथ्या अवतारी रे । उत्पत्तिया बुद्धि अधिकारी रे,
 दृष्टन्त दिया सुविचारी रे ॥ १ ॥ स्वाम कहे तुम्हे
 सांभलो रे, गरडु आवि गाम । डाकणियां ने काढण
 भणी, जद कहो डरै कुण ताम ॥ २ ॥ प्रभाते नीला
 कांठा मभे रे, बालस्थां डाकणियां ने बोलाय । तो
 धसका पड़े डाकणियां तणे, तथा न्यातीलां रे पड़े
 ताहि ॥ ३ ॥ दूजा तो लोक राजी हुवै रे, त्यारे तो
 चिन्त न काय । जाणै उपद्रव्य शहर तणो मिटै
 तिण सं और तो हयित थाय ॥ ४ ॥ ज्युं गाम में
 साध आयां छतां रे, भेषधास्यां रे धसका पड़न्त ।
 के त्यांरा थावकां रे धसका पड़े, भारी कर्मा तो
 इम भिड़कन्त ॥ ५ ॥ वारु सरधा आचार वताय ने
 रे, देसी म्हांनें ओलखाय । त्यांरे धसका पड़े तिण
 कारण, हलुकर्मां तो मन हरपाय ॥ ६ ॥ उत्तम मन
 इम चिन्तवै रे, सुणसां साधारा वज्राण । दान सुपात्रे
 देई करी, करस्यां आतम तणा किल्याण ॥ ७ ॥

गुरां रा पक्षपाती भणी रे सन्त नि न सुहाय ।
 दृष्टन्त स्वाम दियो इ ॥ १० ॥ ते तो सांभ जो सु
 दाय ॥ ८ ॥ जुरवालो गयो जीमवा रे, जीमखवार
 में जाण । पकवान तो कड़वा घणा, बद बद कहै
 लोकां ने बाण ॥ ९ ॥ लोक कहै लागै घणा रे, प्रगट
 मिठा पकवान । तुम्ह शरीर में ताव है, जिण
 कड़वा लागै छै जान ॥ १० ॥ ज्युं मिथ्यात रोग
 जाडो हुवै रे, सन्त ता न सुहाय । हलुकर्मी हिये
 हर्षता, चित में मुनि दशण चाहि ॥ ११ ॥ भूल
 मरता रोटी वासने रे, सांग साधू नो धारन्त । त्याने
 कहै चारित चोखो पालजो, जद स्वाम दियो दृष्टन्त
 ॥ १२ ॥ बलवन्त बाले बांधने रे, तिणने कहै तिर
 नाम । ती माता तेजरा तोड़जे, ते कांई तोड़े तेजरा
 ताम ॥ १३ ॥ ज्युं भेष पहिरे रोटी कारणे रे, तेहने
 कहो चोखो चारित्र पाल । ते कठिन चारित्र पाले
 क्रिण विधे, दुकर कह्यो है दीन दयाल ॥ १४ ॥ चो ।
 तोटा गुरु ऊपरै रे, दियो ना नो दृष्टन्त । काठकी
 नाव साजी कही, एक फूटी ना छिद्रान्त ॥ १५ ॥
 तीजी नाव पत्थर तणी रे, उपनय हिये अर्वाधार ।
 शुद्ध सन्त-साजी नाव सारिखा, तिके आप तिरे, पर
 तार ॥ १६ ॥ सांगधारी फूटी नावा सारिखा रे, आप

दुब्रे औरां डबोय । पत्थर नावा जि । । पाखंडी,
 जे तीन सौ ते ठ जोय ॥१७॥ उत्तम ता न आदरै
 रे, धाख्या हुवै तो छोड़णां सुलभ । गंधारी फूटी
 नावा सारिखां, त्यांने छोड़णा घणां दु'भ ॥ १८ ॥
 इम भिक्षु ओलखाविया रे, पा गिडयां ने पिछाण ।
 सूं बुद्धि कहिये र मनी बार, किहां ग रूं वखाण
 ॥१९॥ ऊंडी तुभ ।लोचना रे, तीरथ बच्छ ताम ।
 शासण नायक र्शा ने, करूं रम्बार सलाम ॥२०॥
 तन्त ढाल षट ती मी रे, दाख्या स्वाम ह न्त ।
 भिक्षु भजन थी भय हि टै, रुजय ज ।
 उपजन्त ॥ २१ ॥

दोहा ॥

किणहिक भिक्षु ने कह्यो, टोला वाला ताहि ।

शीत उष्ण भक्ति कष्ट सहै, कठण लोच कराय ॥ १ ॥

तय छठ अठमादिक तपे, सखरी करणी सोय ।

यूंहो जाती यां तणी, पहना फल अवलोय ॥ २ ॥

स्वाम कहै इक सेठ रे, पड़यो देवालो पेल ।

तुरत लाख रुपयां तणो, बिगड़ी बात विशेष ॥ ३ ॥

एक पइसा तणो, आपयो तैल तिवार ।

पइसो तसु दीधो परहो, तो पइसा रो साहुकार ॥४॥

रुपया रा गहुं भाणने, रुपयो पाछो दीध ।

तो साहुकार रुपया तणो, प्रत्यक्ष ते प्रसिद्ध ॥ ५ ॥

इम पहला रुपया तणो, साहुकार अवधार ।

पिण देवालो लाख नो, तेहनो नहीं साहुकार ॥ ६ ॥

ज्युं पंच महाव्रत पचखने, आघा कर्मी आदि ।

थाप निरन्तर दोपनी, मेट दोधी मर्ग्यादि ॥ ७ ॥

ओ देवालो अति घग्ने, लोच तपादिक कष्ट ।

तेह थी किण विघ्न उतरै साध पणारो मिष्ट ॥ ८ ॥

मास खमगादिक पचखने, शुद्ध पाल्यां तसु सहकार ।

पिण महाव्रत भाग्यां तेहनो, साहुकार मत्र धार ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३७ की ॥

(विच्छिन्ना नी पदेशी)

किणहिक स्वाम भणी कह्यो । सांगधा िं रे
साधू रो सांग रे, उन्हो याणी धोवण ऐ पिण आचरै ॥

मान मूकी रोटी वै मांग रे, तुम्हें सुणज्यो दृष्टन्त
स्वामो तणा ॥ १ ॥ वर्षा वर्षे लोच करावता, शोत

तापादि सहे साचात रे । विहार नव कलपी विचरता,
तो ए क्युं नहीं साध कहात रे ॥ २ ॥ स्वाम कहै

तुम्हें सांभलो, थिर चारित्र इस किम थाय रे । जेहवी
बणी बणाई ब्राह्मणी, तिणरा साथी ऐ पिण कहि-

य रे ॥ ३ ॥ कुण बणी बणाई ब्राह्मणी, तब स्वाम
कहे सुविशेष रे । मेरां रो इक गाम घाटा मफे, उठे

उत्तम घर नहीं एक रे ॥ ४ ॥ महाजन आवै सो
दुख पावै घणा, जब कह्यो मेरा ने जाम रे । अठै

उत्तम घर नहीं एक ही, तिण सूं दुख पावां छां ताम
 रे ॥ ५ ॥ एी लागत देवांछां थां भणी, उत्तम
 घर विण इहां अवधार रे। एी रोटी तणी अब-
 खाई पड़े, शुद्ध राखो उत्तम घर ए रे ॥ ६ ॥ जद
 मेरां शहर माहें जाय ने, महाजना ने क गो मन
 ल्याय रे। उत्तम बसो म्हांरा गाम आयने, तिणरो
 ऊपर राखसां ताय रे ॥ ७ ॥ इम कद्यो पिण कोई
 ायो नहीं, एक ढेठां रो गुरु मुञ्चो आम रे। तिण
 रो स्त्री गुरुडो तदा, तिणने मेरां एी तिण टाम
 रे ॥ ८ ॥ बणई मेरां तिण ने ब्राह्मणी, ब्राह्मणी
 जिसा वस्त्र पहराय रे। जागां कराय धवल राखो
 जिहां, तुलसी रो थणो रोप्यो ताहि रे ॥ ९ ॥ दोय
 स्त्रयां स गेहूं आणे दिया, अधेली रा मूंग दिया
 आण रे। एक स्त्रया तणो घृत आपियो, बट्टे मेरा
 तेहने इम बाण रे ॥ १० ॥ पइसा लेई महाजन रा
 दासां थका, आवें ज्याने रोटी कर आप रे। बण
 पूछयां वतावजे ब्राह्मणी, थिर जात फलाणी थाप
 रे ॥ ११ ॥ जात आता महाजन आवें जिके, पूछै
 घर उत्तम पहिचाण रे। ब्राह्मणी रो घर मेरा वता-
 १, इम तल कितोयक जाण रे ॥ १२ ॥ इतरे
 चार व्योपारी ाविया, एा कोसां रा थाका

ते गाम रे । आय पूछ्यो मेरा ने इण तरह, उत्तम
घर बताओ आम रे ॥ १३ ॥ तब मेरा कहै जावो
तुम्हे, तिण ब्राह्मणी रे घर तास रे । जद आया
व्यापारी चारुं जणा, प्रगट वचन कहे तिण पास रे
॥ १४ ॥ बाई रोटियां कर रुड़ी रीत सू, भट घाल
थाका आया जाण रे । जद इण गोहां री रोठ्यां जाड़ी
करी, सुरहो घृत घाल्यो सुनिहाण रे ॥ १५ ॥ कीधी
दाख तिणमें घाली काचर्यां, जीमवा लाग चारुंई
जाण रे । करडो भूख रोठ्यां पिण करकड़ी, अणिक
जीमता करै बखाण रे ॥ १६ ॥ रांधण देखी फखारणा
गामरी, अमकड़िया नगर नी अवखोय रे । रांधणा
देखो बड़ा बड़ा शहर नी, इसड़ी चतुराई नहिं देखी
कोय रे ॥ १७ ॥ कहै देखो रे दाख किसी करी, अति
चोखी है स्वाद अत्यन्त रे । माहें काचरियां किसी
स्वाद है, घणी करै प्रशंसा जीमन्त रे ॥ १८ ॥ जद
आ बोलो बीरां बात सांभलो तीखण मिली हुन्ती
ताम रे । खबर पड़ती काचरियां रे स्वाद री, पिण
ते मिली नहिं अभिराम रे ॥ १९ ॥ जद यां पूछ्यो
तीखण कहै केहने, तब आ कहै तीखण छूरी ताम
रे । काचरियां बनावा कारणे, छूरी मिली नहीं
अभिराम रे ॥ २० ॥ तब यां पूछ्यो छूरी तो ने ना

मिला, तो किण्ण सूं वनारी तेह रे । आं कहे दातां
 सूं वनार २ ने, इण्ण दाल माहें न्हाखी एह रे ॥ २१ ॥
 तव ये बोल्या तडकने हे पापणी म्हाने भिष्ट किया
 ते जिमाय रे । इम कहिने लाग्गा थाली पटकवा, तव
 आं बोली उतावलो ता रे ॥ २२ ॥ वीरां थाली
 भागजो मतो, अमकडिया डूंमरी आणी मांग रे ।
 जद ए बोल्या हे पापणी ! तूं कुण जातरी कुण
 तुभ सांग रे ॥ २३ ॥ जद आं बोली वीरां वात
 सांभलो, बणी वणाई ब्राह्मणी छूं ताहि रे । असल
 जातरो तो गुरुड़ी अछूं, मेरा ब्राह्मणी दीधी वणाय
 रे ॥ २४ ॥ धुर सूं वात सारी कही मांडने, सांभल
 ने च्याखूंई पछतात रे । भिवखु कहै साथी ब्राह्मणी
 तणा, सांगधारी सर्व ज्ञात रे ॥ २५ ॥ उन्हो पाणी
 धोवण नित्य आचरै, पिण्ण समकित चारित्र नहीं
 काय रे । तिण्ण सूं बणी वणाई ब्राह्मणी, तिण्ण रा
 १ थी कहा इण्ण न्याय रे ॥ २६ ॥ दृष्टन्त स्वाम इसो
 दियो, शुद्ध हेतु मिलाया सार रे । भारी कर्मा सुण
 द्वेव माहें भरै, चित्त पामै उत्तम चिमतार रे ॥ २७ ॥
 स्वाम सावद्य निर्वद्य शोधिया, व्रत अव्रत जूआ
 वताय रे । आज्ञा अण आगन्या ओलखाय ने, दीधी
 दान दया दीपाय रे ॥ २८ ॥ भिवखु स्वाम प्रगटिया

भरत में, आप कीधो अधिक उद्योत रे । ऐसो उप-
गारी कुण इण काल में, जिन ज्युं घण घट घालो
जोत रे ॥ २६ ॥ इसा उपगारी गुण आगला, त्यांरा
दृष्टन्त सांभल तन्त रे हलुकर्मी हरष हिवड़े धरै,
बहुलकर्मी रो मुंह विगडन्त रे ॥ ३० ॥ तन्त ढाल
कही सात तीसमी, स्वामी भेल्या है न्याय साक्षात
रे । रखे-शंका कंखा ध्रम राखने, मत पडिवजजो
मिथ्यात रे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक मिक्खु ने कह्यो, पाखंडो पहिचाण ।

सूत्र सार जिन अच सरस, वाचे सखर वखाण ॥ १ ॥

स्वाम कहै तुम्है सांभलो, वाचे सूत्र वखाण ।

जोव खवायां पुण्य मिश्र, छेहड़े इम करै छाण ॥ २ ॥

जिम वायां राती जगे, संसार लेखे जान ।

गीत भला भला गावती, तीखे मन कर तान ॥ ३ ॥

गीतां छेहड़े गावती, मोसो मारु मन्द ।

ज्युं प्रथम सूत्र प्रगमायने, छेहड़े-सावद्य फन्द ॥ ४ ॥

दीपावे सावद्य दया, देखे सावद्य दान ।

मोसो मारुनीं परे, सर्व विगाड़े तान ॥ ५ ॥

किणहिक मिक्खु ने कह्यो, बुद्धिहीन इक बाल ।

भाठा सूं कीड्यां भणी, कचरतो तिणकाल ॥ ६ ॥

उणरो पथर ले उरहो, खोसी करी कथाय ।

कहो तिणने का सूं थयो, जद स्वाम कहै सुण वाय ॥ ६ ॥

तसु पासा थी खोसले, तसु कर में स्युं आत ।

तव ओ बोल्यो उण तणे, माढो आयो हाथ ॥ ८ ॥

भाखै पूज बिचारलो धर्म जिन आजा मांहि ।

जबरी को जिन ना कह्यो, इम सर्व वस्तु गिणाय ॥९॥

दा ३४ की ॥

(सत्य कोई मत० एदेशी)

वि एहि भिखु ने कह्यो । टोला वा । ता गो
रे, ।ध न सरधो यां भणी ॥ तो साध हो
किण न्यायो रे, तंत दृष्टन्त भिखु तणा ॥ १ ॥ ए

।ध .म डिया टो । तणा, फलाणा टोलारा
।धो रे । इम साध कही बैण उचस्यां, बच त्यके
मृषावादो रे ॥ २ ॥ ।म कहे किणहि शहर में,
किरियावर किण रे थायो रे । नेहता फेरै नगर में,
वदै इसी पर वायो रे ॥ सकडिया रे नेहतो अछै,
खेमा साहरा घर रो जाण रे । अमकडियां रे नेहतो
अछै, ेमा ।हरा घर रो पिछाण रे ॥ ४ ॥ देवालो
त्यां ।हे दियो, तो पिण वाजै ।हरे । खेमो देवालयो
वाजै नहीं, द्रव्य निक्षेपो दे ।य रे ॥ ५ ॥ ज्युं
सजम नहीं पाले जिके, नाम धरावे साधो रे । द्रव्य
निक्षेपे धू कह्यां, मू न मृषावादो रे ॥ ६ ॥
लकड़ी रा घोड़ा भणी, अश्व कह्यां दोष नाह्यो रे ।
नाम ज्ञाव थापना, कहिण मात्र हिवायो रे ॥

७॥ किणहि भिखु ने क गो, टोला वाला . ताह्यो
 रे । कहो ध यामें कवण छै, असाधु ण यां
 मांह्यो रे ॥८॥ स्वाम कहै इक शहर में, आ
 म पूछै वायो रे । नागा कितरा इण नगर में,
 कितरा ढकिया अहिवायो रे ॥ ९ ॥ वैद विचवण
 इम वदै, गौषध तुम्ह आंख्यां माह्यो रे घा
 सूक्तो तो भणी, हूं कर देसूं ताह्यो रे ॥ १० ॥
 नागा ढकिया तूं निरखले, वैद बोलयो इम वायो
 रे । स्वाम कहै साध असाधरी, ओलखणा देस्यां
 वतायो रे ॥ ११ ॥ पछै साध असाध तूं परखले,
 कहो नाम लेई कोयो रे । कजियो पहिली तिण सूं
 करै, जिणसूं कहणो अवसर जोयोरे ॥ १२ ॥ किण
 हिक बलि इम पूछियो, कुण यामें साध असाधोरे ।
 स्वाम कहै तुम्हें सांभलो, बिरुओ तज विषवादो
 रे ॥ १३ ॥ संजम लेई पालै सही, ते साधु
 दायो रे । महाव्रत आदरै मूकदे, असाधु ते असु-
 हायो रे ॥ १४ ॥ दृष्टन्त भिखु दियो इसो, किण-
 हिक पूछयो किवारो रे । साहुकार कुण शहर में,
 कुण है देवालो किवारो रे ॥ १५ ॥ लेई पाछो देवै
 लोक में, साहुकार कहै सोयो रे । देणो न देवै
 देवा यो, भगड़ा उलटा मांडै जोयो रे ॥ १६ ॥

ज्युं संयम देई पाल्यां साध है, दोष थाप्यां नहीं
 साधो रे । अथवा उंड न आडरै, वरताने देवै
 विराधो रे ॥ १७ ॥ भिक्षु इसा न्याय भाखिया,
 स्वाम विना कुण शोधै रे पूज गुणानो पिजरो,
 पूज भविक प्रतिशोधै रे ॥ १८ ॥ भिक्षु है दीपक
 भरत मे, भिक्षु भलो भव तारण रे । साहेव भिक्षु
 साचलो, भिक्षु है विघ्न विडारण रे ॥ १९ ॥ याद
 आयां हियो उलसे, अन्तर्यामी आपो रे । स्मरण
 सूं सुख संपजें, यिर चित्त म्हे करी थापो रे ॥ २० ॥
 स्वाम जिसो इण भरत में, दीन जयाल न दूजो रे ।
 भविक जीवां तुम्हे भाव सूं, पवर भिक्षु गुण पूजो
 रे ॥ २१ ॥ तन मन सेती तुम्ह भणी, हृदय उलख
 हरप्यो रे । आशा पूरण आप हो, म्हे तो प्रत्यक्ष
 भिक्षु परख्यो रे ॥ २२ ॥ आखी ढाल अइतीसमी,
 समखो है भिक्षु सनूरो रे । जय जश सुख सम्पति
 मिले, दालिद्र दुःख गथा दूरो रे ॥ २३ ॥

॥ ॐ ॥

उपयोग री स्वामी ऊगरे, दियो स्वाम दृष्टन्त ।

निरमल नीका नीत सूं, शुद्ध जाणां तसु तन्त ॥ १ ॥

कुणको दीर्घां गुरु कहो ए कुणको शिष्य जोय ।

ऊपर-पग दीजो मति, तहन कियो शिष्य सोय ॥ २ ॥

घोड़ी बार थी शिष्य तिको, फिरतो फिरतो आय ।

पग दीधो तिण ऊपरै, तत्र गुरु बोल्या ताहि ॥ ३ ॥

तुम मँ बरज्यो धो तदा, मत दीजो पग साक्षात ।

शिष्य कहै उपयोग शुद्ध, चूको स्वामी नाथ ॥ ४ ॥

बीजी बेठां शिष्य बलि, फिरतां २ फेर ।

पग दीधो कण ऊपरै, गुरु निबेध्यो घेर ॥ ५ ॥

आगे तुम बरज्यो हुतो, कहै शिष्य कर जोड़ ।

महागज उपयोग मुक्त, चूक गयो इण ठोड़ ॥ ६ ॥

गुरु कहै अबके चूकियो, तो काल भिगौरा त्याग ।

फिरतां फिरतां शिष्य फिरी, बलि चूक्यो ते जाग ॥ ७ ॥

इम बार बार खामी पड़ी, ते विगय टालण थी ताहि ।

बलि कण ऊपर पग देण थी, राजी नहिं मन माहि ॥ ८ ॥

कर्म योग उपयोग में, खामी तो अधिकाय ।

पिण नीत शुद्ध अब थाप नहिं साध पणो ते न्याय ॥ ९ ॥

॥ टा ३६ मी ॥

(जाणं ठे राय व् बात ए देशी)

१ म भिक्षु ने सोय ए, किण ही पूछा करी
इम जोय ए । साध साधवियां रे मांहि ए ॥ अब-
गुण दीसै अधिकाय ए ॥ १ ॥ ज्यांरे नहीं इर्यारो
ठिका ए, भाषा सुमति में पिण दिसै हाण ए ।
केई करै चालता बात ए, शून्य उपयोग री साक्षात
ए ॥ २ ॥ सुमति एषणादिक में सोय ए, अधिक फेर
दि वलोय ए । तीन गुप्त कही तन्तसार ए, ति
हि दिसै है फरक अपार ए ॥ ३ ॥ कैकारी प्रकृति

करड़ी धार ए, छेड़वियां सूं करै फंकार ए । मान
 माया लोभ में मंत ए, किम कहिये तिणाने सन्त
 ए ॥ ४ ॥ करड़ी प्रकृति देख्यां साध ए, कोई बोल्या
 वचन विराध ए । यामें साधपखारो न अंश ए, अत्र-
 कृणारी करां केम प्रशंस ए ॥ ५ ॥ वर बोल्या है भिक्वु
 वाय ए, सुण दृष्टान्त एक शोभाय ए । एक साहु-
 कार अवधार ए, कराई हवेली सुखकार ए ॥ ६ ॥
 रुपया हजारों लगाविया ए, जाली भरोखा अधिक
 भुकाविया । ओपें मालिया महिल अनेक ए, शुद्ध
 शोभता सखर संपेख ए ॥ ७ ॥ चारु रूप विविध
 चित्राम ए, कोरणियां अभिराम ए । सुखदाई
 रूप सुविहाण ए, पुतलियां मनहरणी पिछाण ए
 ॥ ८ ॥ आवैं लोक अनेक ए, देख देखने हरयै विशेष
 ए । नरनरी हजारों आवता ए । घणा देख देख
 गुण गावता ए ॥ ९ ॥ महिल मालिया महा श्रीकार
 ए, तिकै जु जूआ देखै तिवार ए । कहै देखो कोर-
 णियां ताम ए, चतुर रूप रच्या चित्राम ए १० ॥
 साहुकारादिक सहु आय ए, एतो सगलाई रह्या
 सराय ए । जठे भंगी देखण आयो जान ए, धुन
 सेतखाना सूं ध्यान ए ॥ ११ ॥ महिल मालिया
 साहमी न दिष्ट ए, जाली भरोखा सूं नहीं दृष्ट ए ।

तिणरे सेतखानां सूं काम ए, तिण सूं तेहिज छै
परिणाम ए, ॥ १२ ॥ कहै सेतखानो तो आछो नहीं
ए, सेठ सुणतां अवगुण बोले सही ए। जब सेठ
कहै सुण वाय ए, ताड़तखानो किण सते य
ए ॥ १३ ॥ सेतखानो आछो किम थाय ए, महा नीच
वस्तु इण माहिए। निन्दनीक वस्तु ए निदान ए,
तू पिण नीच तिण सूं थारो ध्यान ए ॥ १४ ॥
भरोखा जाल्यां अदि दे जाण ए प्रगट आछा है
अधिक प्रधान ए। स्वाम कहै सुविचार ए, कहुं उप-
नय ए वधार ए ॥ १५ ॥ संजम तप तो हवेली
मान ए, सेतखाना ज्युं अवगुण जान ए। साहु-
कारादिक अवगुण देखणहार ए, ते सम उत्तम
जीव उदार ए ॥ १६ ॥ त्यारी दिष्ट जम ऊपर
म ए, पिण अवगुण सूं नहीं ए। एमाही
उत्तम गुणवंत ए, तेतो संयम तप जाणै ए ॥
१७ ॥ संजम गुण जाणै शुद्ध मान ए, पिण अवगुण
सूं नहीं ध्यान ए। छिद्रपेही भंगी सम छार ए,
संजमने नहीं जाणै लिगार ए ॥ १८ ॥ छट्टो गुण-
ठाणो इण विध जाय ए, त्यांने ते पिण बर न
कांय ए। छट्टो गुणठाणो इम ठहराय ए, ते पिण
जाण पणो नहीं ताहि ए ॥ १९ ॥ वगुण ने करै

अगवाण ए, महानिन्दक मातंग माणः ए । कहै
 अवगुण आछा नाहिं ए, तिण ने कहियो इणरो
 कहिसी कांय ए, ॥ २० ॥ अवगुण तो कदेही आछा
 न होय ए, येतो प्रत्यक्ष ही अवलोय ए । ये तो
 निंदवा जोग निषेध ए, इण में तो काई काळ्यो
 भेद ए ॥ २१ ॥ पिण संजम गुण इण माहिं ए,
 तिण सं वंदवा जोग कहाय ए । तू मुंहड़े आणै
 अवगुण वार वार ए, थारे कुमति हिया में अपार
 ए ॥ २२ ॥ दीधो हवेलीरो दृष्टान्त ए, भिक्षु भविक
 नी भांजण भ्रान्त ए । स्वामी सूत्र न्याय श्रीकार ए,
 त्यारा जाण भिक्षु तंतसार ए ॥ २३ ॥ ओतो दियो
 भिक्षु दृष्टन्त ए, त्यांरा हेतुने पुष्ट करंत ए । सूत्र
 साख कहै जय सार ए, तिणरो सांभलजो विस्तार
 ए ॥ २४ ॥ कह्यो सूत्र भगवती मांयि ए, शतक
 पचीस में सुखदाय ए । उत्तर गुण पड़िसेवी पिछाण
 ए, बुकस नियंठो श्री जिन वाण ए ॥ २५ ॥ जगन
 दोय सौ कोड़ ते जान ए, नहीं विरह कदे नहिं हानि
 ए । पंचम पद छट्टे गुणठाण ए, चारित्रना गुण
 लेखै पिछाण ए ॥ २६ ॥ मूल गुण ने उत्तर गुण
 मांयि ए, दोष लगावै ते दुखदाय ए । पड़िसेवण
 कुशील पिछाण ए, जगन दोय सौ कोड़ ते जाण

ए ॥ २७ ॥ नहीं विरह यह थी ओछा नाहिं ए, ये
 पिण छुट्टे गुण ठाणै कहिवाय ए । यामे चारित
 गुण श्रीकार ए, तिण सू बंदवा योग विचार ए ॥
 २८ ॥ पुत्राग नेयंटो पिछाण ए, लब्धि फोड्यां कहो
 जिन जाण ए । धिति अन्तर मुहूर्त्त थाय ए, लब्धि
 नी धिति तो अधिकाय ए ॥ २९ ॥ विरह उर ठ
 संखेज वास ए, पछै तो वश्य प्रगटे विमास ए,
 यामे चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सू बंदवा योग
 विचार ए ॥ ३० ॥ कषाय शील नियंठा मांघि ए,
 पांच शरीर छः लेश्या पाय ए । षट समुद्घात कहि-
 वाय ए, इण रो पेटो भारी है अथाय ए ॥ ३१ ॥
 बहु फोड़वै लब्धि प्रकाश ए, मोह कर्म उदय थीं
 विमास ए । पिण चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सू
 बंदवा योग विचार ए ॥ ३२ ॥ पुलाक बुकस पड़ि-
 सेत्रेणा पेख ए, दिल सू कषाय कुशील देख ए ।
 या में दोष तणो डंड जोय ए, बले दोषरी थाप न
 कोय ए ॥ ३३ ॥ तिण कारण चारित्र चीज ए, दोष
 थाप्यां जावै गुण छीज ए । जितरो डंड तितरो चर्ण
 जाय ए, दोष थाप्यां सर्व विललाय ए ॥ ३४ ॥ हीण
 वृद्धि पचवा में होय ए, प्रगट शतक पचीसमों जोय
 ए । फेर अनन्तगुणो पजवा मांहिं ए, तो पिण

चारित्र्य ए सुखदाय ए ॥ ३५ दशमें ध्यान ज्ञाता
 में दयाल ए, कल्या चन्द दृष्टन्त कृपाल ए । एकम
 आदि पूनम चन्द पख ए, बलि विद पख चन्द
 विशेष ए ॥ ३६ ॥ ते म सन्त समृद्धि ए, यतिधर्म
 दशमें हीन वृद्धि ए । चान्ति आदि ब्रह्मचर्य मांयि
 ए, एकम थी पूनम ताई गिणाय ए ॥ ३७ ॥ इम
 विद पख चन्द समान ए, जमादिक गुण में फेर
 जान ए । किहां एकम किहां पूनम चन्द ए, दश
 धर्म एम वृद्धि मंद ए ॥ ३८ ॥ चौथे ठाणै चौभंगी
 उपन्न ए, शील सम्पन्न चरित्र सम्पन्न ए । दूजो शील
 र म्य न देख ए, चारित सहित कह्यो विशेष ए ॥ ३९ ॥
 तीजो शील सम्पन्न स्वभाव ए, बिले* चारित्र्य
 सम्पन्न ए ए † । चौथो शील चारित नहीं ताम
 ए, शील शीतल स्वभाव नो नाम ए ॥ ४० ॥ शीत
 प्रकृति तो नहीं कोय ए, दूजे भांगे चारित कह्यो
 जोय ए । वर न्याय हिये सुविचार ए, प्रकृति दे
 म भिड़को लिगार ए ॥ ४१ ॥ निशीथ बी में
 न्हाळ ए, वार वार रो डंड विशाल ए, इम भिल
 ङंड नीत ए, राखो सूत्र नी प्रतीत ए ॥ ४२ ॥

* बिले = नाश ।

† पिण चारित्र्य तणो अभाव ए । ऐसा भी पाठ है ।

भारीकर्मा सुणी भिड़काय ए, बोलै ऊंधमति इम वाय ए । करै ढीली परूपणा काज ए, हिवै दोष तणो काई लाज ए ॥४३॥ इम बोलै मूढ़ गिंवार ए, ज्यांरा घट माहें घोर अन्धार ए । पिण इतरी न जाणै साख्य ए, सर्व कही सूतर नी वात ए ॥४४॥ स्थिर राखण समगत सार ए अति मेटण भ्रम न्धार ए । आगम रहिस वृत्तावै अमाम ए, ते तो एकन्त तारण काम ए ॥ ४५ ॥ अति मानणो तसु उपगार ए थिर समगत राखणहार ए । रह्यो गुण मानणो तो ज्यांहीज ए, उलटी क्युं करो त्यां पर खीज ए ॥ ४६ ॥ परम दुर्लभ समगत पाय ए, रखे शंका राखो मन माहिं ए । शक्का राख्यां सुं समकित जाय ए, तिण सुं वार २ समभाय ए ॥ ४७ ॥ पज्जवा ने हीण पाडै कोय ए, वुकस पडिसेवणादिक जोय ए । तो तिणरी तिणने मुशकल ए, पिण पोते क्युं घालो सल ए, ॥ ४७ ॥ खोड़ ऊंटरी ऊंटने होय ए, ज्युं पज्जवा हीण तसु सोच जोय ए । न फिरै छट्टो गुणठाण ए, तठा ताई असाध म जाण ए ॥ ४८ ॥ श्रावक कह्या मात तात समाने ए, पवर चौथे ठाणै पहिछाने ए । हेत सुं कहै रुड़ी रीत ए, पिण अंतरग में अति प्रीत ए ॥ ५० ॥ स्वाम भिक्षु तणे प्रसाद

ए, पामी मकित चरण माधि ए । दीधो हवेली
 रो तो हान्त ए, संखेप थकी चित शान्त ए ॥५१॥
 त्यांरा ।द थी अनुसार ए ।खा न्याय कहा जय
 ।र ए । सू में जि न्याय बताविया ए, लेश ।त्र
 णहुन्ता न लाविया ए ॥ ५२ ॥ धिन २ भिक्खु
 स्वा ए, । । घणा जणा रा ।म ए । त्यांरी
 ।सता रा गो तहतीक ए, तिण सूं होवै मोक्ष नजीक
 ए ॥ ५३ ॥ स्वामी दान दया दीपाय ए, आज्ञा ण
 आज्ञा ओ खाय ए । ज्यांरा गुण पूरा कहा न जाय
 ए, प्रत्यक्ष पा भिक्खु पाय ए ॥ ५४ ॥ स्वामी याद
 । त्रै दिन रेण ए, चित्त में अति पामै चैन ए । ऐ ।
 भिक्खु उजागर आप ए, स्मरण सूं मिटं सोग संताप ए
 ॥५५॥ नव तीसमी ढा निहा ए, भ्रम भंजन
 समय भाल ए । हवेली रो हेतु कह्यो स्वाम ए,
 सूत्र । जीत कही म ए ॥ ५६ ॥

दोहा ॥

विचरत पूज्य पधारिया, पादु शहर मभार ।

शिव्य हेम साथे सखर, संत अवर पण सार ॥ १ ॥

एक भायो इह अवसरे, भिक्खु भणी भणेह ।

हेम चदर हाथे करी, अधिकी दीसे पद ॥ २ ॥

चतुर स्वाम ते चदर ले, माप दिखायो मान ।

लांब पणै चौड़ा पड़े अधिक नहीं उनमान ॥ ३ ॥

पूज कहै देको प्रगट, पछेवड़ी परमाण ।

ते कहे अधिकी तो नहीं, ए तो छै उन्मान ॥ ४ ॥

तूं अधिकी कहितो तदा, तद ते बोल्या ताम ।

मुक्त भूडो शका पड़ी, तब घणो निवेधो स्वाम ॥ ५ ॥

चार अंगुलरे वासते, संजम खोवां सार ।

मुक्त भोला जाण्या रसा, आप्यो भ्रम अपार ॥ ६ ॥

पती प्रतीत न तो भणी, तो मारण रे मांय ।

पय काचो पीवै तदा, थाने खबर न काय ॥ ७ ॥

श्यादिक बचने करी, अधिक निवेधो आप ।

कर जोड़ी ने ते कहे, कूडो शंका किलाप ॥ ८ ॥

खरो रण पर सीब दे, जोड़ मिटावण काम ।

फिर शंका तसु ना पड़ी, पघर स्वाम परिणाम ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४० मी ॥

(जाणपपुं जग दोहेलो परेशी)

स्वाम भिक्षु गुण सागरु रे लाल, खरा भिक्षु
खिम्यावान सुखकारी रे । संवली बेवै स्वामजी रे
ला० सुणो सूरत दे कान ॥ सु० ॥ सुण जो गुण
स्वामी तणा रे लाल ॥ १ ॥ शोभाचंद सेवक हुंतो रे
लाल, नांदोला नु नेहाल । सु० । आयो पाली में
एकदा रे लाल, तिण ने कहे पाखंडी ते काल ॥
सु० ॥ २ ॥ तू विश्वर जोड़ भीखणजी तणा रे लाल,
तो ने देसां बहु रुपया ताम । सु० । भीखणजी सूं
बातां कर जोड़सूं रे लाल, इम कहे शोभाचन्द

आम ॥ सु० ॥ ३ ॥ इम कहि खैरे आवियो रे लाल,
 जिहां पूज विराज्या जाण । सु० । उभो भिखु रे
 आगले रे लाल, वंदणा कीधी आण ॥ सु० ॥ ४ ॥
 पूज कहै वच परवड़ा रे लाल, तुम्ह नाम शोभाचंद
 ताय । सु० । शोभाचंद कहै हां सही रे लाल, तेहिज
 नाम कहाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ भिखु वलि तसु इम
 भएँ रे लाल, सुत रोहीदास नो सोय । सु० । सेवक
 कहे स्वामी भणी रे लाल, सत वच तुम्ह रा अवलोक्य
 ॥ ६ ॥ वलि शोभाचन्द बोलियो रे लाल, आप
 आछी न कीची एक । सु० । उथापो श्री भगवान ने
 रे लाल, विरुई वात विशेष ॥ सु० ॥ ७ ॥ वलता
 भिखु बोलिया रे लाल, म्हें क्याने उथापां भगवान
 । सु० । म्हे भगवंत रा वचना थकी रे लाल, घर छोड़
 साधु थया जाण ॥ ८ ॥ सु० ॥ वलि शोभाचन्द
 बोलियो रे लाल, आप देवरी दियो उथाप । सु० ।
 जाव देवें स्वामी जुगत सँ रे लाल, चतुर सुणे चूप
 चाप ॥ सु० ॥ ९ ॥ हजारों मण पत्थर देवल तणा रे
 लाल, कहो उथापिये केम । म्हेतो सेर दो सेर प्रयो-
 जन बिना रे लाल, आघो पाछो करां नहीं एम ॥
 सु० ॥ १० ॥ फेर शोभाचन्द पूछतो रे लाल, आप
 जिन प्रतिमा दी उथाप । सु० । प्रतिमाने कहो

पाण छै रे , ए आछी न करी ॥ ० ॥
 ११ ॥ स्वाम है तूं सांभल रे , म्हे प्रतिमा
 उया , किए म । सु० । म्हारे त्याग है झूठ
 बोलण तणारे लाल, इणरो न्याय कहूं अभिराम ॥
 १२ ॥ सोना री प्रतिमा भणी रे लाल, सोनारी
 प्रतिमा कहंत । सु० । रूपा री प्रतिमा भणी रे लाल,
 म्हे रूपा नी कहां धर खंत ॥१३॥ सर्वधातु नी प्रतिमा
 भणी रे ला०, सर्वधातु नी कहां सोय । सु० । पाषाण
 री प्रतिमा भणीरे ला०, कहां पाषाण री जोय ॥१४॥
 पाषाण री प्रतिमा भणी रे ल० । सोनारी कहां लागे
 झूठ । सु० । तिण सूं कहां छां प्रतिमा पाषाणरी रे
 ला०, म्हे तो झूठ ने दीधी पूठ ॥सु०॥१५॥ शोभाचंद
 इम सांभली रे ला०, हृष्यो घणो हिया मांय । सु० ।
 इसड़ा उत्तम महा पुरुषां तणा रे ला०, किम अवगुण
 कहिवाय ॥ १६ ॥ गुण चाहिजे ए पुरुषना रे ला०,
 बारु इसड़ी विचार । सु० । दोय छन्द जोड्या दीपता
 रे ला०, सांभलतां सुखकार ॥ सु० ॥ १७ ॥ स्वामीने
 छन्द सुणायने रे लाल, पाछो आयो पाली माहिं ।
 सु० । पाखंडमतिया पूछियो रे ला०, थे छन्द बणाया
 के नाहिं ॥ सु० ॥ १८ ॥ ते कहै छन्द बणाविया रे
 ला०, पाखण्डमति बोल्या फेर । सु० । भोषण

जी रा श्रावक आगले रे ला, छन्द कहिजे होय सेर
 ॥ सु० ॥ १६ ॥ स्वामीजी रा श्रावकां कने रे ला०, आया
 सेवक लेई साथ । सु० । पाखण्डमति कहै श्रावकां
 भणी रे ला०, वरु सुणो मुझ वात ॥ सु० ॥ २० ॥
 सेवक ओ निरापेली सही रे ला०, अदल कहसी
 अवलोय । थारे म्हारे श्रद्धा पक्ष नी रे ला०
 इणारे तो पक्ष नहिं कोय ॥ २१ ॥ शोभाचन्द ने इम
 कहै रे ला० भोखणजी साधु किसाएक सु०, शुद्ध
 छै किंवा अशुद्ध छै रे ला०, तव सेवक कहै सुविशेष
 ॥ २२ ॥ उणारी श्रद्धा उणा कने रे ला, आपारी
 आपा पास । सु० । तो पिण पाखंडमतिया कहै रे
 लाल, तंतो निशंक प्रकाश ॥ २३ ॥ जब शोभाचन्द
 कहे सांभलो रे लाल, गुण अवगुण भोखणजी में
 होय । सु० । कहिसूं म्हाने दर्शली जिसा रे लाल,
 तव ए कहे दरशे जिसा तोय ॥ २४ ॥ शोभाचन्द
 सेवक इम सांभली रे ला० शुद्ध कह्या छन्द त्यां
 श्रीकार । सु० । ते छन्द दोनूं गुण तणा रे ला०
 सांभलजो सुखकार ॥ २५ ॥

॥ शोभाचन्द सेवक कृत छन्द ॥

अनभय कथणी रहणी करणी अति, आठूंई
 कर्म जीपै अधिकारई । गुणवंत अनंत सिद्धन्त कला

गुण, प्राक्रम पाँच विद्या पुण भारी । शास्त्र सार बतीस
जाणै सहु, केवल ज्ञानी का गुण उपकारी । पंचेंद्री कू
जीत न मानत पाखंड, साध मुनिन्द्र बड़ा सतधारी ।
साधु मुक्ति का वास बंदा सहु, भीखम स्वाम सिद्धंत
है भारी ॥ १ ॥ स्वामी परभव के स्वार्थ साच है, वाचै
सूत्र कला विस्तारी । तेरा हि पंथ साचा तिहूं लोक
में, नाग सुरेन्द्र नमें नर नारी । सूरणिये सत बात
सिद्धन्त सुज्ञान की, बहुत गुणी करणी बलिहारी ।
पृथ्वी के तारक पञ्चम आरा में भीखम स्वाम का
मारग भारी ॥ २ ॥

॥ ढाल तेहिज छै ॥

शोभाचन्द कहा इसारे ला०, सांभल ते गया
सरक । सु० । मन माहें मुर्झाणा घणा रे ला०, स्वामी
जी रा श्रावक होय गया गरक ॥ २६ ॥ पूज खिम्या
रा प्रताप सूं रे ला०, पाड़ी पाखंडियांरी आव सुं०
ऐसा भिखु गुण आगला रे ला०, सुजश विसत-
रियो सताब ॥ २७ ॥ ऊंडी पूज आलोचना रे ला०,
वारु बुद्धि ना जाव । सु० । धोरी धर्म तणा पूरा रे
ला०, दियो पाखंड मत दाव ॥ २८ ॥ अवतरिया इण
भरत में रे ला०, खरे मारग रखा खेल सु० सूत्र
बुद्धि समसेर सूं रे ला०, पाखण्ड मत दियो पेल ॥

२५॥ स्मरण तुम्ह गुण संभरुं रे ला०, आवे निश्-
 चिन याद । सु० । रोम २ सुख रति लहूं रे ला०,
 पामूं परम समाधि ॥ ३० ॥ चारु, डाल, चालीसमी रे
 ला० भय भ्रम भजन स्वामः ॥ सु ॥ जय जश सम्यति
 दायका रे ला० आशा पूरण आम ॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥ ॥ ३१ ॥

बूंदी में बुजा करी, सवाई गुमडी सोझ ।

बुजाण सम्पूर्ण हुवां पछै, आप नेहन मांगो अवलोय ॥ १ ॥

नुहन घाल सोगंघ करी, इसडी कही छो आप ।

फाई आपरे ई तोटो अछै, ते तोटो वृण थाप ॥ २ ॥

मुता परणाई सेट किण, न्यात जिमाई न्याल ।

तोटो वृण नेहन ले, ज्यूं सुं तोटो तुम माल ॥ ३ ॥

स्वाम कई एक सेट तिण, मुता परणाई सोय ।

बोलाया बहु गाम रा, न्यात मित्र अवलोय ॥ ४ ॥

जीमिण कर जीमाविया, सगलां ने पकवान ।

द्विस घगा राख्य पछै, सगल दीर्घा सन्मान ॥ ५ ॥

एक एक पकवान री, साथे कोयली दीध ।

रस्ते भूख भांजन मर्णा, इम सुत्रै पूगता कीध ॥ ६ ॥

ज्यूं म्हे पिण बहु दिवस लग, बन्नाण में बिस्तार ।

शातां विविध वैराग नी, संभलाई सुखकार ॥ ७ ॥

हलुकमीं मुण दियिया, कर्म काट्या अधिकाय ।

छेहछे एक पकवान री, कोयली रूप कहाय ॥ ८ ॥

त्याग करावां त्रहने, मुने मोक्ष में जाय ।

इम तांटी मेदण अवानुं, नुहन मांगां इण न्याय ॥ ९ ॥

दाल ४१ की

(धीज करै सीता सती रे लाल पदेशी)

स्वाम भिक्खु बुद्धि सागरु रे ला०, निर्मल मेल्या
 न्याय रे । सुगुण नर ॥ सुविनीत सुण हर्षे सही रे
 लाल, अवनित ने न सुहाय रे । सुगुण नर ॥ सुण जो
 दृष्टान्त स्वामी तणा रे लाल, ॥ १ ॥ वनीत साधु
 ऊपरै रे लाल, दीधो स्वाम दृष्टान्त रे । सु० । एक
 सा मुंकार नी स्त्री रे , पाणी काजे गई धर खंत रे
 सु० ॥ २ ॥ बेहड़ो तो माथे पाणी सूं भयो रे लाल,
 पोतारे घर आवता पे रे । सु० मार्ग में तिण री
 बाहिली मिली रे ला०, बातां करवा लागी विशेष रे
 ॥ ३ ॥ एक घड़ी ताई उभा थका रे ला०, हिल मिल
 बातां करी हर्षाय रे । सु० । प्रछै घर आवी निज पिउ
 भणी रे ला०, तिण हेलो पा यो ताहि रे ॥ ४ ॥ तुर्त
 घड़ो उतारो मुक्त सिर तणुं रे ला०, जो किंचित
 बैलां थी भरतार रे । सु० । बेहड़ो उता यो तिण
 बेरनो रे ला०, तो तोष मा आवी अपार रे ॥ ५ ॥
 कहै म्हारे माथे तो बेहड़ो उदकनो रे ला०, सो हूं
 भारे मुई घणी सोय रे । सु० । थाने तो मूल सूजै
 नहीं रे ला०, तिण सूं बैलां इतरी लगाई जोय रे
 ॥ ६ ॥ संसार तणे लेखे सही रे ला०, नार इसड़ी

अविनीत रे । सु० । रस्ते एक घड़ी बेहड़ो छतां रे
 ला० पोते बात करती धर प्रीत रे ॥ ७ ॥ किंचित्
 जेज पिउ करी रे ला० तड़का भड़का करवा लागी
 तामरे । सु० इसड़ो अजोग ते स्त्री रे ला०, अविनीत
 जग कहे आम रे ॥ ८ ॥ अविनीत साधु एहवो रे ला०,
 गोचरियांदिक माहिं रे । सु० । किणही बाई भाई सूं
 बातां करे रे ला०, एक घड़ी उभा ताहि रे ॥ ९ ॥
 अथवा दर्शण देवा भणी रे ला० । भट चलाई ने
 परहो जाय रे । सु० । तिहां उभा घणी बेलां लगे रे
 ला०, बातां करै नणाय रे ॥ १० ॥ बड़ा थोड़ोई
 काम भलाइयां रे ला०, करता कठ मठाठ करै जेह रे
 । सु० । तथा पाणी राख्यो ते लेवा मेलियां रे लाल,
 टाला टोला कर देवै तेह रे ॥ ११ ॥ अथवा जातो
 दोहरो हुवे रे ला०, देवै मुंह बिगाड़ रे । गुरु सीख
 दिये चूक थी पढ्यो रे ला० तो करै उलटो फुंकार रे
 ॥ ११ ॥ अविनीत साधु ने दीधी उपमा रे, अविनीत
 स्त्री नी भिक्खु आपरे । इम सांभल उत्तमा नरा रे,
 चित्त सुविनय थाप रे ॥ १३ ॥ बलि बनीत अविनीत री
 चौपई बिबै रे, आख्य दृष्टन्त अनेक । सु० । संक्षेप
 थकी कहुं छूं सही रे लाल, सांभलजो सुविवेक ॥
 १४ ॥ अविनीत ने थावरिया नी उपमा रे लाल, गर्भ-

वती ने कह्यो कोय सु० । पुत्र होसी पुन्य गोलो
 रे, पाड़ोसण ने कहे पुत्री होय रे ॥ १५ ॥ गुरु भगता
 वक वि ने रे ०, रुरा ण ।
 सु० । रे व जाणै तिण ने रे ; अँवगु
 बोले तामं ॥ १६ ॥ कने रहे धु ते थकी रे ॥ १०,
 बेर बुद्धि ज्युं ण ० । और लगां रहे ते थकी रे
 ०, हेत राखे विहाण ॥ १७ ॥ कुह्या नां री
 कुती भणी रे ला०, काढ़े घर सूं सहु कोय ० । ज्युं
 अवनित जिहां जावै तिहां रे ०, अदरं मानं न
 होय ॥ १८ ॥ भंडसुरो ण छाड़ि ने भीष्टो अ रे
 ०, हरिया जव छांडी मृग पड़े पास ० ।
 अवनित वि य छांडी करी रे ०, वि धारं
 उलास ॥ १९ ॥ गधो घोड़ो गलियार अवनितडो रे
 ०, कूत्र्यां विन ाघो नहीं कोय । ज्युं
 नीत ने क ावियां रे ला०, कह्यां
 नीठ २ पार होय रे ॥ २० ॥ बुटक ने गधे मामे
 बलदने रे ला०, मरायो कुबुद्धि सीखाय । ज्युं अवनित
 री संगत क्रियां रे ला०, भव २ में दुख पाय ॥ २१ ॥
 वेश्या मुतलत्र थी पुरुषाने रिभावती रे ला०, स्वार्थं न
 पूगां तुरत दे छेह रे सु० । ज्युं अवनित मुंतलव
 विनय करै घणुं रे ला०, स्वार्थं नहीं सभ्यां तोड़े

सनेह रे ॥ २२ ॥ बांध्यो कालारी पाखती गौरियो
 रे ला०, वर्णा नावे तो पिण क्षण आय रे। ज्युं
 अवनित री सङ्गत करै रे ला०, तो उवे अविनय
 कुबुद्धि सीखाय ॥ २३ ॥ सोक रा सोक लोकां कने
 रे, अवगुण बोलै ने बाँछे घात। ज्युं अविनीत वरते
 गुरु थकी रे, अवगुण ग्राही साख्यात ॥ २४ ॥ जा-
 तिरी त्रिया पिउ से लड़ी रे, ताकै कुवे के उठै और
 साथ रे। करे अविनीत क्रोध सं सलेपणा रे, के गण
 छोड़ जूदो होय जाय ॥ २५ ॥ शोर ठंडो हुवै मुख
 में घालियां रे, तातो अग्नि में गालियां हुवै ताय।
 ज्युं वस्त्रादिक दियां अवनित राजी रहे रे, स्वार्थ
 अण पूर्णां अवगुण गाय ॥ २६ ॥ शोर शोरीगर रा
 घर थकी रे, दूर रहै बुद्धिदान रे। ज्युं अवनित
 सं अलगा रहे रे, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ २७ ॥
 आछी वस्त घाले अग्नि में रे, ते छिन माहें हो-
 जावै छार। ज्युं अविनय अग्नि में गुण बले रे।
 अवगुण प्रगटे अपार ॥ २८ ॥ नाग खिजावै नान्हो
 जाण ने रे, तो ओ घात पामै तत्काल। ज्युं नाना
 गुरुनी निंया कियां, आपदा पामै असराल ॥ २९ ॥
 कालो नाग कोप्यां करै, जीव घात सं अधिक म
 जाण। पग गुरु ना अप्रसन्न कियां, अबुद्धि दुर्गत

दुख खाए ॥ ३० ॥ कदा गिन ले मन्त्र जोग
सूँ रे, कदा कोप्या न खाय । दा तालपुट
विष पिण मारै नहीं । पिण गुरु हेलणा सूँ मुनि न
जाय ॥ ३१ ॥ कोई बाँछे सिर सूँ गिरि फोड़ रे,
सूतो ही सिंह जगाय । कोई भा रे अणी रे
टाकरा रे, ज्युँ गुरुनी सातना थाय ॥ ३२ ॥ कदा
गिरि पण फोड़ कोई मस्तके रे, कदा कोप्यो सिंह
न खाय । कदा भालो न भेदै टाकर मारियां रे,
पण गुरु हेलणा सूँ शिव नाहिं ॥ ३३ ॥ ज्युँ काष्ठ
बहो जाय जल मभे रे, ज्युँ विनीत ताणीजे
संसार । शिष्य क्रोधी अभिमानी त्मा रे, धूर्त
मायात्रियो धार ॥ ३४ ॥ गुरु सीख दिये अविनीत
ने रे, तो क्रोध करे तिण चार । ते डाँडे कर ठेले
लिछमी आवती रे, सांची सीख न श्रद्धे लिगार
॥ ३५ ॥ केई हाथी घोड़ा अविनीत छै रे, दीखै प्रत्यक्ष
दुःख । तो धर्माचार्य ना अविनीत ने रे, कहो हुबे
किम सुख ॥ ३६ ॥ विनीत नर नारी इण लोक में
रे, विकल इन्द्री सरीखा विपरीत । ते डाँडे
करी ताड़ीजता रे, अति दुः पामें गुरु नो अवि-
नीत रे ॥ ३७ ॥ बले देव दाणव अविनीत छै रे,
दुखिया ते पण देख । गुरु ना अविनीत ने दुः

ति घणा, काल नन्त संपेख ॥ ३८ ॥ विनीत
 अविनीत तां वाट में रे, दोनू जणा हथिणी नो
 पग देख । अविनीत कहे पग हाथो तणां, इण ने
 ऊंधो सूके शेव ॥ ३९ ॥ विनीत है हथिणी पण
 काणी डावी । खरी रे, ऊपर राजा री राणी हित ।
 वले पुत्र रत्न तिणरी कूल में रे, विवरा सुध बोल्थो
 सुविनीत ॥ ४० ॥ एक वाई आगै पूछियो रे.
 ऊभो रवर । म्हारो सुत प्रदेश ते ि ी दे
 रे, कहे विनीत उण कियो काल ॥ ४१ ॥ हूं काटूं
 वाहूं जीभडली तांहिरी रे, तूं विरुओ बोल्थो केम ।
 धसको क्यं न्हाखे पापी एहवो रे, जव विनीत कहे छै
 एम ॥ ४२ ॥ पुत्र थारो घर वियो रे, ज मि सी
 तो सूं निशंक । इणरो वचन मान गो भूठो घणां,
 इण रे जीभ वैरण रो वंक ॥ ४३ ॥ ए दोनूं बोलां
 विनीत भूठो पड्यो रे, पछै गुरु सूं भगड्यो
 । कहे मोने न भणायो कपटे करी गुरु पूछे
 निरणुं कियो ताहि ॥ ४४ ॥ इह ठोक ि गुरु
 त रो रे, अकल विगड गई एम । तो धर्मा-
 चार्य नां अविनीतरी रे, ऊंधी अकल रो कहिवो केम
 ॥ ४५ ॥ ज्यूं नकटी छुटी कुलहीणी नार ने रे, परहरी
 निज भरतार । जोगी भखरादिक तिण ने आदरै,

उवा पिण जावै उणा र ॥ ४६ ॥ टी रीषो
 विनीतरो रे, तिण सं नि रु न धरे प्यार । तिण
 ने ॥ ४७ ॥ नकटो तो जोवै भखरादिक भणी रे, अवि-
 नीत जोवै अजोग । जो शुभ उदै हुवै विनीत
 रे, मिल जावै सरि गो योग ॥ ४८ ॥ सौ बार
 णी सं कादो धोवियां रे, बिरुई न मिटै ।
 घणं उपदेश दे गुरु अविनीत ने रे, पिण मूल न
 लागै स ॥ ४९ ॥ विनीत उजिया भोगवती
 जिसो रे, ऋषिया रोहणी जिसो वनीत । गुरु गण
 सूपे विनीत ने रे, पूरी तिण री प्रतीत ॥ ५० ॥
 किणही गाय दीधी चार विप्रां भणी रे, ते बार २
 दूहे ताहि । पिण चारो न नीरे लोभ थकी रे, तिण
 सं दुः २ मुई गाय ॥ ५१ ॥ गाय सरिषा आचार्य
 मोटका रे, दूध सरिषो ज्ञान मो । शिष्य मिला
 ब्राह्मण ऋषि रे, ते ज्ञान किये दिल खोल ॥ ५२ ॥
 आहार णी दिठ वच तणी रे, न रे सार
 भाल । एहवा अविनीतां रे वश गुरु पड्या, त्यां
 पण दु २ कियो का ॥ ५३ ॥ ब्र ण तो एक
 भव मभे रे, फिट २ हु इह ठोक । गुरु ना वनीत
 रो कहिवो किसो रे, पीड़ा विविध परलोक ॥ ५४ ॥

गर्ग आचार्य ने सिल्या रे, पांच गौ शिष्य अविनीत ।
 तिण रो विस्तार तो छै घणुं, उत्तराच्ययन माहें
 गीत ॥ ५५ ॥ एकल थकी वुरो अविनीतडो रे,
 धारा गण माहें जाण । स्वाम द्रोही सेवग सारी गो
 रे, दुमनुं चाकर दुश्मण समान रे ॥ ५६ ॥ ॥ छलवल
 खेले चोर ज्युरे, छिद्री थको रहे टोला माहिं ।
 चर्चा उपदेश तिणरो अति वुरो, फाड़ा तोड़ा
 काजे करे ताहि ॥ ५७ ॥ और साधारा काहे गृहस्थ
 खूचणा रे, तिण सूं वात करे दिले गोल । अन्त-
 रंग में जाणे आपरो, तिणने सिखावे चर्चा बोल
 ॥ ५८ ॥ गुण ग्राम गावै सुविनीत रा रे, अविनीत
 सूं हा नहीं जाय । निज आपो प्रगट करे, म्हाने तो
 ललवल न सुहाय ॥ ५९ ॥ और धारी । सता
 उतारवा रे, आपो प्रगट करे मूढ़ । गुरु सीख दे
 खामी मेटवा रे, तो साहमो मंड जाय करे खोटी
 रुढ़ ॥ ६० ॥ जिण ने आप तणुं करे रागियो रे,
 शङ्का औरां री घाल । अभिमानी अविनीत नी रे,
 एहवी छै ऊंधी चाल ॥ ६१ ॥ सुविनीत रा म-
 भाविया रे, साल दाल ज्युं भे । होय जाय । वि-
 नीत ना मभाविया, कोकला ज्युं कानी थाय
 ॥ ६२ ॥ समभाया सुविनीत अविनीतरा रे, फेर

कितोयक होय । ज्युं तावडो ने छांहडी रे, इतरो
 अन्तर जोये ॥ ६३ ॥ विनीत ने विनीत मिले रे,
 ते पामें घणो मन हर्ष । ज्युं कण राजी वै रे,
 चढ़वा ने मिलियां जरख ॥ ६४ ॥ डाकण रे नुष
 ने रे, गो करै समंकित नो त । डाकण चोर राजा
 तणी रे, ओ तोर्थकर नो चोर विख्यात ॥ ६५ ॥ ट
 रूपशुद्धि फिट २ वै, जे न गिणौ जाति कुजाति ।
 अविनीत शुद्धि घणो णारो रे, विकला ने मूँडे
 विख्यात ॥ ६६ ॥ ए अविनीत साधु ओ लाविया रे,
 इमंहिज साधवी । बले वक ने विकार रे,
 तिम हिज करजो पिढाण ॥ ६७ ॥ साध साधवियां
 री निन्दा करै, अवगुण बोलै विपरोत । संस करावे
 गृहस्थ भणी रे, त्यांरी भोला माने परतीत ॥ ६८ ॥
 केई वक वै घर तणुं, केयक मांगे । य । पिण
 अविनीत पणो छूटै नहीं, तो गरज सरै नहीं । य
 ॥ ६९ ॥ त्यांने दीघां में पुन्य परूपियां, स्वान ज्युं
 पूंछ हिलाय । साधु पाप प्ररूपे त्यांरा दान में, तो
 लागै अभ्यन्तर ल ॥ ७० ॥ कोई अविनीत हुवै ध
 धवी, कदा गुरु दे लोका ने जताय । जो अविनीत
 क सांभले, तो तुर्त कहे तिणने जाय ॥ ७१ ॥
 ।धां ने आय बंदणा करै, साधवियां ने नवांदे रुडी

रीत । त्यांने श्रावक श्राविका म जाणजो रे, तेतो
 मूढ मति छै । त्रिनीत ॥ ७२ ॥ तिण श्री जिन धर्म
 न ओलख्यो रे, बले भण भण करै - भिमान । प
 छांदे माठी मति उपजे, तिण ने लागो नहीं गुरुकान
 ॥ ७३ ॥ मोटो उपगार मुनि तणुं, कृतघ्न कीधो न
 गिणंत । एहवा अविनीत साधु श्रावक ऊपरै, भिक्खु
 आख्यो एक दृष्टन्त ॥ ७४ ॥ कोई सर्प पड्यो उजाड़
 में रे, चैन नहीं सुध कांय रे । तिण सर्प री अणुकम्मा
 करी, दूध मिश्री घाली मुख मांय ॥ ७५ ॥ ते सर्प
 सचेत थयां पछै रे, आडो फिरियो आय । जो ओ-
 लूठो हुवै तो उण ने दाव दे रे । काचो हुवै तो दे
 डङ्क लगाय ॥ ७६ ॥ सर्प सरीपा अविनीत मानवी रे,
 एकल फिरै ज्युं ढोर रुलियार । तिणने समकित
 चारित्र पमाय ने रे, कीधो मोटो अणगार ॥ ७७ ॥
 एहवो उपगार कियो तिको रे, तत्काल भूले अविनीत ।
 उलटा अवगुण बोले तेहना रे, उणरे सर्प वाली छै
 रीत ॥ ७८ ॥ आहार पाणी वच्चादि कारणै रे, ते
 पिण भूटो भगडो जोय । इण रे ऊपरलो हुवे तो
 दावै डङ्क दे, आघो काढ़े तो उलटो भांडे सोय ॥
 सर्प ने मिश्री दूध पायां पछै रे, डङ्क दे ते गैरी सर्प
 देख । ज्युं ओ समकित चारित्र लियां पछै रे, हुवो

धां रो बैरी वि ॥ ८० ॥ बले पी रो
 हुवे लोलपी रे, १५ रो दोष न सूकै मू । वियां
 रो , बलि क्रोध प्रतिकूल ॥ ८१ ॥
 ति ने दूर तो दुश्म थको रे, बोले घ विष-
 रीत । परूपै धने, तिण रे गैरी
 नी रीत ॥ ८२ ॥ गुरा ने दूध थ ।
 रे, ओ करै पाछो उपगार । ति ने देई
 करै रे, बले दी हुवै हर्ष । ० । णो
 विनीत रा रे ॥ ८३ ॥ केई प दि फिरै
 ए । रे, पि प्रणामी शुद्ध रीत रे । तिणने
 म य कित चारित्र दियो रे, ते
 रुड़ी रीत ॥ ८४ ॥ तिणरे वि ने वि
 रे, रुचिया अभ्यन्तर । ज्युं । छान्दो
 रुंधने रे, ज्यां छो र ॥ ८५ ॥ मोटो
 उपगार त्यांरो वि वि रे, ब देही त्यांरे
 फाज । त्यांरे दर्शण देख हर्षत हुवै, तत्र फाज न धोरी
 ज्युं समाज ॥ ८६ ॥ बले गामा नगरां फिरतां थकां
 रे, सदा काल करे गुणग्राम । ते सुविनीत गुणग्राही
 आत्मा रे, त्यांने वीर बखायया ताम ॥ ८७ ॥ शिष्य
 सुविनीत ने शोभती रे, उपमा दीधी अनेक । सूत्र
 न्याय भिक्खु स्वामजी रे, सांभलजो सुविशेष रे

॥ ८८ ॥ भद्र कल्याणकारी घोड़े चढ्यो रे, सवार
 रे हर्ष आणन्द । ज्युं सीख दियां सुवनीत ने रे, गुरु
 पामें परमानन्द ॥ ८९ ॥ सुविनीत हय देखी चावको
 रे, असवार रे गमतो चा न्त । चावका रूप बचन
 लागां विनां रे, सुविनीत बर्ते चित्त शान्ति ॥ ९० ॥
 अग्निहोत्री ब्राह्मण सेवै अग्नि ने रे, ते घृतादिक
 सींची करै नमस्कार । सुविनीत सेवै इम गुरु भणो,
 केवली छतो पिण अधिकार ॥ ९१ ॥ सुविनीत हय गय
 नर नारी सुखी रे, सुखी देव दानव सुविनीत । ते तो
 पूर्व पुन्य रा प्रभावं सू रे, दीसै लोक में विनय
 सुरीत ॥ ९२ ॥ केई पेट भराई शिल्प कारणै, संसार
 ना गुरु कने सोय । राजादिक ना कुंवर डांडादिक
 सहै रे, करड़ा बचन सहै नर्म होय ॥ ९३ ॥ तो सिद्धन्त
 भणाने ते सतगुरु तणी रे, किम लोपै विनयवन्त
 कार । समगत चरित्र पमावियो रे, ओ उरुकृष्टो उप-
 गार ॥ ९४ ॥ धर्म रूप वृक्षरो विनय मूल छै, बीजा
 गुण शाखादिक सम जाण । तिण सं शीघ्रबुद्धि कीच
 सूत्र नी रे, दशवैकालिक नवमा रे दूजै वाण ॥ ९५ ॥
 वृक्ष रो मूल सूकां छतां रे, शाखा पान फलादि सूख
 जाय । ज्युं विनय मूल धर्म विणसियां रे, सगलाई
 गुण विललाय ॥ ९६ ॥ एहवो विनय गुण वर्णव्यो

रे, सांभल ने नर नार । विनय ने लगे करो
 रे, करो विनय धर्म ही र ॥ ६७ ॥ अविनीत रा
 भात्र सांभली रे, विनीत बहु दुख पाय । कई
 गुरु सुध बध बाहिरा रे, ते पिण हर्षत थाय ॥ ६८ ॥
 विनीत रा गुण सांभली रे, विनीत रे । नन्द ओ
 छाव । तो पिण कुगुरु हर्षत हुवैरे, विनय करावण
 चाव ॥ ६९ ॥ जे समके नहीं जिन धर्म में रे । आज्ञा
 गोलखै नांय । ते ब्रत बिहुंणा नागड़ा रे, प्रत्यक्ष
 प्र गुणठाणो देखाय ॥ १०० ॥ हा देखी
 हंसली तणी रे, बुगली पिण काढी चाल । पिण
 गली सं चाल त्रै नहीं रे, ए दृष्टन्त लीजो संभाल
 ॥ १०१ ॥ गुरु साध ने देखी करी रे, ते पिण करवा
 लागा भिमान । आडम्बर कर विनय रावता रे,
 नहिं श्रद्धा आचार नुं ठि ण ॥ १०२ ॥ कोय रा
 ठउकार सुणी करी रे, कां कां ब्द रे । ग ।
 शोभाग सुण सतियां तणा, कूढे तियां अथाग
 ॥ १०३ ॥ सांभधारी कुसतियां ग । रिषा रे, अशुद्ध
 श्रद्धा अ र रे माहिं । ला बादल ज्युं थोथा
 जता रे, विनय रावता जै हिं ॥ १०४ ॥ गैवर
 नी गति देखने, भूसें र न ऊंचा कर । न । ज्युं
 भेषधारी दे ती धने रे, स्वान ज्युं कर रहा तान

॥ १०५ ॥ ते पिण विनय करावण रा भूखा घणा,
 साथी सीप सिंगोट्या रा शोय । मिथ्यादृष्टि ते
 मूलगा रे, त्यांने ओलखे बुद्धिवन्त लोय ॥ १०६ ॥
 त्यां ठाम २ थानक बांधिया थापै जीव खवायां पुन्य ।
 पिण नाम धरात्रै साधरो, इलो न सूफे कित
 शून्य ॥ १७ ॥ पोपां वाई रा राज में. नव तूवा तेरे
 नेगदार । ज्युं विकल सेवका स्वामी मिल्या रे,
 एहवो भेषधा । रे अन्धार ॥ १०८ ॥
 अधिका राखता रे, आडा जडे किंमाड । मोल लिया
 थानक माहें रहे, इ डी थ निरन्तर धार ॥ १०९ ॥
 आज्ञा वार पुन्य श्रद्धता ज्ञा पाप समाज ।
 काचो पाणी पायां पुन्य श्रद्धता रे. प्रत्यक्ष पोपां वाई
 रो राज ॥ ११० ॥ ते समझ न पडे श्रावकां भणी,
 ज्यांरा मत माहें मोटी पो । पिण धा ने मूल
 सुफे नहीं, तां ऊपर भोल ॥ १११ ॥ कुगुरु निषेध्यां
 विनीतडो, अंधा करे विपरीत । ते त गुरुने
 कुगुरु कहै, नहिं विनय करण री नीत ॥ ११२ ॥ उण
 सं विनय कियो जावै नहिं, तिण बोले क
 हित । हे विनय कह्यो छै शुद्ध धनो रे, इण रे
 अन्तर खोटी नीत ॥ ११३ ॥ धां ने ध सरधा-
 यश रे ०, बोले । सहित । तिणने बुद्धि

हुवै ते ओलखे रे, ओ पूरै मतै अविनीत ॥ ११४ ॥
हे आचार में चूके घणा रे, म्हां विनय
कियो किम जाय । ते बुद्धिहीण जीव बापड़ा रे, न
जाणै सूत्र न्याय ॥ ११५ ॥ बुकस पड़िसेवण भेला
रहे रे, अत्रि मनपर्यव केवल अवङ्क । ते भेला
आहार करता शंके नहीं. इणने विनय करतां ॥ वै
शङ्क ॥ ११६ ॥ देखो अंधारो अविनीत रै रे, निज अव-
गुण सूझे नांय । विनय नो ण पोते नहीं, तिणसूं
पर तणुं गौगुण देखाय ॥ ११७ ॥ दंशण मोह उदय
घणुं. पूरो विनय कियो नहीं जाय । ओलखे अवगुण
३ । परो, ए उत्तम पणो सुहाय ॥ ११८ ॥ ते कहै केवली
बुकस भे रहे, मोह बल्यो तिण वे लहर ।
लहर आवै चित्त थिर नहीं, ते जाणै निज कर्म रो
जहर ॥ १९ ॥ बुकस पड़िसेवण कदे नहिं मिटै रे,
नूं ही क रे मांय । दोय सौ क्रोड़ सू घटै नहीं,
चित्त अधिर ते न मिटाय ॥ १२० ॥ ज्यारै सूत्र
तणी नहीं धारणा, अति प्रकृति घणी जोग रे ।
ते थोड़ा में रंग विरंग हुवै रे, मोटो दर्शण मोह
रोग ॥ १२१ ॥ रे दर्शण मोह तो दि घणो,
पिण सैणा घणा बुद्धिवान । ते गुरुने सुणाय निशङ्क
हुवै रे, ज्यारै समकित रो जोखो मति जाण ॥ १२२ ॥

दोष री थाप गुण रे नहीं, दोषरा डंडरी थाप । और
री कीधी थाप हुवे नहीं, इम जाण निशंक रहे आप
॥ १२३ ॥ इम सांभल उत्तमा नरां रे, राखो देवगुरां
नी प्रतीत । आसता राख आगे घणा, गया जमारो
जीत ॥ १२४ ॥ वर्ण नाग नतुआ तणो, मित्र तखो
प्रतीत सं पेख । ते उत्तम पुरुषां री प्रतीत सं तिखा
तिरे ने तिरसी अनेक ॥ १२५ ॥ भिक्षु स्वाम कह्या
भला, दीपता वर दृष्टन्त । केयक तो सूत्रे करी, केयक
वृद्धि उपजंत ॥ १२६ ॥ उत्पत्तिया वुद्धि अति घणी,
स्वाम भिक्षु नी सार । स्वाम गुणा नो पोरसो,
स्वाम शासन शिणमार ॥ १२७ ॥ स्वाम दिसावान
दीपतो, स्वाम तणी वर नीत । आसता तास न
आदरै, ते अपच्छंदा अविनीत ॥ १२८ ॥ भिक्षु
दीपक भरत में, प्रगळ्यो बहु जन भाग । स्वाम
भिक्षु गुण संभरुं रे, आवै हय अथाग ॥ १२९ ॥
ढाल भली इकचालीसमी, आख्या दृष्टन्त अनेक ।
भिक्षु, स्वाम प्रसाद थी, जय जश करण
विशेष ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥

^२ इत्यादिक दृष्टान्त अति, सूत्र न्याय थलि सार ।

सखरा मेल्या स्वामजी, भिक्षु बुद्धि भण्डार ॥ १ ॥

अणुकस्यां रे ऊपर करणी पदमं गुणठाण ।

इन्दी वादि ऊपर, बहु हृष्टान्तः वखाण ॥ २ ॥

पोत्याबंध ऊपर प्रत्यक्ष, प्रज्यावादि पिछाण ।

कालवादी की चौपई, हृष्टान्त त्यां बहु जाण ॥ ३ ॥

अतः अत्रती चौपई, अरु अद्दा आचार ।

जिण आद्या पर युक्ति सूं, सखराहे तू सार ॥ ४ ॥

टीकम डोसी कच्छ नो, सूक्ष्म पूछा सोय ।

जाव दिया अति युक्ति सूं, ऋष मिक्खु अवलोय ॥ ५ ॥

मिक्खु नाम कत्तो भलो, सुत्रां में बहु ठाम ।

भेदे कर्म भणी भलो, गुण निष्पन्न तुम्ह नाम ॥ ६ ॥

पंच महाव्रत अंक पंच, वार व्रत ना वार ।

अव्रत वार अंक धर, त्रि कर्ण जोग प्रकार ॥ ७ ॥

इण विध मांड वतावता, हेतु न्याय अनेक ।

आप देखाया अधिक ही, धर्णवे केम विशेष ॥ ८ ॥

वाख्या ते हृष्टान्त नी, संकलना सुविशाल ।

कहूं छूं संक्षेप करी, शुचा मात्र संमाल ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४२ की ॥

(ढाम मूंजादिक नीं डोरी ० ए देशी)

पांच सौ मण चणा पिछाण, पंच सिख्यां हेत
ते जाण १ डोकरा ने चणा सेर दीधूं, पीस पोय
जल सूं तृप्त कीधूं २ ॥ १ ॥ आखा पजुसणा में
न्हाल, चौड़े परम्परा थित चाल ३ माता वेश्या ने तें
जल पांयो, पाप छै पिण सरीखा न थायो ॥ २ ॥
तिम श्रावक कसाई न सरिषो, पाप सुणी कोई मत

भिड़को ४ ॥ चदर ले गयो तसकर एक एक दीधी
 प्रायश्चित्त क्णिण रो संपेख ५ ॥३॥ थारा घणी रो नाम
 नाथू होय, कहै क्याने नाथू हुवै सोय ६ मूला दियां
 काई हुवे त्यांने, पूछ्यो अमरसिंघजी रा साधां ने
 ॥ ४ ॥ पड़िया तसकर ने आफू खवायो, ते तो सेठ
 नो बैरी छै तायो ८ खेत पाकां करसणी रे बालो,
 तिण रो रोग मेठ्यां फल म्हालो ६ ॥ ५ ॥ ममता
 उतरो कहै प्रसिद्धि, दश बीगा खेती क्णिणने दीधी
 १० सावज दानरा तू करै त्याग, म्हाने भांडवा ने के
 वैराग ११ ॥ ६ ॥ जल लोटो संपजो म्हारे हाट, ज्युं
 पुन्य कहै सांनो रे वाट १२ पड़िमाधारी ने दियां सुं
 होय, लेणवाला ने ते अवलोय १३ ॥ ७ ॥ कोई
 काचो पाणी क्णिणने पावै, कोई पारकी खाई लुटावै ।
 ४ धन दियो अत्रतीने ताहि, लाय मां सुं न्हाख्यो
 लाय मांहि १५ ॥ ८ ॥ घृत तम्बाकू ! भेला न मेल,
 ज्युं व्रत अत्रत में नही भेल १६ आंख जीभ औषध
 रो दृष्टन्त, व्रत अत्रत उपर उपजंत १७ ॥ ६ ॥ शोर
 अग्नि न्यारा सुं न नाश, ज्युं व्रत अत्रत जुजूवा तास
 १८ सोमल मिश्री पसारी रे न्यार, व्रत अत्रत जुवा
 विचार १९ ॥ १० ॥ कहै गृहस्थ रो है छन्द, छांदा
 में धूल है मंद २० खांड घृत मेदो खरा होय, ज्युं

चित्त वित — सुजोय २१ ॥ ११ ॥ ॐने ॐगध
जाण ने दियो दान, उत्तर धी मिश्री ि जान ।
२२ आंक थोर रो दूध अशु , २३ वज दया -
कम्पा न शुद्ध २४ ॥ १२ ॥ ल बुम्फ ि मि थापंत,
तो र मा ि न प एकन्त । २५ बले करुणा घणा
री ण, साई ने गो मि ण २६ ॥ १३ ॥
बले उरपुर ने मारे विशेष, तिणमें पिण मिश्र छै
त्यारे लेख २७ । बले टवी बालतो जाण, तिणने
मा ि मिश्र क्युं न ण २८ ॥ १४ ॥ कतल करता
तुर्कादिक ताय, तिण ने मा ि मिश्र त्यारे न य
२६ गायादिक हिंसक जीव सं रे, त्यांने म ि
मिश्र क्युं नहीं रे ३० ॥ १५ ॥ फांसी काढ़े ते
धर्मी कहिवायो, तो थारा गुरु न काढ़े किण न्यायो
३१ चोर ग्यारह में एक छुड़ायो, तिण रो सेठ प्रत्यक्ष
फल यो ३२ ॥ १६ ॥ उरपुर धो उजाड़ रे मांयो,
मन्त्रबादी भाड़ो दे बचायो ३३ धां सुणायो श्री
नव र, ज्ञा में किसो छै उपगार ३४ ॥ १७ ॥
साहुकार नीं हि यां दाय, एक रोवै न रोवै ते जोय ।
कहो धुजो किणने सरावै, संसारी रे मन ण भावै
३५ ॥ १८ ॥ मोहकमसिंहजी पूछयो महाराज,
प गमता लागो किण ज । नारी हर्षे कासीद

निस्ख, तिम शिव मग नो यारे हर्ष ३६ ॥ १६ ॥
 तु वगुण है है ३७ थारो मुंहडो देख्यां
 नर्क जाय ३८ ताकड़ी डांडी रो दृष्टान्त ३९ कहै
 उघा भणी वादन्त ४० ॥ २० ॥ एगोली सीरा सूं
 शोभाय ४१ एक भांगां पांचूं वि आय ४२ करो
 थानक म्हे कद ख्यो ४३ रो करो माई न
 दाख्यो ॥ २१ ॥ खरी मुक्त करो गाई । डावरे
 कद क गो थो ताहि ४४ जति रो उपासरो कहाय,
 मथेड रे पोशाल है ताय ४५ ॥ २२ ॥ झालर सुण
 स्वान रुदन करन्त, विहाव री मुवांरी न जाणन्त ४६
 दुःख नी रात्रि मोटी देखाय, सुख नी रात्रि छोटी
 दीसे ताय ४७ ॥ २३ ॥ गाम रे गोरवे खेती वाही,
 गधान पड्यां तो ते ठहराई ४८ करड़ा दृष्टान्त
 कहो किरण न्याय, रडो रोग फूं जाल्यां न जाय
 ४९ ॥ २४ ॥ गोहां री दाल हुवे नाहिं, अल्प बुद्धि
 न समझे ताहि । ५० ।परी भाषा नहिं गो आय,
 पोते लिख्यो वाच्यो नहिं जाय ५१ ॥ २५ ॥ गौ
 पग डांडी पाखण्ड ग ताहि, जिण माग रस्तो पात
 शाही ५२ पाग चौरी मुदो न पौंचाय, भूठो ठा २
 अटक जाय ५३ ॥ २६ ॥ धां स करायो भोय,
 भाग्यां साध ने पाप न होय । डो वेच नफो लियो

सार ५४ गधु ने त दियो उदार ५५ ॥ २७ ॥
 बैरागी बैराग चढ़ात्रै कसंबो गलियां रंग पमावै
 ५६ कहै म्हे जीव बचावा ए ठागो, चोकी छोड़
 चोखां करवा लागो ५७ ॥ २८ ॥ ऋषपा जिम छै
 तिम राखे, पूरो न पलै पंचम काल भाषे ५८ तेलो
 तीन दिना रो ते काल, हिवड़ां पिण तीन दिवस
 नो न्हाल ५९ ॥ २९ ॥ दीख्या लेऊं पिण आंसू तो
 आय, जमाई रोयां शोभ न पाय ६० बाल विधवा
 देखी लोक रोय, तिण रा म भोग बाँछै सोय ६१
 ॥ ३० ॥ डावरा रे माथे दियां द्वेष, लाडू दियो ते
 राग संपेख ६२ जाटणी रो उदक जाच्यो जाय,
 चारो निखां दूध दे गाय ६३ ॥ ३१ ॥ और गण रो
 थारे मंथ आय, तिण ने दीख्या देई लेवो मांय ६४
 नरक में जाय ए तसु ताणो, पत्थर ने कुवे तले कुण
 आणै ६५ ॥ ३२ ॥ कुण स्वर्ग ले जावे ताय, काष्ठ जल
 पर कुण ठहराय ६६ पइसो डूबै बाटकी तिराय,
 संजम तप सूं हलको थाय ६७ ॥ ३३ ॥ पातरे रंग
 कुंधवा दोहरा, काला लाल दे णां सोहरा ६८
 म्हारे केलु सूं रङ्गवा रा भाव, क । केलु छोड़े किण
 न्याव ६९ ॥ ३४ ॥ कुजागां रा करै ए माथे, एक
 कर्ज मेटे निज हाथे ७० चोर हिंसक कुशीलिया

१. न, त्यांरा १ न दृष्टान्त सुचीन ७२ ॥ ३५ ॥ कीड़ी ने
 कीड़ी जाणें ते ण पण कीड़ी न मति जाण
 ७४ साधु थाका ने गाडे वे ण, किणही गधे वे १-
 रण्यो जाण ७५ ॥ ३६ ॥ पुन्य मिश्र ऊपर गोय,
 किण री एक फूटी कि री दोय ७६ पो री
 खो १ दीसां र, देखी हे ने उत्तर उदार ७७
 ॥ ३७ ॥ थोथा चगा री भवारी विख्यात, ऊंदरा रड-
 वड की १री र ७८ कोयलां री रात्र वासण काला,
 वलि आंधा जीमण परु ण बाला ७९ ॥ ३८ ॥ र
 ाढो काढे तार काई, थाने डांडा ही सूभै नाहीं
 ८० वाय वंग घरटी उडै जाय, दोय थाप्यां संजम
 कि ठहराय ८१ ॥ ३९ ॥ एकलडो जीव कहो
 वि ण लेख, त्यांरे लेखे ही चोलडो देख ८२ व
 राख्यां १ परीपह थी भांजै, तो न्न थम रहे
 वि ण जे ८३ ॥ ४० ॥ श्वेताम्बरी शा थी घर
 छांड, तिण सूं राखां छां तीन सुडण्ड ८४ नार्य
 कहै दया ने रांड, रै पूत मा ने भांड ८५
 ॥ ४१ ॥ डाकणियां डरै गारडू आयां, धु ायां
 एडी भय प १ ८६ कडवा पकवान जुर सूं
 कहाय, मिथ्या जुर सूं साधु न सुहाय ८७ ॥ ४२ ॥
 बांधी बाल्यां कि तेजरा तोडै, चारित्र वैराग विण

किम जोड़ै दद दियो रो दृष्टान्त, गुरु
 कुगुरु ऊपर शोभन्त ८६ ॥ ४३ ॥ भेषधारी पिण तप
 रे य, तोटो देवा तो के मिटाय ६० बणी बणाई
 णो रो बात, तिण रा थी त ६१ ॥ ४४ ॥ सूत्र ब छेहड़े हिंस्या थापै, छेहड़े
 मो । मारु ज्यं वि ६२ पत्थर खोस्यां तिणने
 ई होय, तिण रे हाथ तो ते तू जोय ६३ ॥ ४५ ॥
 मा । हरा घर रो नेहतो होय, द्रव्य ध या ने
 हां सोय ६४ ध अ ध ण हो य, नागा
 ढकिया कितरा गाम मांय ६५ ॥ ४६ ॥ बले ण
 देत्राल्यो । हुकार, ण बतावूं करलो विचार ६६
 दियो कुणकां पर पग तीन चार, मी छै पिण
 तिण सूं न प्यार ६७ ॥ ४७ ॥ दियो सेत । ना रो
 द न्त, छिद्र पेही ऊपर दा न्त ६८ हेम पछे-
 वड़ी कहि अधिकाय, तिण ने कठिणसी समभाय
 ६९ ॥ ४८ ॥ शोभाचन्द ने कहा शुभ न्याय, पाषाण
 ने सोनूं न कहाय १०० नेहत मांगो । प किण न्याय,
 सुता ब्राव में मित्र बोलाय १०१ ॥ ४९ ॥ अविनीत
 त्रिया ने पिछाण, विनीत साधु ऊपर जाण १०२
 क । संखेप थी ल्य मात, पाछै वर्णावी गली
 बात ५० चौपी विनीत अविनीत री तास, । सरे

तिण सू हेतु पचास । ते इक तालोमी ढाल में आख्या,
 तिण कारक इहां न भाख्या ॥ ५१ ॥ इत्यादिक कहा
 हेतु अनेक, पूरा कहा न जाय विशेष । हुवा भिक्षु
 उजागर ऐसा, १५ त कालमें श्रीजिन जैसा ॥ ५२ ॥
 तसु भजन चिंतामण रखो, त्यज पारश भिक्षु
 परखो, । म्हारे प्रब भाग्य माण इणकाल व-
 तरिया आण ॥ ५३ ॥ नित्य स्मरण कर नर नार,
 सुख सम्पति कारण । र । दुः दोहग टालणहार,
 इह भव परभव सुखकार ॥ ५४ ॥ निर्मल ज्ञान नेत्रे
 करी निरखो, पूज भिक्षु विविध कर परखो । वर
 पूरो है तसु विश्वास, अति बंछत पूरण । श ॥ ५५ ॥
 बयालीसमी ढाल विमास, शुद्ध दूजो खण्ड सुप्रकाश ।
 स्वामी जय श करण सुहाया, व. भाग बले
 भिक्षु पाया ॥ ५६ ॥

॥ कलुञ्ज ॥

न्त. वारु धिक । रु, स्वामनाज सुहा णा ।
 भत्र उदधि तारण जग उच्चारण, ष भिक्षु रति-
 यामणा ॥ वृद्धि म्पति दमन दम्पति, ध्रम
 भंजन अति भलो । हद छि हि । गर सुमंति । गर
 नमो भिक्षु गुण नि गो ॥ १ ॥

तीय ख ।

सोरठा ।

आख्यो द्वितीय खण्ड रे, अ सि मा उ सा प्रणम ।

मुनि वर्णन महिमण्ड रे, तीजो खण्ड निसुणो तुम्हें ॥१॥

बैणीरामजी स्वामी कृत ।

॥ दोहा ॥

चारित्र लीघो चूप सूं, पालण्ड पन्थ निवार ।

भविष्यण रे मन मांनता, हुवा मोटा अणगार ॥ १ ॥

उदै १ पूजा कही, समण निग्रन्थ नी जाण ।

तिण सूं पूज प्रगट थया, ए जिन ण ॥ २ ॥

तो आछी कही समण निग्रन्थ ने श्रीकार ।

चौरासी अति दीपनी, सूत्र अनुयोग द्वार मफार ॥३॥

बले दशमा अंग अधिकार में, कही तीस उपमा तंत ।

समण मिश्रु ने शोमती, साख गया भगवंत ॥ ४ ॥

बले षटदश उपमा, बहु श्रुतिने श्रीकार ।

उतराध्ययन इग्यार में, श्री वीर कह्यो विस्तार ॥ ५ ॥

इण अनुसारे ओलखो, मिश्रु ने मली मंत ।

उपम गुण आछा घणा, त्यांरो पार न कोई प ॥६॥

गुणवन्त गुरु ना गुण गांवतां, तीर्थङ्कर नाम गौत बन्धाय ।

हिवै उपम सहित गुण वर्णवूं, ते सुणयो चिचलाय ॥७॥

॥ ढाल ४३ मी ॥

(हरिया ने रंग भरिया जी निला जिन निरखूं नैन सूं पदेशी)

आदिनाथ आदेश्वरजी, जिनेश्वर जग तारण
गुरु, धर्म आदि काढी अरिहन्त । इण दुपम आरै
कर्म कटिया जी, प्रगटिया आदि जिणन्द ज्यूं, ए
इचरज अधिक आवन्त ॥ श्याम वरण अति सोहैजी.
मन मोहै नेम जिणन्द ज्यूं, ज्यांरी घाणी अमोय
समान । भवियण रे मन भायाजी, चित्त चाह्या
तीरथ चा रमां. मुनि गुण रत्तारो ख्वाण ॥ साधभिक्खु
सुखदायाजी मन भाया भवियण जीवने ॥ १ ॥
कालवादी आदि जाणीजी मत आणी मार्ग उथापवा,
कुवर्ध्यां केलविया कूड़ । अे पाखण्ड घोचा पांचाजी
काईं ज्ञान करी गिरवा मुनि, चरचा कर क्रिया चक-
चूर ॥ साध० ॥ २ शंख उज्वल श्रीकारीजी, पयधारी
दोनूं दीपतां, नहीं विगडै दूध लिगार । ज्यूं थे तप
क्रिया कीधो जी, कर लीधो आतम उजली, पय
दश यति धर्म धार ॥ ३ ॥ कंबोज देश नो घोड़ो
जी, अति सोरो करै सिरदार ने, नहीं आणै
अहिल लिगार । ज्यूं भवियण ने थे ताखाजी,
उताखा पार संसार थी, सूखे जासी मोख मभार ॥
४ ॥ शूर शिरामण साचोजी, नहीं काचो लड़ता

कटक में, सुवनीत अश्व असवार । ज्युं कर्म कटक
दल दीधो जी, जश लीधो जाभो जगत् में, चढ़
सूत्र अश्व श्रीकार ॥ ५ ॥ हाथी हथयया परवारै जी,
बल धारै दिन २ दीपतो, बधै साठ वर्ष शुद्ध मान ।
ज्युं तयाली वर्ष लग जाभाजी, तप ताजा तेज तीखा
रहा, प्राक्रम पिण परधान ॥ ६ ॥ बृषभ सिंह खन्ध
भारो जी, सिरदारी गायां गण मफे, थेट भार बहै
भली भन्त । ज्युं थे गण भार थेट निभायाजी, चलाया
तीरथ चूप सूं, सहु साधा में शोभन्त ॥ ७ ॥ सिंह
मृगादिक नो राजाजी, तप ताजा दाढ़ा तेज सूं,
जीव न जीपै जोय । ज्युं आप केशरी नो परै गुंज्या
जी, धूज्या पाखण्डी धाक सूं, थाने गंज सक्यो नहीं
कोय ॥ ८ ॥ वासुदेव बल जाणोजी, बखाणयो वीर
सिद्धन्त में, शङ्ख चक्र गदा धरण हार । थारा ज्ञान
दर्शन चारित्र तीखाजी, नहीं फोका त्यांकर तेज सूं
पूज्य पाखण्ड दियो निवार ॥ ९ ॥ आखा भरत नो
राजाजी, अति ताजा सेन्या सभ करो, आणै बैखां
नो अन्त । थे पाखण्ड सहु ओलखायाजी, हटाया
बुध्य उत्पात सूं, तत्र बताया तन्त ॥ १० ॥ शकेन्द्र
सिरदारी जी, बज्रधारी सुर में शोभतो, जचादिक ने
जीपै जाण । जिम सूत्र बज्र श्रीकारीजी, बल धारी

बुध्य उत्पात्त सं, पूज्य पाड़ी पाखण्ड री हाण ॥११॥
 आदित्य उग्यो आकाशेजी विणाशे तिमिर तेज सं
 अधिको करै उद्योत । ज्युं थे अज्ञान अन्धारो मिटा-
 योजी, बत्तायो मारग मुगत रो, घण घट घाली जोत
 ॥ १२ ॥ चन्द सदा सुखकारीजी, परिवारी ग्रह ना
 गण मक्के, सोमकारी सोभन्त । ज्युं चार तोरथ
 सुखदायाजी, मन भाया भवियण जीव रे, भिक्खु
 भला जश्वन्त ॥ १३ ॥ लोक घणा आधारीजी, अति
 भारी धानांकर भस्यो, ते कोठागार कहाय । ज्युं
 ज्ञानादिक गुण भरियाजी, परवरिया पूज्य प्रगट
 थया, आधार भूत अथाय ॥ १४ ॥ सर्व वृत्तां में अति
 सोहैजी, मन मोहै दीसै दीपतो, जम्बु सुदर्शण
 जाण । ज्युं सन्ता में सिरदारी जी, मतभारी भिक्खु
 भरत में उपना इचरजकारी आण ॥ १५ ॥ सीता
 नदी सिरै जाणीजी, बखाणी वीर सिद्धन्त में, पांच
 सै जोजन प्रवाह । ज्युं तप तेज अति तीखाजी,
 नहीं फीका रह्याज फावता, सदाकाल सुखदाय ॥१६॥
 मेरु नी उपमा आछीजी, नहीं काची कही कृपालजी,
 ते ऊंचो घणुं अत्यन्त । औषध अनेक छाजेजी,
 बिराजै गुण त्यांमें घणा, ज्युं अ बहुश्रुति बुद्धवन्त
 ॥ १७ ॥ स्वयंभूरमण समुद्र रुड़ोजी, पूरो पाव राजु

पिहुलो कह्यो, प्रभूत रतन भरपूर। सागर जेम
गम्भीराजी, शूरा वीरा गुण कर गाजता, सूत्र चरचा
में शूर ॥ १८ ॥ ए षटदश उपम आछीजी, काई
सांची सूत्र में कही, बहुश्रुति ने श्रीकार । इण अनु-
सारे जाणोजी, पिछाणो करल्यो पारीखा, भिवखु
गुण भगडार ॥ १९ ॥ उपमा अनेक गुण छाज्याजी,
त्रिराज्या गादी वीर नी, पूज्य पाट लायक गुण प ।
समुद्र जेम अथागाजी, जल थागा जिन कह्यो नहीं,
ज्यं पूरा केम कंहायं ॥ २० ॥ पाट लायक शिष्य
भालीजी सुहाली प्रकृति सुन्दरु, भारमलजी गहर
गम्भीर । पदवी थिरकर थापीजी, । आपी आचा-
रज तणी, जाण सुविनीत धीर ॥ २१ ॥

दोहा ॥

भाग बली भिवखु तणै, सन्त हुवा गण मांहि ।

घर्जन संक्षेपे पवर, आखूं घर रछाहि ॥ १ ॥

केयक पण्डित मरण कर, कीधो जन्म कल्याण ।

कर्म जोग केइयक रलया, सुणज्यो चतुर सुजाण ॥ २ ॥

बडा संत भिवखु थकी, जनक सुतन घर जोड़ ।

पिता स्वाम थिरपाल जी, फतेचन्द सुत मोड़ ॥ ३ ॥

बडा टोला में था विहुं, राख्या बडा सुरीत ।

सरल भद्र विहुं श्रमण शुद्ध, पूरी तसु प्रतीत ॥ ४ ॥

तपसी तप करता विहुं, शीत उष्ण वरसाल ।

बड़ वयरागी विनय घर, रुडा मुनि ऋषपाल ॥ ५ ॥

निर अहङ्कारी निर्मला, निरलोभी निकलङ्क ।

हलुआकर्मो उपधि करे, आर्जव उभय अबङ्क ॥ ६ ॥

सीतकाल अति सीत सहै, पछेवडी परिहार ।

जन निशि देखी जाणियो, ए तपसी अर ॥ ७ ॥

कोटे आप पधारिया, महिपति आवण हार ।

मल ने ते बिहुं, तत्क्षण कियो बिहार ॥ ८ ॥

निज आतम तारण निपुण, धारु वेपरवाह ।

तप मुद्रा तीखी घणी, कि एक शिवपद चाह ॥ ९ ॥

॥ दा ४४ की ॥

(राणी भालै हो दासी सामल बात० ए देशी)

सन्त दोनूँ हो शोभै गुणवन्त त २ त्यांसूँ
 गीत पूर्ण भिक्खुणी । भिक्खु सेती हो ज्यारे पूर्ण
 प्रीत २ गुण ग्राही तम धणी ॥ १ ॥ पद । य
 हो भिक्खु वृद्धि ना भण्डार २ न बहु दे तां शुक्ति
 सूँ । आप मूकी हो पद नो हंकार २ रजोरी
 वन्दना करै भक्ति सूँ ॥ २ ॥ किण टोला हो तुमे
 सन्त कहिवाय २ इण विध हो पूछै णा । मान
 मूकी हो बोलै बिहुं मुनिराय २ म्हे भी णजी रा
 टोला तणा ॥ ३ ॥ रचा हो नि कोई
 पूछन्त २ तो न्त दोनूँ इ भ ता । भिक्खु खै
 हो तेहिज जाणज्यो तन्त २ रूढ़ी आ ता भिक्खु नी

राखता ॥ ४ ॥ म्हाने तो हो पूरी खबर न कांय र
 भी एजी ने पूछी निर्णय करो । शुद्ध जाणो हो
 तेहिज सत्यवाय २ प्रगट कहै इम पाधरो ॥ ५ ॥
 त्यांरा तपनो हो अधिको विस्तार २ कायर सुण कम्पे
 घणा । ति पामै हो शूरा हर्ष अपार २ सन्त दोनूई
 सुहावणा ॥ ६ ॥ संजम पाल्यो हो बहु वर्ष श्रीकार
 २ विचरत बरलू आविया । धर्म मूर्ति हो ज्ञानी महा
 गुण धार २ हलुकर्मी हर्षाविया ॥ ७ ॥ शुद्ध तपस्या
 हो फतेचन्द्रजी सेंतीस २ अत्रिक कियो तप आकरो
 बारु करणी हो ज्यांरी त्रिश्वाबीस २ चान्ति गुणे मुनि-
 वर रो ॥ ८ ॥ पिता दीधो हो तसु पारणो णि २
 ठगडी घाट बाजरी तणी । फत करले हो पारणो
 पहिचाण २ सरल पणे कहै सुत भणी ॥ ९ ॥ निर-
 ममती हो सुत सन्त निहाल २ प्रगट पथ्य कियो
 पारणो । कर गयों हो तिण जोग सँ काल २ सुमति
 जन्म सुधारणो ॥ १० ॥ एकतीसे वर्ष हो सम्बत
 ठार २ फतेचन्द्र फते कर गया । निरमोही हो तात
 निमल निहार २ थिरचित संजम अति थया ॥ ११ ॥
 मुनि आयो हो रेवा शहर माहिं २ संलेखणा
 मण्डिया सही । चिहुं मासे हो पारणा चित्त चाहि २
 आसरै चवदे किया वही ॥ १२ ॥ थिर चित्त सँ हो

मुनिवर थिरपाल २ वर्ष वतीसे विचारियो । कर
 तपस्या हो मुनि कर गयो काल २ जीतव जन्म
 सुधारियो ॥ १३ ॥ जोड़ी जुगती हो तात सुतन
 जिहाज २ स्वाम भिक्षुरा प्रसाद थी । परिडत मरणो
 हो ओतो भवदधि पाज २ पाम्या हे पर्म समाध थी
 ॥ १४ ॥ सखरी भापी हो चमालीसमी ढाल २ स्वाम
 भिक्षु गुण सागर । वारु करवे हो जय जश सुवि-
 शाल २ अधिक गुणारा आगरु ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

समत अठारह वतीस में, भिक्षु बुद्धि भण्डार ।

प्रकृति देख साधु तर्णी, लिखत कियो तिणवार ॥ १ ॥

सहु साधने पूछने, बांधी इम मर्याद ।

सुखे संजम पालण भणी, टालण क्लेश उपाधि ॥ २ ॥

पद युवराज समापियो, भारीमाल ने जाण ।

सर्व साध ने साधवी, पालज्यो बांरी आण ॥ ३ ॥

भारीमालजी री आज्ञा थकी, विचरवो शेये काल ।

चौमासो करिवो तिको, आज्ञा ले सुविशाल ॥ ४ ॥

दीक्षा देणी अवर ने, भारीमाल रे नाम ।

पिण आज्ञा लीयां बिना, शिष्य न करणो ताम ॥ ५ ॥

इच्छा हुवे भारीमाल री, शिष्य गुरु भाई सोय ।

पदवी देवे तेहने, तसु आज्ञा अवलोय ॥ ६ ॥

एक तर्णी आज्ञा मझे, रहिवो रुडी रीत ।

एहवी रीत परम्परा, बांधी स्वाम वदीत ॥ ७ ॥

टीकायां लूँ कोई इलै, एक दोय दे भादि ।

धूर्त बुगल ध्यानी हुवै, तिणने न गिणवो साध ॥ ८ ॥
तीर्थ में गिणवो न तसु, छिड़ संघ नो निन्दक जाण ।

एहवा नै वान्दे तिके, आजा वार पिछाण ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४५ मी ॥

(पाइवा बोल म बोल ए देशी)

एहवो लिखत अमाम, सखर मर्याद ही बांधी
स्वामजी । नीचे साधारा नाम, कठिण संजम ने
पालण कामजी ॥ १ ॥ मेटण क्लेश मिथ्यात, थिर
चित्त थापण हो मर्यादा थुणी । वारु बुद्धि विख्यात,
सुगुण सुबुद्धि हो हर्ष पामे सुणो ॥ २ ॥ अपछन्दा
वनीत, दोषण काद्वै हो इण मर्याद में । कुबुद्धि
कहै कुरीत, अवगुण ग्राही हो आत्म असमाधि में
॥ ३ ॥ बिगड़यो पछै वीरमाण, आज्ञा लोप्यां सुं स्वामी
लगो कियो । पाछे कह्यो प्रबन्ध पहिछाण, दर्शण
मोह पिण तिण ने दबावियो ॥ ४ ॥ टो रजी-तन्त-
र, हाजर रहिता हो स्वामी हरनाथजी । न्त
दोनं सु कार, वर जश वारु हो तास विख्यातजी
॥ ५ ॥ भारीमाल ने भाल, पद युवराज पूज समापियो ।
सन्त बड़ा सुविशाल, दम्भ मेटीने हो थिर चित्त
थापियो ॥ ६ ॥ सोम्य मूर्ति सु कार, स्वाम प्रशंस्या
अंत्य समय सही । साभ थो संजम सार, कीर्ति हो

आप मुखे कही ॥ ७ ॥ वगड़ी शहर विशेष, स्वाम
 टोकरंजी हो संथारो लियो । देश हुंढार में देख रे,
 हद्द संथारो हरनाथजी कियो ॥ ८ ॥ स्वाम भिक्खु
 रे प्रसाद, सन्त दोनू हो जन्म सुधारियो । उपजे न
 अहिलाद, स्मरण चो ति सुखकारियो ॥ ९ ॥
 भारीम युवराज, से स्वामी नो अन्त ताई शिरै ।
 पदवीधर भव पाज, एशण आछो वर्ष अठन्तरे
 ॥ १० ॥ लिखमेजो संजम लीध, कर्म प्रभावे गण सू
 न्यारो थयो । पड़िवाई कहो कद सिद्ध, देसुण व
 पुद्द हो उत्कृष्ट जिन कह्यो ॥ ११ ॥ खैरामजी
 सु एड, स्वाम भिक्खु पै संजम आदख्यो । भेष-
 धाख्यां ने छंड, दुद्ध मन सेती यो पवर चरण धख्यो
 ॥ १२ ॥ पारख जाति पिछाण, पारख चि हो थे
 पूर्ण करी । लोहावट ना सुजाण, चरण अराध्यो हो
 पिर चित्त दरो ॥ १३ ॥ धर तप छेहड़े धिन,
 छतीस तेजा चोला में चलता रह्या । अखै दिवाली
 दिन, वर्ष इकसठ्ठे परभव में गया ॥ १४ ॥ रोजी
 छुटक धार, पंच काया थी भवो अनन्त गुणा ।
 भवी थी धिकार, ज्ञानी देवां भाष्या पड़िवाई
 अनन्त गुणा ॥ १५ ॥ सन्त वड़ा सु राम, वासी
 लोहावट ना पोत्यावन्ध सही । मभाया भिक्खु

स्वाम, सुरतरु सरीषो हो चरण जियो सही ॥ १६ ॥
 देव मूर्ति देख, धुनि इर्या नी हो नि धारणा ।
 रु व विशेष, सोम्य प्रकृति सु रमा ॥
 १७ ॥ । र वयाली बा, निर्मल चारि हो
 स्वामी गुण नि तो । सठे वर्ष त्रि स, दिवस
 पचीसे णशण ति भलो ॥ १८ ॥ रु म भिक्खु
 साख्यात, तत्व ओल ई बहुजन रिया । वर्षा-
 विये सुवात. रु म सौभागी महा कारिया ॥ १९ ॥
 समरुं हूं दिन रेण, द ायां सूं हो हिवडो
 उ से । चित्त माहिं पामूं चैन, बंछित पूर्ण तू मुक्त
 मन ब ॥ २० ॥ पांच चाली ती डा, मण
 शोभाया हो भजन बंछित फलै । जय जश रण
 विशाल, रण ति मन चिन्तत मि ॥ २१ ॥

॥ स्तोत्र १ ॥

हुटक तिलोकचन्द दे, घासी चेलात्रासरा ।

चन्द्रभाण कर फन्द दे, जिलो बांध ने फटाविया ॥ १ ॥

मौजीराम गण माहिं दे, शुद्ध मन सूं संजम लियो ।

कर्मा दियो धकाय दे, ते पिण हुटक जाणज्यो ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शिवजी. स्वामी शोभता, स्वाम तणा सुवनीत ।

पण्डित मरण कियो पवट, गया जमारो जीत ॥

॥ सौर १ ॥

जाति चौरद्विया जाण रे, पुरना वासी रि णज्यो ।

चारित्र चन्द्रमाण रे, शुद्ध सूं संजम लियो ॥ १ ॥

म बुद्धि मरभूर रे पिण प्रकृति अहङ्कारनी ।

अविनय अवगुण भूर रे, आज्ञा कठिण आराधवी ॥ २ ॥

जिलो वांधियो जाण रे, तिलाकचन्द सूं तुरत ही ।

में अधिको मान रे, साध फंटाया अघर ही ॥ ३ ॥

संत अघर समभाय रे, स्वाम भिक्खु सिंह सारिपा ।

एक २ ने ताहि रे, छोड्या विहुं ने लु जूआ ॥ ४ ॥

अवगुण अधिक अजोग रे, त्यां वोल्या भिक्खु तणा ।

प्रत्यक्ष कपाय प्रयोग रे, असाध प्रकृष्या स्वाम ने ॥ ५ ॥

भिक्खु बुद्धि भण्डार रे, शुद्ध मन सूं भाविपा ।

प्राश्चित कर अङ्गीकार रे, पाछा आया गण मुझे ॥ ६ ॥

सहु ने किया निशङ्क रे, आया डंड अंगीकरी ।

विरुओ यामें बंक रे प्रत्यक्ष लोकां पेखियो ॥ ७ ॥

धमणी संत समाघ रे, किण ने डंड न टहरावियो ।

सहु ने कहा असाध रे, त्यांराहिज पग वांदिया ॥ ८ ॥

मान घणो घट माहि रे, विगडी तिण सूं वातडी ।

प्राश्चित नहीं ले ताहि रे, विहुं ने साथे छोडिया ॥ ९ ॥

वर्णन बहु विस्तार रे, रास माहि मि रच्यो ।

अल्प इहां अधिकार रे, दाख्यो में प्रस्ताव थी ॥ १० ॥

अणन्दे वि विचार रे, संथारो कौघो सही ।

चौविहार रि धार रे, गाम विठौरै पूज्य गण ॥ ११ ॥

उपनी तृषा अपार रे, सवरै दिन सूं निरुसो ।

सेणा करै संथार रे, तिण सूं पहलां तोल ने ॥ १२ ॥

पनजा बुद्धक पेव रे, संतोकचन्द शिवराम ने ।

कन्दमागजी देव रे, दोनूं मजी फटाविया ॥ १३ ॥

केई पोते हुआ न्यार रे, केईका ने दूरा किया ।

मरुडन्दा अन्वधार रे, त्यानि चारित्र दोहिलो ॥ १४ ॥

॥ ढाल ४६ मी ॥

(करकसा नार मिर्ठीः प देशी)

नीत निपुण नगजी नी निर्मल, कुड़यां जा बस-
वान । संयारो कर कारज साखो, कियो जनम
किल्याण ॥ सुवनीत शिष्य आय मिल्या । धन्य २
हो भिक्खु थांरा भाग्य, सुखदाई शिष्य आय मिल्या
॥ १ ॥ स्वाम राम बुन्दी ना वासी, जाति भावकी
जाण । जुगल जोडले दोनूं जाया, सोन्य भद्र सुवि-
हाण ॥ सु० ॥ २ ॥ करि मनसोवो आया कैलवे, पूज
भिक्खु पै ताप । आज्ञा राम भणी आपी ने, संजम
दिरायो स्वाम ॥ ३ ॥ इह अवसर में श्रीजी द्वारे,
साह भोपो सुत सार । नाम खेतसो निर्मल नीको,
धयो संजम ने त्यार ॥ ४ ॥ दोष व्याह पहिली कर
दोधा, तीजो करता त्यार । उत्तम जीव तसी
अधिको, इणरे वंछा न लिगार ॥ १ ॥ बहिन दोष
राबलियां ग्याही, जाय तिहां किए वार । वेन वनोई
न्यातीलां ने, समझावें सुत्रकार ॥ ६ ॥ विणज करत
मुख जयणा विधु सं, वर वैराग बधाय । चित्त चारित्र

लेवा चढ़तो, आज्ञा मांगी नहीं जाय ॥ ७ ॥ इसा
 विनीत तात ना अत्रिका, इतले तिण पुर माहीं ।
 संजम ले रंगुजी सती, सांभल्या भोपै साह ॥ ८ ॥
 भोपो साह कहै खेतसी भणी रे, चित्त तुम्ह लेण
 चरित्र । कहै खेतसी वेकर जोड़ी, मुम्ह मन अधिक
 पवित्र ॥ ९ ॥ आज्ञा हर्ष धरी ने आपी । बदै भोपो
 साह — । रं जी भे । करो रे, इणारा महोखव
 अधिकाय ॥ १० ॥ इतीसै संजम । दरियो, भिक्खु
 प रे हाथ । विहार की ठारे । रै तो
 गयो तात ॥ ० ॥ ११ ॥ भिक्खु पूछ्यां । त
 जोगी भाखै, म चिन्ता किम मोय । पहिली उवे
 व मिलिया, य विरह पड़्यो नहीं कोय ॥
 सु० ॥ १२ ॥ पर विनीत खेतसी प्रगट्या, स्वा भणी
 सुखकार । कार्य भलायां वेकर जोड़ी, तुर्त करण ने
 त्यार ॥ सु० ॥ १३ ॥ को ठिन वचन करि
 भिक्खु, दी दिये सुखकार । चान्ति हर्ष र धरै
 खेतसी, तहत वचन तंतसार ॥ १४ ॥ हर्ष धरी रहै
 भिक्खु हाजर, न्तरंग प्रीत पार । सेव री
 रिम्हा स्वामी, सो जाण ति या तंतसार ॥ सु० ॥ १५ ॥
 तयुग रिपा कृत विनय सूं निमल सतजोगी
 नाम । गण । धार खेतसी गिरवो, सरायो भिक्खु

स्वाम ॥ सु० ॥ १६ ॥ तजुगी चरित्र हीं छै
सगलो, विवरासुध विस्तार । इहां संक्षेप करी ने
ख्यो, त वणन माहिं सार ॥ ० ॥ १७ ॥ पांच
पांच पवर थोकड़ा, बर कि बोहली बार ।
उत्कृष्टो दिव अठारह, एकटक उदक र
॥ सु० ॥ १८ ॥ उभा रहिवारी तपस्या ति, ए
पहोर उन्म । जे बहु जाणज्यो रे, तसी
जी गुण ण ॥ ० ॥ १९ ॥ सीत उष्ण मुनि सह्यो
धिको, क घ सुखकार । स्वाम जुगी
मं रे, वै हर्ष पार ॥ ० ॥ २० ॥ तजुगी
त । प्रसंग थी रे, धिक हुवो उपगार । वे बहिन
एजे रित्र लोधो, ते आगे चलसी विस्तार
॥ ० ॥ २१ ॥ ॥ वर्ष वीस मी नी सेवा, छेहड़ा
विचार । भारीम नी छेह भक्ती, रे
वर्ष ठार ॥ सु० ॥ २२ ॥ ले णा छेहड़े री
सखरी, स रोई संथार । भि भारी पछै पर-
भव में, सीये वर्ष उदार ॥ ० ॥ २३ ॥ भिक्
स्व प्रसाद थी रे, तजुगी जम भार । पछै
स्वामजी संजम पचख्यो, गो भिक्खु तणो उप र
॥ सु० ॥ २४ ॥ भिक्खु भांज्या म घणारां, भिक्खु
भव-दधि पाज । भिक्खु दीपक भरत क्षेत्र में, जगत

उद्धारण जिहाज ॥ सु० ॥ २५ ॥ भाग वले भिक्षु
 व भारी, शिष्य मिलिया सुवितीत । भिक्षु याद
 वै निशदिन मुक्त, परम भिक्षु संप्रीत ॥ मु० ॥ २६ ॥
 पवर ढा कही छयाली मी, तजुगी नो विस्तार ।
 सेव रै स्वामी नो खरी, जय रण उदार
 ॥ सु० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

साम साधु सरल, संता ने सुकदाय ।

भद्र प्रकृति भारी घनी, नीत निपुण नरमाय ॥ १ ॥

धर्म पसठे उपवास में, भिक्षु पाछे भाल ।

पाली में परभव गया, निर्मल साम निहाल ॥ २ ॥

ऋषि रलियामणा, इन्दुगढ़ में भाय ।

चोला में चलता रखा, सितरे धर्म ताय ॥ ३ ॥

देवगढ़ दीक्या ग्रही, संभुजी सुविचार ।

वार २ शङ्का पड़ी, छोड़ द्वियो तिण वार ॥ ४ ॥

तो पिण गण धारे छतो, करै साधां नी सेव ।

साध आहार आण्यां पछै, आपल्यावै नित्यमेव ॥ ५ ॥

पीत मुनि थी अति पवर, मुनि जिण गामार ।

आधै दर्शन करण कं, पिण शङ्का थी हुवो खुवार ॥ ६ ॥

संघजी थो गुरो, लियो चित्त चाहय ।

शिरियाली में नीकल्यो, दुधर दिखाय ॥ ७ ॥

तदनन्तर संजम लियो, बगल्या बोहरा जोय ।

एक चालीसै आसरे, न ही सोय ॥ ८ ॥

स्वाम भिक्षु पाछे सही, एकोतरे अवलौय ।

तेला में च । रखा ध्यान में जोय ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४७ मी ॥

(परम गुरु पूज्यश्री मुक्तप्यारा रे पदेशी)

नानजी पछै चरण निहालो रे, नि नेम मोटो
गुणमालो रे । सी रोयट नो सुविशालो ॥
राय ने नित्य वन्दो रे ॥ १ ॥ पवर चर्ण भिक्षु से
पायो रे, स बहु वर्ष गोभायो रे । नि जिन
शासन दीपायो ॥ भिक्षु शिष्य शोभ नित्य
वन्दो रे ॥ २ ॥ शहर नैणवे कियो थारो रे,
भवसाथर नो पारो रे । ओ तो भिक्षु तणो उपगारो
॥ ३ ॥ तदनन्तर वर्ष चमालो रे, बेणीरामजी वि
विशालो रे । निकलंक चरण चित्त निहालो ॥ ४ ॥
दीरुया भीखणजी स्वामी दीधो रे, डी
रा प्रसिद्धि रे । मुनि गण माहिं गोभा तीधी ॥ ५ ॥
हुवो बेणीराम वि नीको रे, प्रबल परिडत चर
वादी तीखो रे । मुनि लियो सुजश नो टीको ॥ ६ ॥
वारु व चत सखर व णो रे, सखर हेसु दृष्टान्त
सुजाणो रे । भर्त में प्रगळ्यो जिम भाणो ॥ ७ ॥
हद देशना में हुंशि रो रे, गोताने गो ि
प्यारो रे नि माहें पामै चमत्कारो ॥ ८ ॥
म देश ज यो रे, गडी सूं चर र तायो
रे । बहु जनने लिया समझायो ॥ ९ ॥ त्यांरी धा

सू पाखण्ड धूजै रे, वेणीराम केशरी : जिम गंजै रे ।
 प्रगट हलुकर्मी प्रतिबुजै ॥ १० ॥ उत्पत्तिया है बुद्धि
 उदारो रे, समझाया घणा नरनारो रे । हुबो जिन
 शासन शिणगारो ॥ ११ ॥ घणा ने दियो संजम
 भारो रे, धर्म बुद्धि-मूर्त्त सुखकारो रे । ए तो भिक्षु
 तणो उपगारो ॥ १२ ॥ कीधो स्वाम भिक्षु पछै
 कालो रे, शहर चासटु में सुविशालो रे । संवत अठा-
 रह सितरे निहालो ॥ १३ ॥ भिक्षु तास्या घणा नर-
 नारो रे, भवितारक भिक्षु विचारो रे । स्वामी . जय
 जश करण श्रीकारो ॥ १४ ॥ सेंतालीसमी ढाल सुहायो
 रे, भिक्षु शिष्य मोटा मुनिरायो रे । स्वाम संग परम
 सुख पायो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अघसर कोटा तणा, दीनतरामजी देन ।

माया तसु टोळा थकी, सन्त च्यार सुविशेष ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

दोय रूपचन्द देन रे, वाढ ऋष घर्दमानजी ।

सूरतोजी सपेन रे, स्वाम गणे संजम लियो ॥ १ ॥

रूपचन्द बहुमान रे, छूटो तेह प्रयोग थी ।

प्रकृति अजोग पिछाण रे, सूरतो विण छूटक थयो ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

बड़ा सन्त बर्द्धमानजी, संजम सरल सुधार ।

बिचारत २ भाबिया, देश बूँदाइ मझार ॥ २ ॥
लू रा कारग थी लियो, मारग में संथार ।

सम्बत् अठारह पचावने, लीघो संजम भार ॥ ३ ॥
लघु रूपचन्द स्वामरण, माघोपुर रे माहि ।

अग्रश्या रो बंधो कियो, बेणीरामजी पाहि ॥ ४ ॥
पछै प्रणाम कचा पड़्या, बोल्यो पहवी वाय ।

हू थारे नहीं काम को, रत्न कांकरो थाय ॥ ५ ॥
इम कही ने अलगो थयो, काल किनो इम थाय ।

एक चेलो कीषां पछै, आयो इन्द्रगढ़ मांय ॥ ६ ॥
शिष्य तज कहै गृहस्थां भणो, तन्त सूत्र मुक्त ताम ।

मिक्खु ने बहिरात्रज्यो, मुक्त गुरु मिक्खु स्वाम ॥ ७ ॥
इम कही साध पणो पचख, दियो संथारो ठाय ।

पांच दिनस रे आसरे, परमवे पहोतो जाय ॥ ८ ॥

॥ सौरठा ॥

जति भेष ने जाण रे, मयारामजी भूकियो ।

प्रत्यक्ष ही पहिचाण रे, भेषधासां में भाबियो ॥ ३ ॥
भेषधारी ने छंड रे, संजम लोघो स्वाम पे ।

बहु वर्ष चरण सुमण्ड रे, नि कालवादी थयो ॥ ४ ॥
विगतो नाम बिचार रे, वासी बोरवइ तणो ।

संजम छे सुसकार रे, कर्म प्रमावे नीकल्यो ॥ ५ ॥

१ ४८ मी

(बाजोट पर नहीं बैसणो मुनि पग ऊपर पग मेल० पद्वेशी)

तदनन्तर टूंगचनावासी, सुखजी सु कार ।
 स्वाम भिक्खु पे संजम लीधो आणी हर्ण अपार रा ॥
 भिक्खु स्वाम उजागर परा सुविनीत शिष्य
 जिन मार्ग जमायो रे ॥ सुगुणा परम पूज रे
 प्रसंग सुज्ञानी जयजश द्यायो रे ॥ १ ॥ भिक्खु स्वाम
 पछे चौसठै कांई हर देवगढ़ सार । अणशण कर
 आतम उजवालियो तो शुद्ध दश दिन संधार ॥ २ ॥
 वर्ष तेपने शिरियारी वासी, हेम आछा हद जाति ।
 संजम स्वाम समाप्यो सुवणन, हेम नवरसे विख्यात
 ॥ ३ ॥ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि गला, स्वामी हेम खर
 सुविनीत । बल बुद्धि पुन्य पोर १, कांई पूर्ण पूज्य
 सूं प्रीत ॥ ४ ॥ परम विनयवन्त परखिया, वारु बुद्धि
 भारी सुविचार । हंद कियो सिंघाड़ो हेम नो, भारी
 ज्ञानी गुणारा भरडार ॥ ५ ॥ हेम सुनि हिया
 तणा, अरु हेम स्वामी हितकार । हेम सुमति
 गरु, अरु हेम गुप्ति गुण र ॥ ६ ॥ हेम दिस
 दीपतो, मुनि हेम मोटो महाभाग । हेम उजागर
 ओपतो वर हेम हिये वैराग ॥ ७ ॥ हेम र्या धुनि
 ओपती, गति जाणै चाल्यो गजराज । हेम गर

गहरा घणा, ओ तो हेम गरीब निवाज ॥ ८ ॥ हेम
 दया दि में घणी, . त दत्त हेम सधीर । हेम
 शील हीं रम रह्यो, रु कर्म काटण बड़वीर ॥९॥
 हेम ग रहित रतरु काई हेम मेरु जिम धीर ।
 हेम चिन्तामणि ।रीषो, गो तो हेम जाणै पर
 पीर ॥ १० ॥ न्दर द्रा हेमनी, रु तिश्य
 कारी ऐन । पेखत चित्त प्रत हुवै, चित्त माहें पामै
 चैन ॥ ११ ॥ सम्बत् अठारह सै तेपने पछै, धर्म
 वृद्धि अधिकाय । बंक चुलिया में बारता आतो
 प्रत्यक्ष मिली इहां आय ॥ १२ ॥ बारह संत तो आगै
 हुंता काई स्वाम भिक्खु पै सोय । हेम हुवा संत
 तेरमा, त्यां पछे न घटियो कोय ॥ १३ ॥ भागवली
 भिक्खु तणो, शिष्य हेम हुवा वृद्धिकार । एही
 पग मांडै नहीं, पड़ै हेमनी धाक अपार ॥ १४ ॥ चौथे
 रे सांभल्या, एतो चमा शूरा अरिहन्त । प्रत्यक्ष
 रे पञ्चमे, एतो हेम सरीषा सन्त ॥ भि० ॥ १५ ॥
 भिक्खु भारीमाल बराय रे, बर्तारा में हेम बदीत ।
 चर्चा वादी शूरमा, लिया घणा पाखण्ड्यां ने जीत
 ॥ भि० ॥ १६ ॥ घणा जणा ने संजम दियो, देश
 ब्रत घणानें सुखम्भ । बहु भणायो पंडित किया, हेम
 जिन शासन रो थम्भ ॥ भि० ॥ १७ ॥ हेम नवरसा

में कह्यो, वर हेम तणां विस्तार । ग्रन्थवध तो जाणने,
 इहां संक्षेप्यो धिकार ॥ भि० ॥ १८ ॥ भारी माल
 चलियां पछै, ऋपराय तणे वरतार । उगणीसै चौके
 समै, शिरियारी में न्यार ॥ भि० ॥ १९ ॥ भाग
 प्रव भिक्खु तणा, हुवा सन्त शासण शिणगोर ।
 हेम गजेन्द्र समोगुणी, वलि खं अवरः णगार ।
 भि० ॥ २० ॥ आठ चालीसमी रोभती । खी ढाल
 रसाल । र । स्वाम भिक्खु गण सुर तरु, ो तो
 जय जश करण उदार ॥ भि० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तदनन्तर तपसी मलो, वरः चपलोट विचार ।

प्रासी केलवा नो पवर, उदीराम अधिकार ॥ १ ॥

पचावने पाली मछे, पूज मीखगजी पास ।

श्रावण में संजम लियो, अधिको धर्म उजास ॥ २ ॥

अति उमंग तप आदसो, वर आंघरु बद्धवान ।

चयालीस ओली लगे, चन्द्रोज चहुते ध्यान ॥ ३ ॥

अवर तप क्रांथो अधिक, छुट २ आदि विचार ।

आठ सौ इकतालीस आसरें, आंघल किया उदार ॥ ४ ॥

सांठे स्वाम पछै सही, सखरो कर संथार ।

चेलावाल चलतो रह्यो, भारी माल उतासो पार ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

तदनन्तर तिणघार रे, गुरुशालजी संजम लियो ।

प्रकृति कठिण अपार रे, कर्म जोग थी नीकल्यो ॥ १ ॥

भोटो जाति सोनार रे, घासी कारचिया तणो ।

स्वाम कने समाचार रे, आय कहै रह रीत सुं ॥ २ ॥

अति कायो हुवो बाप रे, आहा दी मुफ इण परै ।

तू मुफ क्यूं दे ताप रे, कर तुफ दाय आवे जितो ॥३॥

म्हारी कानी सुं जाण रे, जोगी जति के हूँदियो ।

इक नर सुणतां कहि बाण रे, स्वामी तब संजम दियो ॥४॥

प्रकृति तणे प्रताप रे, म पालणो दोहिलो ।

कठिन परीबाह ताप रे, छुटो ते तब छिनक में ॥५॥

नायो जी पोरवाल रे, बालो बैसुरी तणो ।

सुत गृह छांडी सार रे, संजम सतरे स्वाम पै ॥ ६ ॥

जीभा लोलपी जाण रे, मुनि बांधी मर्याद ने ।

छुटो तेह पिछाण रे, पिण भ्रदा सनमुख तो ॥ ७ ॥

हा ४६ र्

(जै जै जै गणपति रे नमूं पदेशी)

समत ठारै वर्ष सतावने, गाम रात्रलियां
गुणिये । लघु-वेस ऋषराय दीख्या ली, थिर चित्त
सेती थुणिये, जै जै जै गणपति रे नमूं ॥ १ ॥ बंध
जाति चातुरो साह सुतवर नाम रायचन्द्र नीको ।
वर्ष इग्यारह आसरे वर्ष में, संजम स र सधीको ॥
॥ जै० ॥ २ ॥ हथिणी होदे हर्ष हुओ अति, मातु
कुशलां वारु । साथे संजम पूज समाणयो, चैत्री पुनम
चारु ॥ जै० ॥ ३ ॥ प्रबल बुद्धि गुण पुन्य पेखने,
परम पूज फरमायो । पद लायक ए पुन्य पोरसो,

वचनामृत वरसायो ॥ ४ ॥ दिशावान ऋपराय
 दीपतो, भाग्य बली बुद्धि भारी । हस्तमुखी मूर्ति
 हृद हर्षत, पेखत मुद्रा प्यारी ॥ ५ ॥ पाट तीजे आगंच
 परूण्या, स्वाम वचन सुखदाया । जम्बू स्वाम जैसा
 जैवन्ता. जाभा ठाठ जमाया ॥ ६ ॥ अन्तकाल
 भिक्खु ने अधिको, साभू सखर सुखदाया । भारी
 माल रे पास भुजागल, रायचन्द ऋपराया ॥ ७ ॥
 गुणांतरै वर्ष भारीमाल नी आज्ञा ले अगवाणी ।
 प्रथम शिष्य ऋष जीत कियो, निज पाट लायक
 सुविहाणी ॥ ८ ॥ भारीमाल ने साभू दियो अति,
 अन्त समय अधिकायो । आप ओजागर अधिक
 अनोपम, दीन दयाल दीपायो ॥ ९ ॥ तस उपगार
 तणो वर्णन, करतां अति ग्रंथ विधियो । भिक्खु
 तणो सम्बन्ध इहां, तिण कारण संखेपियो ॥ १० ॥
 संसारी लेखे मामा सतजुगी महा मतिवन्ता । भल
 भाणेज रायचन्द भणिये, जशधारी जैवन्ता । भिक्खु
 ऋष अति भाग बली, शिष्य मिलिया रायचन्द
 नीका । गिरवा गहर गंभीर गुणागर पूज्य, प्रथम ही
 परी ॥ १२ ॥ बहु वर्षां लग मार्ग नी बुद्धि, जिन
 जी गुं जाणी । भिक्खु रे ति भाग्यबली, ऋष-
 राय मिल्या शिष्य आणी ॥ १३ ॥ ऐसा भिक्खु

प उजागर, शिष्य पिण मित्या सरी । तस पय
 खेहडे सन्त हुवा ते, सांभलिये सु द्विका ॥ १४ ॥
 ए गुणपचासमी ढाल अनुपम, मित्यो सन्त मन
 मान्यो । कहिये धर्म बृद्धि नो कारण, जय जश
 ण सुजाययो ॥ १५ ॥

दोहा

समत भठारै सतावने, जेठ मास में जोय ।

पिता पुत्र घर चरण पद, हर्ष घणो अति होय ॥ १ ॥

ताराचन्द्रजी तात सुत डूंगरसी महामण्ड ।

पिता भार्या परहरो, सुतन सगार्द ॥ २ ॥

बड़ बैरागी सन्त बिहुं, सखरो कर संथार ।

मिक्खु स्वाम पळे उभय, समचित्त जन्म सुधार ॥ ३ ॥

अणशण इकत लील दिन, ताराचन्द्र उवेख ।

दश दिन अणशण दीपतो, डूंगरसी ने देख ॥ ४ ॥

तदनन्तर संजम लियो, बरल्या बोहरा ताहि ।

जीवो मुनि तासोल नो, महा मोटो मुनिराय ॥ ५ ॥

सरल भद्र प्रकृते सखर, तीन पाठ नी ताम ।

सेव करी साचे मने, धुन सुविनय में धाम ॥ ६ ॥

मिक्खु भारीमाल पाठे भलो, नेउए वर्ष निहाल ।

गोत्रुं दे अणशण गुणो, महा मुनि गुणमाल ॥ ७ ॥

॥ ल ५० मी ॥

(चेत चतुर नरकह तने सतगुरु परैशी)

जोगीदासजी स्वामो जोरावर, तदनन्तर दि
 त्थागी । स्वाम भीखणजी संजम दीधो, बाल

पेखत ही मुद्रा प्यारी ॥ ६ ॥ बराय तणे वरतारे
रुडो. पंडित मरण मुनि पायो । निनाणूवे आत्म ने
निन्दी, शुद्ध परिणामे शोभ ते ॥ १० ॥

॥ सौरठा ॥

जोगड जाति सुजाण रे, वासी बीदासर तणुं ।

पूज समीप पिछाण रे, भागवन्द भावी करी ॥ १ ॥

वार गुणसठे वासरे, चारित्र घासो चूप सूं ।

वर्ष कितेक विमास रे. कर्म जोग थी नीकल्यो ॥ २ ॥

चन्द्रभाणजी माहि रे, र्हो पञ्च मास आसरे ।

भारीमाल पै आय रे; कहे मुक्त ने ल्यो गण मझे ॥ ३ ॥

है र्हो चन्द्रभाण माहि रे, त्यानि साध न श्रद्धियो ।

थे मोटा मुनिराय रे, साध श्रद्धतो स्वाम गण ॥ ४ ॥

भारीमाल ऋषराय रे, छेद दियो षटमास रो ।

लियो तास गण माहि रे, अवलोकी मि लिखत ॥ ५ ॥

आपां माहिलो जाण रे, जाय चन्द्रभाणजी मन्हे ।

अल्पकाल पहिछाण रे; आहार पाणी भेलो करे ॥ ६ ॥

पिण आपां ने साध रे, श्रद्धे शुद्ध मन सूं सही ।

श्रद्धे तास असाध रे, नवी दीव्या देणी न तसु ॥ ७ ॥

पथायोग वण्ड जाण रे, दे लेणुं तसु गण मन्हे ।

वर्षे सैतीसे बाण रे, लिखत भिक्षु श्रुष नो कियो ॥ ८ ॥

पहवो लिखन अवलोक रे, नवी दीव्या दीधी न तसु ।

छेद दे मेख्यो दोष रे, भारीमाल व्यवहार थी ॥ ९ ॥

पासत्या पास पिछाण रे, आहार आद लेवै देवै तसु ।

निशीथ बीस में जाण रे, डंड चौमासी दाखियो ॥ १० ॥

चौमासी डंड स.न रे, वार वार सैव्यां छतां ।

व्यवहार प्रथम कही बाण रे, चौमासी प्राळित तसु ॥ ११ ॥

इम बहु न्याय विचार रे, बलि मर्याद विमास ने ।
 वारु देख व्यग्रहार रे, हेद देई माहें लियो ॥ १२ ॥
 धीयो कित्तोयक काल रे, फिर छुटक थयो एकलो ।
 इक शिष्य कीधो न्हाल रे, नाम भवानजी तेहनो ॥ १३ ॥
 ढण्ड ले आया माहि रे, तपनो अभिग्रह आदसो ।
 नायो पालणी ताहि रे, तिण कारण थयो एकलो ॥ १४ ॥
 काल क्रेतोक वदीत रे, फिर आयो भारीमाल पै ।
 सन्त सत्यां ने मुरीत रे, कर जोड़ी बंदना करी ॥ १५ ॥
 बोले बेकर जोड़ रे, मुझ ने लेवो गण मझे ।
 अड़ी द्वीप ना चोर रे, त्यां सूं हूं अधिको घणो ॥ १६ ॥
 छठ २ तप पहिछाण रे, जावजीव अदराय दो ।
 कहो तो करूं संथार रे, पिण मुझ ने ल्यो गण मझे ॥ १७ ॥
 भारीमाल बहु जाण रे, दीव्या दे माहि लियो ।
 संवत अठारै पिछाण रे, एकोतरे चर्ण आदसो ॥ १८ ॥
 मास खमण बहु वार रे, विकट तप मुनिवर कियो ।
 सन्ताणुवे सुखकार रे, जन्म सुधारी यज्ञ लियो ॥ १९ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

भारी तपसी भोप हुश्रो भल, कोसीथल वासी
 कहियो, जाति तणो चपलोत जाणिजे, लाभ स्वाम
 हाथे लहियो ॥ ११ ॥ पाली में संजम ले च,
 मुनि तपस्या करवा मंडियो । कबहि छासठ कबहिक
 अड़सठ ० चढ़त २ अधिको चढ़ियो ॥ १२ ॥ ..दहिक

टिप्पणी—मूल पद्य में 'अठारव' ऐसा पाठ है किन्तु गायत्री के चतुर्थ चरणके भाव से 'अड़सठ' ही ठीक जंचता है तथा प्रथमावृत्ति में भी 'अड़सठ' ही दृशा हुआ था । इस लिये अड़सठ रक्खा गया है ।
 —संशोधक

चार मास में कीधा, सतर पारणा सुमति सहु । ग्रन्थ
 बहुल भय तप वर्णन गुण, तिण कारण सहु ते न
 कहूं ॥ १३ ॥ सांडी चार पहोर संधारो, ६ म पछे
 शुद्ध गति सारु । प णि धर्म उद्योत प्रगट हृद, वर्ष
 छासठे मुनि बारु ॥ १४ ॥ मुनि महिमागर अधिक
 उजागर, गुण सागर गर ज्ञानी । बचन सुधा गर
 धर्म जागर. धर्म धुनि धर. महा ध्यानी ॥ १५ ॥ जन
 मंजन चन्दन अङ्गन शिव शंजन रंजन साधी । भ्रम
 भंजन भिक्खु गुरु भेटी, अरि गंजन मति आराधी ॥
 १६ ॥ स्वाम शरण सुख करण तरण शुद्ध, तम म
 हरण ६ म तरणी । शिव वधू वरण धरण दुधर म,
 कहा कहूं मुनि नी करणी ॥ १७ ॥ सुर गिर धीर
 गंभोर मीर, दा सीर सुतार जै । तोड़
 जंजीर बीर बड़ तुम हो. ष भिक्खु गुण हीर रजै ॥
 १८ ॥ परम प्रतीत रीत प्रभु बच से, लोक बढीत
 अनीत ऊजै । न संगीत नीत हृद गुणियण, भ
 भिक्खु ष जीत भजै ॥ १९ ॥ बाण बिमल अति
 निमल कम बर, जम अमल शिव मग जाणो ।
 सम तम मिथ्या मति सोषी, आप सूर्ति अघदल
 णी ॥ २० ॥ ण तणै प्रसाद अनोपम, तंत
 मुनीश्वर बहु तरिया । आप सुरतरु ण गुणो दधि,

आप घणा अघ हरिया ॥ २१ ॥ स्मरण र
 तणो नित साधू, स्व तणो मुक्त नित शरणो ।
 आशा पूरण स्वा अनोप , निर्मल चित्त धो
 निरणो ॥ २२ ॥ सखरा स्वाम मुनि गुण साचा. म्हे
 संक्षेप थकी गुणिया । जल गर किम भालै गागर,
 गुण नन्त अथग अनघ गुणिया ॥ २३ ॥ निम
 पचासमी ढाल निहाली, भल भिक्खु गुण भरिया ।
 य जश म्यति करण जाणजो, इण खण्ड भिक्खु
 अवतरिया ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

अड़तालीस मुनि अल्या, पूज छतां पहिचाण ।

चारित्र लोधो चित्त धरी, उज्जम अधिको आण ॥१॥

अष्टवीस गुण में सही, सखर रखा सुजगीस ।

गुरु छन्दे गिरवा गुणी, अलग रखा छे बीस ॥ २ ॥

बीसां मांहे एक वर, रूपचन्द शुद्ध रीत ।

छेहडे अणशण चर्ण लिये, पूज आण प्रतीत ॥ ३ ॥

पूज थकां चारित्र प्रगट, अच सतियां अधिकार ।

वारै नीकली, पहोंती कैंक पार ॥४॥

साथ व्रत आदसा, तीन जण्यां तिण वार ।

कुशलां जी वड़ी करी, कुशल क्षेम अवतार ॥ ५ ॥

॥ दोहा ५१ मी ॥

(लम्यावंत जोय भगवन्त रो ज्ञान एदेशी)

पवर चरण शुद्ध पालताजी, कुशलांजीने विचार ।

दीर्घ पृष्ठ गुदोच में जी, ते डंसियो तिणवार ॥

खिम वंत धिन तियां वतार ॥ १ ॥ ज

डा भणी ० बंछयो नहीं तिण वार । शुद्ध परि-
णामे महासती जी, पोंहती पर गो ॥ २ ॥

मटूजी मोटो ती जी, र ण शिर धार । पद
राधक पामियोजी, गो भिवखु नो उपगार ॥ ३ ॥

॥ १०१ ॥

अजबू प्रकृति अजोग रे, ० जोग सूं नीकली ।

प्रकृति कठिण प्रयोग रे, चारित्र खोवे छिनक में ॥ १ ॥

दाल ते ० ।

म सुजाणा निरम ० जी देऊंजी दी । स्वा
तणे गण में सही जी, परभव पोंहती ॥ ४ ॥

॥ १०२ ॥

तदनन्तर तिण वार रे, साधुपणो लीधो सही ।

नेउ नाम निहाल रे, कर्म प्रयोगे नीकलो ॥ २ ॥

दाल ते ० ज ।

ती गुमाना गोभती जी, ० ज वर ० र । इ
कसूं जी ० जी, र ण धि उदार ॥ ५ ॥

जीऊ ० बले जाणिये जी, स्व तणे गण र ।

पोते बहू सुत परहरी जी, वासी रीयां रा विचार ॥ ६ ॥

६। किते पछै कियो जी, शहर पीपांड संथार ।
इंगताली डी ओपती जी, मांडी करी तिवार ॥७॥

॥ खैरदा ॥

फतू अखूजी न्हाल रे, अजवू चन्दूजी अजा ।

मेपघासां में भाळ रे, पछै चर्ण लियो पूज पै ॥ १ ॥

समत अठारै सोय रे, वर्ष तेंतीसे वारता ।

लिखत करी अवलोय रे, मुनि लीधी टोला मन्हे ॥ २ ॥

आप मते अवघार रे, मन छन्दे रही मोकली ।

अति तसु कठिण अपार रे, छांदे गुरां रे चालणो ॥३॥

अशुद्ध प्रकृति अचिनीत रे, सुमते जाणो स्वामजी ।

शिष्य भिक्खु शुद्ध रीत रे, तन्तु धाम्यो तेहने ॥ ४ ॥

तुम्ह नै फल्पे तेह रे, ते तन्तु लेवो तुम्हे ।

इम केही कपडो देह रे, फतु आदि पांवां भणी ॥५॥

पूछ्यो तास प्रमाण रे, कहै मुम्ह अधिको को नहीं ।

पूज करै पहिछान रे, निसुणो निरणय निर्मलो ॥ ६ ॥

अखैराम अणगार रे, मैल्यो कपडो मापवा ।

तस थानक तिणवार रे, माप्यां अधिको नीकल्यो ॥७॥

इम तन्तु अति राख रे, झूठ बोली बले जाणने ।

शुद्ध नहीं संजम साख रे, नीत चरण पाळण तणी ॥८॥

व्याहूँ ते पहिछान रे, चंता मेली पंचमी ।

यां पांचूँ नै जाण रे छोड़ी चंडावल मन्हे ॥ ९ ॥

मेणाजी मोटी ती जी, वासी पुरना विचार ।

स्वा कने संजम हियो ी, छांडो निज भरतार ॥१०॥

पढ़ी भणी पंडित थई जी, बहु सूत्रां नी रे जाण ।

साठे संथारो नरेजी, कीधो जन्म किल्याण ॥ ११ ॥

॥ स्फोरठा ॥

धनु कैलीजी धार दे, रत्तू नन्दूजी बली ।

माढा गाम मभार दे, छोड़ी यां च्यारां मणी ॥ १२ ॥

ढाल तेहिज ।

रंगूजी रलियामणाजी, णीजीद्वारा ना सार ।
 पोरवाल प्रगट पणे जी, संजम लियो सु कार ॥
 अइतीसे ब्रत ।दखो जी, स्वाम खेतसी रे साथ ।
 शिरियारी चलता रह्या जी, वारु भणी विख्यात ॥११॥
 सदांजो मोटी तोजी, तलेसरा सार । श्री जी
 द्वारना सहीजी, स र कियो संथार ॥ १३ ॥ सुत बहु
 तज संजम लियोजी कंटाल्या ना कहिवाय । अण ण
 लाढोती मभेजी, फूलांजी सु दाय ॥ १३ ॥ उत्तम
 अमरां आर्यांजी, स्वाम तणे उपगार । जीतब जन्म
 सुधारियोजी, सखरो कर थार ॥ १४ ॥ ल एक
 पचासमो जी, भिक्खु ने गण भाल । बड़ी २ तियां
 हुई जी, वारु गण सुविशाल ॥ १५ ॥

॥ स्फोरठा ॥

रत्तू ठे चारित्र दे, हूटी खोयो चर्ण ने ।

पाली माहि पवित्र दे, पळै संथारो पचखियो ॥ १ ॥

उपाय किया अनेक दे, भेषधासां लेवा मणी ।

तो पिण राखी टेकरे, त्यां माहे तो नां गर्ई ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध चित्त सं तेजुं सनी, पोरवाल पहिछाण ।

वासी ढाल कंबोल रा । संजम लियो सुजाण ॥ ३ ॥

काल कितेक पछे कियो, संधारो सुविहाण ।

द्विस वेथाली दीपतो, कीधो जन्म कित्याण ॥ ४ ॥

॥ सौरह ॥

यनांजी सुचिचार दे, संजम लीधो शूद्र मन ।

कर्मा करी खुवार दे, टोला मूं न्यारी टली ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

बंगनुजी बगडी तणा, वर कुल जाति सवेत ।

हीरां हीर कणी जिली, भारीमाल ना नेत्र ॥ ६ ॥

नाम नगी गुण निर्मली, वैर्णारामजी री बहेन ।

एक द्वीवस तीनूं अजा, चर्ण धार चित्त चैन ॥ ७ ॥

चौमालीसे चर्ष स्वामजी, संजम दे इक साथ ।

मूंप्या रंगुजी भणी, वाहं जश विन्धात ॥ ८ ॥

ए तीनूं मिखु पछे, संधारा कर सार ।

महियल मोटी मह सती, पामी मवनो पार ॥ ९ ॥

सरूप मीम श्रुप लीत नी, अजबू भुवा सुजोग ।

चौमाले धासो चर्ण, अडासीये परलोग ॥ १० ॥

शिरियारो ना महासतो, गन्नाजी पहिछाण ।

संजम पाल्यो स्वाम गण, संधारो सुविहाण ॥ ११ ॥

॥ सौरह ॥

फाकोली री कहाय दे, लालांजी संजम लियो ।

परवश सीत सुपाय दे, इण कारण गृह भाविया ॥ १ ॥

बहु वर्षा सुविचार दे, आवक धर्मज साधियो ।

तप जप कियो उदार दे, फिर चारित्र नहीं पचकियो ॥१३॥

॥ ढाल ५२ मी ॥

(ज्यांरा इन्द्र चन्द्र रखवाला पदेशी)

गुमाना महा गुणवन्ती, तासोल तणी चित्त
शान्ति । जीवा मुनि री बड़ी मा जाणी, ती संजम
लियो सुखदाणी हो लाल ॥ सतियां नामज मोटी
॥१॥ एक मास कियो अति भारो, दोय मास छेहड़ें
दिल्लधारो । शुद्ध राजनगर संथारो, सती सर भद्र
सुखकारो हो ॥ २ ॥ बर शहर बुन्दी रा वासी, बार
आवगी ल सुविमासी । खेरे संथारो खन्ती, खेमा
जो खेम करन्ती हो ॥ ३ ॥

॥ खोरडा ॥

जुं परीपह थी जाण दे, छूटी जसु छिनक में ।

चोखी टली पिछाण दे, कांफोलो री विहु फही ॥१॥

॥ ढाल तेहिज ॥

सतजुगी री वहिन सुखवासो, ऋष रायचन्दजी
रो मासी । पिउ पुत्र तज्या पहिछाणी, रूपांजी महा-
रलियामणी हो ॥ ४ ॥ संजम वात्रने सधीको, सता-
वने संथारो नीको । खुशालांजी री लघु वहिन कहिये,
रूपांजी जग जश लहिये हो ॥ ५ ॥ रूपांजी कंटाल्ये

संधारो, अग्रवाल जाति अवधारो । माधोपुर ना
 वसंवानो, सुत तीन तज्या व्रत ध्यानो हो ॥ ६ ॥
 वरजूजी वदीत विमासी, रुड़ी शील गुणा री रासी ।
 तिण रो भिक्खु तोल वधायो, सती सुयश शासण में
 पायो हो ॥ ७ ॥ बीजांजी महा वृद्धकारी, धर चरण
 शील सुखकारी । करडो तप छेहड़े कीधो, सती जग
 माहे यश लोधो हो ॥ ८ ॥ वनाजी सुविनयवन्ती, शुद्ध
 चरण पालण चित्तशान्ति । सुखद्रायक गण सुविशाली
 सती आतम ने उजवाली हो ॥ ९ ॥ शुद्ध यां तीना ने
 सिद्ध्या, दीधी भिक्खु एक दिन दीख्या । सखरो छेहड़े
 संधारो, समणी हद मुद्रा सारो हो ॥ १० ॥

॥ सौरह ॥

बीरां जाति कुमार रे, संजम लीधो स्वाम पै ।

प्रकृति अशुद्ध अपार रे, तिण कारण गण सूं टली ॥२॥

ढाल तेि ज ।

उदांजी उद्यमवन्ती, सती जाति सोनार सोहंती ।
 बहु वर्ष चरण सुविचारो, आवेट माहें संधारो हो ॥

११ ॥ भूमांजी जाति पोरवाल, श्रीजी द्वारा ना । र ।

छपने वर्ष संजम लीधो, ।म पछै संधारो सिद्धो हो

॥ १२ ॥ वर्ष सतावने सुविचारो, अपराय चरण हित-

कारो । तिण बहुत हुवो उपगारो, तिणरो सांभलजो
विस्तारो हो ॥ १३ ॥ संसार लेखे शोभाया, लख-
पति ल्होडे सजनाया । मतिवन्त हस्तु महि मंडी,
लीधो चरण पिउ सुत छंडी हो ॥ १४ ॥ दुःख घरका
बहुलो दीधो, सती अडिग पणे व्रत लीधो । सता-
णवै लाहवे संथारो, हस्तु गुण ज्ञान भंडारो हो ॥ १५ ॥
कुशलांजी रावलियां रा कहिये, सतजुगी री बहिन
व्रत लहिये । ऋषरायचन्दजी नी माता, संजम ले
पामी साता । ओतो जिन शासन में सुखदाता हो ॥
१६ ॥ भल हस्तुजीनी भग्नी, सती कस्तुरांजी शुभ
लग्नी । सुत पिउ छाड़ व्रत धारो, सतंतरे उजैण
संथारो हो ॥ १७ ॥ ल्हावा थो संजम लीधो, पिउ
छाड़ परम रस पीधो । गणी बुद्धि अकल गुणवन्ती,
जोतांजी महा जशवन्ती हो ॥ १८ ॥ शिरियारी रा
सुमगन में, छोड्यो पिउ सती तिण छिन में । संथारो
बहुतरे सिद्धो, नोरांजी जग जश लीधो हो ॥ १९ ॥
शुद्ध एक वर्ष में शिचा, दुर्मति तज लीधी दीचा,
पांचां ही पिउ ने छंडी, त्यांरी प्रीत मुक्ति सूं मंडी
हो ला० ॥ २० ॥ एसठे वर्ष गुणवन्ती, बहु चरण
धार बुद्धिवन्ती । त्यांमें तीन एथां एक साथे, हद
दीचा भिक्खु ने हाथे हो ॥ २१ ॥ कुशलांजी नाथां

जी वीजांजी, पाली ना तिहुं भ्रम भांजी । तीनू
 शीलांमृत कूपी, दीख्या देई ब्रजुजी ने सूपीहो ॥
 २२ ॥ सतंतरे कुश गांजी संथारो, भारीमाल भेला
 सुविचारो । माधोपुर मास कार्तिक में, परलोके
 पौहता छिनक में हो ॥ २३ ॥ नाथांजी गाम जसोल
 न्हाली, वर संथारो सुविशाली । संसार लेखे ऋद्धि
 वंती, मणी शुद्ध प्रकृति सोहंती हो ॥ २४ ॥ तप
 दिवस वतीस सु तपियो, जिन जाप वीजांजी जपियो ।
 तीन दिवस तणो संथारो, वर्ष छियासीये अवधारो
 हो ॥ २५ ॥ सरूप भीम जीत ना ताह्यो, कलुवै
 काकी कहिवायो । गुणसठे दीक्षा गुणवंती, गोमांजी
 नेवुये पार पहाँती हो ॥ २६ ॥ जशोदा खैरवा
 निवासी, डाहीजी नोजांजी विमासी । संजम भिक्खु
 छतां सारो, बहु वर्ष पाछै संथारो हो ॥ २७ ॥ ए म
 तणो गण सारु, छपन गण चरण प्रकारु । सतरे छुटक
 हुई अजा, छोड़ी लोकिक लोकोत्तर लजा हो ॥ २८ ॥
 रही गुणचालीस गण राची, पिउ छंड सात व्रत जाची ।
 दोय वहिन भायां रा जोड़ा, सतजोगी वैणीराम
 सु होडा हो ॥ २९ ॥ ऋष्य रायचन्द मा साथे, संजम
 लीधो पूज हाथे । आख्यो समणी नो अधिकारो,
 ओ तो भिक्खु तणो उपगारो हो ॥ ३० ॥ आगे

मन्त कद्या अड़ताली; अजा छपन इहां भाली । सहु
थया एक सौ चार, स्वामी गण लीधो चर्ण सुख
कार हो ॥ ३१ ॥ बीस तरे गण बारी, ठबीस
गुणचालीस सुधारी । बीसां में रूपचन्द शुद्ध रीत,
रा ी स्वाम तणी प्रतीत हो ॥ ३२ ॥

छन्द मुजंगी

थया सन्त मोटा बड़ासु धिरपाल १ मळूं नन्द नीको फतेबन्द भालं २ ।
विनयवंत वारु सु टोकर विशालं ३ निजानंदकारी हस्तथ न्हालं ४ ॥ १ ॥
भला धर्म घोरी मुनी भारीमालं ५ चल्या आप चारु बड़ा नी सुचालं ।
अखै स्थान काने अखैराम आछा ६ सदानन्दकारी सुखराम साचा ७
॥ २ ॥ शिवानन्द सारु शिवो स्वाम शीशं ८ नगो स्वाम नीको नगेन्द्र
नमीशं ९ भला स्वामजी सन्त हुवा सुमारी १० सही खेतसी जी सदा
शान्तिकारो ११ ॥ ३ ॥ अूपिराम रुडो भिक्खु शोश राजे १२ । बलि नान
जी स्वामी स्वामी निवाजे १३ ॥ ४ ॥ निमै नेम जाचा मुनि नेम नामं ।
बडो सन्त ज्ञानी भला वैणीरामं १५ ॥ ५ ॥ बलि सन्त मोटा बडो बड-
मानं १६ । सुखो स्वाम साचो शुभ ध्यान सुखानं १७ ॥ ६ ॥ हर्दा हेम
जैता सु हेमं हजारो १८ । उदैराम आछो तपस्वी उदारो ॥ ७ ॥ अषि
पाट थाप्यो मुनि रायचन्दं २० । दीपै तेज तीखो सुमेरु दिनन्दं २१ ॥ ८ ॥
भला सन्त तारासुचन्द भणीजे २१ । गिरेन्द्र समो सन्त हुंगर गिणीजे
२२ ॥ ९ ॥ जयो जीवरार्ज २३ अरु जोगीद.सं २२ । दमीश्वर जोधो
तपे देह त्रासं २५ ॥ १० ॥ भगो नाम नीको भिक्खु शीश भारी २६ ।
सही भागचन्द पछेहि सुधारी २७ ॥ ११ ॥ थयो मोप भारी तपे ध्यान
थापी २८ । पका संत शूरा भिक्खु ने प्रतापी ॥ १२ ॥ रखा स्वाम आण
धुरा छेह रुडाः । सही केटली ने थया फेर शूरा ॥ १३ ॥ आख्या सन्त
नाम अठावीस आछा । जिके जीव तासा भिक्खु स्वाम जाचा ॥ १४ ॥

॥ ॐ ॥

इना भिक्खु अणगार, सार जिण मारग शोध्धी ।
 अधिक कियो उपगार, बहु भवि ने प्रतिबोध्धी ॥
 धमणी सन्त सुजाण, सखर कीधा सुखकारी ।
 परम धर्म पहिचाण, धूरा जिण आणा धारी ॥
 अरु देश व्रत धारक अधिक, नित्य कृत भजन नूं नामको ।
 सुख करण शरण हद्द जग सुयश, सखर भीखणजी स्वामको ॥१॥

दोहा ॥

अष्टर्षास मुनिवर अख्या, सखरा गण शिणगार ।
 बीस थया गण बाहिरे, तास नाम अवधार ॥ १ ॥
 वीरभाण १ लिखमो २ बलि अमरोजी ३ अभिधान ।
 तिलोक ४ मौजीरामजी ५, चन्द्रभाणजी ६ जान ॥ २ ॥
 अणंदोजी ७ पनजी ८ अख्या, सन्तोष ९ शिवजीराम १० ।
 शंभु ११ संघजी १२ रूपजी १३, लघुरूपजी ताम १४ ॥३॥
 सुरतोजी १५ संघ सूं टल्यो, मथाराम १६ पहिचाण ।
 वीगतो १७ अनुशालजी १८ बलि, ओटो १९ नाथू २० जाण ॥४॥
 केइका ने न्यारा किया, कैइक टलिया आप ।
 अब कहिये छै आर्जिका, चतुर सुणो चुपचाप ॥ ५ ॥

॥ ॐ ॥

कुशलां १ मट्टु २ कहाय सुजाणा ३ कहिये सार्ची ।
 देउ ४ गुमाना ५ देख, कसुंवांजी ६ नहिं क ची ॥
 जीऊ ७ मेणा ८ जहाज, रङ्ग ९ सदां १० फूलां ११ सुखकारी ।
 अमरां १२ तेजु १३ आण, बलि वगतु १४ वृद्ध कारी ॥
 हीरां हीर कणी जिर्सी १५, सती शिरोमणी शोभती ।
 निकलंकनगां १६ अजबू १७ निमल, महियल १८ मोटी सती ॥१॥

पद्मा १८ सती पिछाण, गुमाना १९ खेमां २० गुणिये ।
 रुपांजी २१ वर रीत, सकरां २२ समणी सुणिये ॥
 वरसु २३ बीजां २४ विशाल, बनां २५ उदां २६ हद वार ।
 भूमां २७ हस्तु २८ जिहाज, कुशालां २९ गण सुखकार ॥
 कस्तुरां ३० जेतांजी ३१ कही, शुद्ध संजम नीरां सत्री ।
 इक वर्षे माहिं व्रत आदसा, पांचूं थां प्रीतम तजी ॥ २ ॥
 सखर खुशालां ३३ सती, पवर नाथां ३४ पुनवन्ती ।
 विनय बीजां ३५ सुविनीत, धणूं गोमां ३६ गुणवन्ती ॥
 चर्ण यशौदा ३७ चित्त, हिये माहों ३८ हरवन्ती ।
 नौजां निमल निहाल ३९, खाम थाणा समरन्ती ॥
 ए गुण चालीस अजा गण में अजी, एक सोनार सुजाणिये ।
 कुलवन्त इतरी सतियां कही, बड़ी वैराग बखानिये ॥३॥

॥ दोहा ॥

सतरे छुटक नाम तसु, अजबू १ नेतू २ ताय ।
 बलि फतू ३ ने अजबू ४, फिर अजबू ५ कहिवाय ॥१॥
 बन्दूजी चैना ७ छुटक, धनु ८ केली धार ९ ।
 रसू १० नंदू ११ फिर रतु १२ वरा १३ धई गण वार ॥२॥
 लालां १४ परवश नीकली, जसु १५ चोखी १६ वीरां १७ जान ।
 सतरे छुटक सांभलो, गण गुण्याली सुहान ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

भिक्षु हुवा उजागर भारी, हद करणी री बलि
 हारी । नित याद आवे मुक्त मन. तन मन अति होय
 प्रसन्न हो ॥ ३३ ॥ सुमतागर शासण स्वामी, जशधर
 अन्तरजामी, सखरो कुण स्वामी सरधो, पूज गुण

म दृग परखो ॥ ३४ ॥ आशा पूरण पो, पं
 आप तणुं नित जापो । पूर्णं कृ ष प्रीतं,
 निर शुद्ध अपरी नीतं ॥ ३५ ॥ कहीं ए बावनमी
 द्वा , वर जय श रण बि । । मोने भाग प्रमाणे
 रि वि या, मननाज नोर्थ फलिया । मुंह ांग्या पासा
 ढलिया ॥ ३६ ॥ तीजो गड गो तहतीको, निर्मल
 भिक्षु गण नीको । शासण सु दाय सधोको, जय
 जश वृद्धि शिव न्ने टीको हो ाल ॥ ३७ ॥ सोरठा
 २ गाथा ३७ ॥

कलश

मुनि सुगुण । वर विशा ।, सु ति पा
 णिये । तम गति त्ता म ज्वा । परम
 दया पिडाणिये ॥ सु द्र संत महंत सुन्दर
 ध्रान्त भंजन अति भलो, सुमति सुसागर अम
 । गर निमल मुनि गण गुण निलो ॥ १ ॥



चतुर्थ खण्ड ।

॥ सोरठा ॥

समरुं गीयम स्वाम रे, सुधर्म जन्मू आद मुनि ।

धले मिखु गुरु नाम रे, चौयो खण्ड कहुं खूप सूं ॥ १ ॥

मुरधर देप मेजाड रे, हाडोत्री हुंदाड में ।

चावा देशज चार रे, समचित विचसा स्वामजी ॥ २ ॥

गेवलालजी व्यास रे, थावक तेरा मांहिलो ।

ते कच्छ देशे गयो तास रे, टीकम ने समभावियो ॥ ३ ॥

टीकम डोली आम रे, देश कच्छ में दीपतो ।

तेवने गुणसडे ताम रे, पूज्य कने आयो प्रगट ॥ ४ ॥

प्रगट तेह प्रयोग रे, कच्छ देशे धर्म बाधियो ।

स्वाम तणे संजोग रे, जीव हजारां उदसा ॥ ५ ॥

धर्म कल्याण पिछाण रे, इण भव भाधी जाणजो ।

सुणजो चतुर सुजाण रे, पूज मिखु नों प्रगट दिव ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

पाचूं इन्द्रयां परवरी, न पही काई हीण ।

वृद्ध पणे विण पूजनी, शीघ्र बाल शुभ चीन ॥ १ ॥

याणै कठेई ना थया, बद्यमी अधिक अपार ।

चारु धरचा करण चित, पूज तणे अति प्यार ॥ २ ॥

उठे गोवरी आप नित, अतिशय कारी ऐन ।

पूज सुमुद्रा पेखतां, चित में पावै चैन ॥ ३ ॥

छेहला २ णाम फर्शता, छेहलाई करत विहार ।

चाणोद सूं पीपाड कन, विचसा स्वाम उदार ॥ ४ ॥

हाल ५३ की

(सखा मारुनां गीतनी एदेशी)

भ्रम भय भंजन हो जन्न रंजन गुण जिहाज,
 सुमति सुमंडन म शोभाविद्या । कुमति विहंडन हो
 मिथ्या खराडन काज, विचरत २ सोजत आविया ॥
 १॥ चोहटे चारु हो छत्री छै सुविचार, आज्ञा लेई
 नें स्वामी तिहां उतखा । जन मन हर्षे हों निरख्यो
 पूज्य दिदार, जाणै के श्रीजिन आप समवसखा ॥२॥
 दर्शन कारण हो धारण चर्चा बोल, संत सती बहु
 स्वाम पै आविया । आज्ञा लेवा हो चौमासा री
 मोल, परम पूज्य पे आवी सुखं पाविया ॥ ३ ॥ देम
 सम सागर हो स्वामी परम दयाल, भलाया चौमासा
 संत त्यां भणी । एटले आयो हो हुकमचन्द आछो
 न्हाल, पूज दर्शन कर प्रीत पामी घणी ॥ ४ ॥ बेकर
 जोड़ी हो मान मरोड़ी बोलंत, विविध विनय करि कर
 रह्यो विनती । स्वामी चौमासो शिरियारी करो संत,
 सुजती छै पकी हाट मुक्त शोभती ॥ ५ ॥ गुण निधि
 ज्ञानी हों गिरवा आप गम्भीर, ऋषपति अर्ज करूं
 हूं रीत सूं । बारु बचने हो विनती कीधी बजीर,
 सुगरु प्रसन्न हुवै शिष्य सुविनीत सूं ॥ ६ ॥ स्वामी
 मानी हो विनती तसु सार, विहार करी ने वगड़ी

आत्रिया । निर्मल चित्त सं हो अर्ज करे नर नार,
 शहर टाल्ये बगड़ी सुशोभाविद्या ॥ ७ ॥ गति गय-
 वर-सी हो इर्या धुन गुण जिहाज, र तांकर मुनि
 वर परवस्था । प्रत्यक्ष कहिये हो ऋषि भव दधि नी । ज,
 शहर शरियारी में स्वाम समवसस्था ॥ ८ ॥ शहर
 शरियारी हो शोभै कांठा नी कोर, दोलो मगरो गढ़
 कोट ज्युं दीपतो । जन बहु बस्ती हो महाजनारो
 जोर, जूना २ केई पुर भणी जीपतो ॥ ९ ॥ निर्भय नगरी
 हो ऋद्धि समृद्धि निहोर, ज्यां धर्म ध्य घणी तप
 जापनो । राज करै छै हो दौलतसिंह राठोड़, कूपा-
 वत कहिये करड़ी छापनो ॥ १० ॥ तिहां मुनि या
 हो सप्त ऋषि तंत सार, जय जश धरण कण मन
 जोषता । स्वामी शोभे हो गण नाथ सिरदार,
 दमोश्वर पूज्य भीखणजी दीपता ॥ ११ ॥ भरत क्षेत्र
 में हो भिक्खु साम्प्रत भाण, ज्ञा लेई ने पकी हाट
 उतस्था । न बहु हर्ष्या हो पूज पथा । जाण,
 धर्मानुराग करि तन मन भस्था ॥ १२ ॥ बखाण
 बाणी में हो आगेवाण विशाल, थिर पद पूज भीखण
 जी थापियो । भार लायक हो शोभे मुनि भारीमाल,
 पद युवराज पहिलाही मापियो ॥ १३ ॥ खर
 सेवा में हो खेतसीजी सुवनीत, सतजुगी नाम

अपर शोभाविधो । पूर्ण त्यारं हो पूजजी री प्रतीत
 चार तीर्थ माहिं जश तसु छावियो ॥ १४ ॥ उदैराम
 जो हो तपसी अधिक उदार, प रायचन्दजी बालक
 वय राजता । जीवो मुनि हो भगजी गुण ना भगद्वार
 स्वाम तणी हद सेवा सुसाभता ॥ १५ ॥ ए तो
 : खी हो तीन पचासमी ढाल, शरियारी में स्वाम
 : या सुख कारणा । रुड़ी निसुणो हो गल वात
 रसाल, जय जश करण भिवखु जन तारणा ॥ १६ ॥

॥ १६ ॥

श्रावण मासे स्वामर्तो, पुनम लग पिछाण ।

सखरी गोचरी शहर में, आप करी अगवाण ॥ १ ॥

आवसग अर्थ अनोपम, लिख लिख ने अघलोय ।

शिष्य ने आप सिखावता, जश धारी मुनि जोय ॥ २ ॥

श्रावण सुद छेहडे सही, मुनि तणे तन माहीं ।

कांडक कारण ऊपनो, फेरा तणोज ताही ॥ ३ ॥

तो पिण उडे गोचरी, गाम माहिं मुनिराय ।

दिसा थाहिर जाये सही, लायी गिणती न काय ॥ ४ ॥

आपघ लियो अणाय ने, कारण मेटण काम ।

पिण कारण मिटियो नहीं, पूज समा परिणाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५४ की ॥

(केते पूजा गोरान्या केते रंश पदेशी)

चम कल्याण चतुर सुणो, मास भाद्रवा मांयो ए
 सुखदायो ए । धम वृद्धि अति धर्म नो क भवियण

ए ॥ १ ॥ पजुसणां में परवड़ा, बारु हुवे व ाणो ए
 सुविहाणो ए । दरशे तीन टंक देशना क मुनिवर ए
 ॥ २ ॥ सुन्दर बाण सुहामणी, निसुणे बहु नर नारो
 ए सुखकारो ए । चौथज आई चांदणी ॥ मु०
 ॥ ३ ॥ पिंजर तन हीणो पढ्यो, पर्भ पूज्य पहिचारयो
 ए । मन जाणयो हे आउ नेहों उनमानथी ॥ मु०
 ॥ ४ ॥ स्वाम कहै सतजुगी भणी, थे सखर शिष्य
 सुविनीतो ए धर प्रीतो ए । साभु दियो संजम तणो
 क ॥ मु० ॥ ५ ॥ टोकर जी तोखा हंता, विनय वंत
 सुविचारी ए । हितकारी ए । भक्ति करी भारी घणी
 क ॥ सु० ॥ ६ ॥ भारमल जी सूं भेलप भली, रहीज
 रुड़ी रीतो ए । अति प्रीतो ए । जाण के पाहल
 भव तणी क ॥ मु० ॥ ७ ॥ सजर तीनां रा साभु सूं
 वर संजम उजवालयो ए । म्हें पाल्यो ए । प्रत्यक्ष
 ही शूरा पणै क ॥ ८ ॥ चित्त समाधि रही घणी
 म्हारा मन मभारो ए । हुंशिचारो ए । यां तीनां रा
 साभु थी क ॥ मु० ॥ ९ ॥ शिष्य सुवनीत हुवै सही,
 गुरु रहे आणंदो ए । चित्त चंदो ए । देव जिनेद्र
 दाखियो क ॥ मु० ॥ १० ॥ गुण प्राही एहवा गुणी,
 पूज्य भीखण जी पेलो ए । दिल देखो ए । स्वाम
 गुणज्ञ सुहामणा क ॥ मु० ॥ ११ ॥ ऐसी कीजे प्रीतड़ी

जैसी भिक्षु भारी मालो ए । सुविशालो ए । त
 जुगी टोकरजी सारिपी क ॥ मु० ॥ १२ ॥ जोड़ी वीर
 गोयम जिसी, पवर स्वाम शिष्य प्रतो ए । हद रीतो
 ए । चाल सखरः चौथा तणी क ॥ मु० ॥ १३ ॥ ए
 चौपनमी ढाल में, सखरो कह्यो संबंधो ए । प्रबंधो ए ।
 स्वाम भिक्षु नो शोभतो क ॥ मु० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

साध श्रावक ने श्राविका, यह सुणतां तिणचार ।

सिन्नामण दे स्वामजी, हद सखरी हितकार ॥ १ ॥

वीर जी मोक्ष चिराजिया, वारु किया यत्राण ।

सोलह पहर रं आसरे, सीख दीधी सुविहाण ॥ २ ॥

इण दुग्गम धारा मझे, स्वाम भिक्षणजी सार ।

प्रत्यक्ष श्री जिन नी परै, आली सीख उदार ॥ ३ ॥

सखर बुद्धि बाणी सखर, सखर कला सुखकार ।

नीत सखर चित निरमले, यचन वदै सुविचार ॥ ४ ॥

॥ दोहा ५५ मी ॥

(आगे नातां अरुची आवै ए देशी)

जिम मुक्त ने जाणता, म्हांरी प्रतीतो रे । तिम
 हिज राखज्यो, भारमालजी री रीतो रे । सी स्वामी
 तणी ॥ १ ॥ सहु सन्त सत्यां रा, भारीमालजी नाथो
 रे । आज्ञा आराधज्यो, मत लोपज्यो वातो रे ॥ २ ॥
 यांरी आण लोपी ने, निकले गण धारो रे । तसु

गिणज्यो मति, चिहं तीर्थ ममारो रे ॥ ३ ॥ यारी
 आण राधे, सदा रहे सुविनीतो रे । तसु सेवा
 करो, ए जिन मग रीतो रे ॥ ४ ॥ मै पदवी णी,
 भारलायक जाणी रे, भारमलजी भणी, शुद्ध प्रकृति
 सुहाणी रे ॥ ५ ॥ नीत चणं पालण री, भलं ऋष
 भारोमालो रे । शंक म राखज्यो, शुद्ध साधु नी
 चालो रे ॥ ६ ॥ शुद्ध भ्रमणं सेवजो, अणाचाहां
 सू दूरा रे । सीख दोनू धर्यां, हुवै मुक्ति हजुरा रे
 ॥ ७ ॥ अरिहंत गुरु आज्ञा, लोपे कर्म जोगो रे । प-
 छन्दा तिके, नहीं वंदणं जोगो रे ॥ ८ ॥ उस णे
 पासत्था, कुशील्या प्रमादी रे । अपछंदा इणा, जिण
 आण विराधी रे ॥ ९ ॥ यां ने वीर निषेध्या, ज्ञाता में
 विशालो रे । संग करणो नहीं, बांधी जिनपालो रे ॥
 १० ॥ आणंद लियो अभिग्रहो, जिण गण थी न्यारु
 रे । तसु वांदं नहीं, पहली वचन उचारु रे ॥ ११ ॥
 अन्यमति ना देव गुरु, थवा जमाली रे । ता
 नंमूं नहीं; नहिं वेंदूं न्हाली रे ॥ १२ ॥ बलि विंगर
 बोलायां, बोलण रो नेमो रे, आहार आपूं नहीं,
 अभिग्रहं जियो एमोरे ॥ १३ ॥ अभिग्रहं जिन
 आगल, आणंदं ए लीधो रे । सप्तम अङ्ग में, शुद्ध
 पाठ प्रसिद्धो रे ॥ १४ ॥ रीत एहिज रा णी, चिउं

संघ ने चारू रे । टा गोकड़ तणी, संग दूर नि रु
 रे ॥ १५ ॥ ए रीत आराध्यां पामो भव पारो रे ।
 श्रीजिन सीखड़ी, रघ्यां सुख पारो रे ॥ १६ ॥ हु
 ध धवी, वर हेत विशेषो रे । रुड़ो रा लो, धरणां
 नहीं द्वेषो रे ॥ १७ ॥ बलि जि ने न बांधणो, गुरु
 ण सुगामी रे । सीख प्रथम सही, दी भिखु
 स्वामी रे ॥ १८ ॥ गुरु ज्ञा गोपी, बांधे जे जि गो
 रे । अति विनीत ते, दियो कर्मां टिल्लो रे ॥ १९ ॥
 एकल सुई खोटो, इसड़ो अविनीतो रे । तसु सम-
 भायने, राखणो शुद्ध रीतो रे ॥ २० ॥ दिल देख देखने,
 दीग्या दुद्ध दोजो रे । बलि जिण तिण भणी, गण
 मुंडीजो रे ॥ २१ ॥ श्र । आचार रो, कल्प
 सूत्र नो बोलो रे । गुरु बुद्धिवन्त री, राखो तीत
 लो रे ॥ २२ ॥ कोई बोल न बैसे, केवलियां ने
 भलावी रे । ताण कीजो मती, मन ने समभावी रे ॥
 २३ ॥ अपछंदे विण ज्ञा, नहिं थापणो बोलो रे ।
 गुरु ज्ञा थकी, तीखो गण तोलो रे ॥ २४ ॥ ए दो
 तीन आदि, निकले गण वारो रे । साध रध
 जो, शुद्ध सीख श्रीकारो रे ॥ २५ ॥ इक आज्ञा
 रहिजो, ए रीत परंपर रे । लिखत गौ कियो, हु
 धरजो रा खर रे ॥ २६ ॥ कोई दोष गावी, वि

बोलै कूड़ो रे । प्राश्रित ना लिये, तिण ने कर दीज्यो
दूरो रे ॥ २७ ॥ शासण प्रवर्तावण, सिख दीधी
स्वामी रे । और कारण नहीं, भल अन्तर जामी रे
॥ २८ सुणतां सुखदाई स्वामी ना बोलो रे । बहु
सुणतां कह्या, आछा ने अमोलो रे ॥ २९ ॥ ऐसा
स्वाम अनोपम, गण तारक ज्ञानी रे । कहा कहिये
तसु, बतका सुविहानी रे ॥ ३० ॥ पचावनमी वाहं,
कहि ढाल रसालो रे । बात सुणो बलि, जय जश
सुविशालो रे ॥ ३१ ॥

दोहा ॥

सीखावण वी स्वामजी, आछो अधिक अनुप ।

हलुकमी धारे हिये, सखरी सीख सद्रुप ॥ १ ॥

नीर गंगा जूं निर्मला, पूज तणा परिणाम ।

निर्मल ध्यान निकलंक वित, समता रमता स्वाम ॥२॥

पद युवराज सु आदि मुनि, पूजा करै सुतोय ।

अछे खेद सूं आपरे, स्वाम कहै नहि कोय ॥ ३ ॥

निर्मल चर्ण घर कर्ण निज, विमल सुधा सम बाण ।

अमल दिये उपदेश, अरु सुणजो चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५६ मी ॥

(सायर लहर सूं जाणै मीडक पदेशी)

भारोमाल शिष्य भारोजी, आदि साधां भणी।
स्वाम कहे सुविचारीजी । बाण सुहामणी ॥ १ ॥

पर भव निकट पिछाणो जी । दोसे मुझ तणुं, मुझ
 भय मू म जाणोजो, हर्ष हिये घणो ॥ २ ॥ घणा
 जीवां रे घट माह्यो जी । सम्यक्त रूपीयो, म्हे बीज
 अ गो वाह्यो जी । मग गोलखावियो ॥ ३ ॥ देश
 ब्रत दीपायो जी, । धि लियो । साधपणो
 सुखदायो गी, बहु जन ने दियो ॥ ४ ॥ म्हे जोड़ां
 री सूत्र न्यायो जो, शुद्ध जाणो सही । म्हारे मन रे
 मांह्योजी, उणायत ना रहो ॥ ५ ॥ थे पिण थिर
 चित्त थापो जी, प्रभु पंथ पा जो । कुमति कलेश ने
 ापी जी, आतम उजवालजो ॥ ६ ॥ रायचन्द ब्रह्म-
 ारी ने जाणो जी, सीख दे शोभती । तूं वा क छै
 बुद्धि ानो जी, मोह कीजै ती ॥ ७ ॥ ब्रह्मचारी
 हे वाणोजी, शुद्ध वच सुन्दरु । आप करो जन्म
 रो किल्याणो जी, हूं मोह कि करूं ॥ ८ ॥ बले
 स्वामी सीख दे ारोजी, सहु सन्ता भणी । रा-
 धजो चारो जी, त चूको णी ॥ ९ ॥ इरिया
 भाषा उदारो जी, धिकी एषणा । व ादि लेतां
 वि ारो जी, परठत पेखणा ॥ १० ॥ खरी पांच
 सुमति जी, गुप्त गुणो धरो । दय त शी सुदती
 ी, ता मत करो ॥ ११ ॥ िष्य शिष्यणी पर
 नोयो जी, उपग्रण उपरे । मुर्छा म कीजो कोयोजी,

प्रमाद ने परहरो ॥१२॥ पुद्गल ममत प्रसंगोजी, तन
न सूँ तजी । संजम सखर सुचंगोजी, भल भावे
भली ॥ १३ ॥ आछी सीख अनूपी जी, अति अभि-
रामजी । अमृत रस नी कुंपीजी, दीधी स्वामजी
॥१४॥ आ ति ढाल उदारो जी, षट पचासमी । जय
जश करण पीकारोजी, स्वामी मति समी ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

दीख सखर दे स्वामजी, हृद वाणी हितकार ।

स्वाम वचन सुणतां छतां, चित पामे चमत्कार ॥ १ ॥

समता खमता सखर चित, दमता रमता देख ।

नमता जमता निमल मुनि, धमता बंक विशेष ॥ २ ॥

भव समुद्र तिरवा भणी, भिक्षु मलेज भाव ।

बुद्धि भाव हृद बीर रस, जाणे तिरणरो दाव ॥ ३ ॥

घर वायक वाणी विमल, दायक अभय दयाल ।

पद् लायक भिक्षु प्रगट, नायक स्वाम निहाल ॥ ४ ॥

॥ द्वा ५७ मी ॥

(धन धन जंबू स्वामी ने पदेशी)

शिष्य भारीमाल सोहामणा, परम भक्ता पहिछाण
हो मुणन्द । पण्डित मर्णा पेखी पूज रो, बोलै एहवी
वाण हो मु० धन धन भिक्षु स्वाम ने ॥१॥ धन धन
निर्मल ध्यान हो मु० धन धन पवर शूराषणुं, धन धन
स्वामी नो ज्ञान हो ॥ २ ॥ खर स्वाम ना ग थो

मन हुंशियारी माहिं हो मु० अरु विरहो पड़ै आपरो,
 जाणै श्री जगाराय हो ॥३॥ प्रभु गोयम री प्रीतड़ी,
 चौथे आरे पिछाण हो मु० प्रत्यक्ष आरे पंचमें, भिबखु
 भारीमाल री जाण हो ॥ ४ ॥ तिण कारण भारी-
 मालजी, आखी अल्प सीं वात हो मु० विरह तुमारो
 दोहिलो, जाणै श्री जगनाथ हो मु० ॥ ५ ॥ भिबखु
 बलता इम भणै, थे संजम पालसो सार हो । निर
 अतिचारे निर्मलो, होसो देव उदार हो ॥ ६ ॥ महा
 त्रिदेह क्षेत्र मफे, मुफ थकी मोटा अणगार हो मु०
 अरिहन्त गणधर आद दे देखजो तसु दिदार हो ॥७॥
 सतजुगी भाखै स्वाम ने, आप जाता दिसो भंड
 माहिं हो मु० स्वामी कहे सुणो साधजी, चिंत में
 भंड तणी नहीं चाहि हो ॥ ८ ॥ सुख स्वर्गादिक
 ना सहु, पुद्गल रूप पिछाण हो मु० पामला सुख
 पोचा घणा, ज्याने जाणुं जहर समान हो ॥ ९ ॥ वार
 अनन्ती भोगव्या, अधिका सुख अहमन्द हो मु०
 तो पिण नहीं हुवो तृपतो, तिण कारण ए सुख फंद
 हो ॥ १० ॥ तिण संम्हारे भंड तणी, बंधा नहीं
 लिगार हो मु० मुफ मन एकन्त मोक्ष में, शाश्वता
 सुख श्रीकार हो ॥११॥ वैरागी एहवा मुनिवरु, जाण्यो
 पुद्गल जहर हो मु० स्वाम सम्बन्ध सुणावतां, आवै

संवेग नी लहर हो ॥ १२ ॥ सखर सतावनमी सांभली,
ढाल रसाल पार हो मु० समरण भिक्खु स्वाम नो,
जय जश करण श्रीकार हो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सुख कारण तारण सुजन, कुगति निवारण काम ।

विघन विदारण अंति पवर, सीख समाधी स्वाम ॥१॥

पंडित मरण सुकरण पर, धरण माराधक घाम ।

शिव बधु वरण रु तरण शुद्ध, पूज पर्मे परिणाम ॥२॥

निर्मल नीत शुद्ध रीत निज, पूज प्रथमहि पेख ।

अंतकाल आयां छतां, वारु अधिक विशेष ॥ ३ ॥

समय जाण स्वामी सखर, आलोचण अधकार ।

आतम शुद्ध करे आपरी, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ४ ॥

॥ ढाल दुद मी ॥

(कोसी जल नहि मेदे तिम ज्यारे एदेशी)

स्वाम भिक्खु तिण अवसरै रे, उ नेडो आयो

जाण । करे आलोचण किण विधे रे, स र रीत

सुबिहाण । भविक रे भिक्खु गुण रा भण्डार ॥ १ ॥

तस थावर जीवां तणी रे, हिन्सा करी हुवै कोय ।

त्रिविध २ कर तेहनो रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ २ ॥

क्रोध मान माया करी रे, लोभ वशे अवलोय । मूठ

लागो हुवै जेहनो रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ ३ ॥

अदत्त जे कोई आचर्यो रे, ज्यांरा भेद अनेक

सुजोय । हृद जिन आज्ञा लोपी हुवै रे, मिच्छामि
 दुक्कडं मोय ॥ ४ ॥ ममत धरी हुवै मैथुन सं रे, सुता
 जागतां सोय । मन वचन काय माठा तणो रे मि०
 ॥ ५ ॥ परिग्रह नवं प्रकार नो रे, शिष्य शिष्यणी
 उपधि पर सोय । त्रिविध २ ममता तणुं रे मि०
 ॥ ६ ॥ किणहि सं क्रोध कियो हुवे रे, वलि क्रोध वशे
 वच कोय । करड़ी सीख किण ने कही रे ॥ मि० ॥
 ७ ॥ मान माया लोभ मन में धर्यो रे, दिल धर्या
 राग द्वेष दोय । इत्यादिक पाप अठार नो रे ॥ मि०
 ॥ ८ ॥ राग कियो हुवे रागो थकी रे, द्वेषी सं धर्यो
 हुवे द्वेष । मन साचै हिवे मांहरै रे, वर मिच्छामि
 दुक्कडं विशेष ॥ ९ ॥ पांचूं आस्रव पाडुत्रा रे, लागो
 जाणयो किण वार । सांभल २ स्वामीजी रे, आलोया
 अतिचार ॥ १० ॥ पञ्च सुमति तीन गुप्ति में रे,
 पञ्च महाव्रत मभार । याद करे अतिचार ने रे,
 आलोवै भिक्खु अणंगार ॥ ११ ॥ सहु जीवाजोनि
 संसार में रे, चउरासी लाख सुचिन्त । ज्यांरा भेद
 जुजूआ जाणजो रे, खंमावं धर खन्त ॥ १२ ॥ वड़ा
 शिष्य सुविनीत छै रे, अन्तेवासी अमोल । आगै
 लहर आई हुवै रे, खमावे दिल खोल ॥ १३ ॥ बले
 संत अने सतियां मभेरे, कैकाने करड़ा देख । कठिण

सीख कड़वो कह्यो रे, खमावं सु विशेष ॥ १४ ॥
 श्रावक ने बले ।विका रे, केई कठिण प्रकृति रा
 कहाय । कठिण बचन कह्यो हुवै रे, अंत करी ने
 खमाय ॥ १५ ॥ केई गण बारै निकल्या रे, गध
 साधवो सोय । करड़ो काठो कह्यो हुवै रे, ज्यां सुं
 खमत खामणा जोय ॥ १६ ॥ चन्द्रभाणजी थली
 मफे रे, तिलोकचन्दजी त । कहिजो मत
 खामणा मांहरारें, त्यां सुं पड़ियो बोहलो काम ॥ १७ ॥
 चरचा कीधो धूप सुं रे, घणा जणा सुं बहु म ।
 वच कठण कह्या जाण्या तसु रे, मात्रै ले नाम
 ॥ १८ ॥ केई धर्म तणा द्वेषी हुंतारे, छिद्रपेही अव्य-
 वसाय । त्यां ऊपर दे आई तिकारे, सगलां ने देऊं
 खमाय ॥ १९ ॥ चऊं तीर्थ शुद्ध चलायवा रे, सीखा-
 मण देता सोय । कठिनवचन जो कह्यो हुवे रे, मुक्त
 खतम खामणा जोय ॥ २० ॥ इण विध करि आलो
 वणा, रे गिरवा महा गुणवंत । स्वाम भीखणजी
 शोभता रे, पदवीधर पूज महंत ॥ २१ ॥ एहवी
 आलोवण कानां सुगयां रे, आवे अधिक वैराग ।
 करे त्यांरो कहिवो किसुं रे त्यांरे माथे मोटा भाग ॥
 अठावनमी शोभती रे, आखी ढाल सुएन । जय श
 करण भिक्खु भलारे, चित्त सुणतां पामे चैन ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

इण विध करि आलोचना, निर्मल निरतिचार ।

स्वाम हुआ शुद्ध रीत सूँ, अब अणशण अधिकार ॥१॥

भाद्र शुक्ल पंचम भली, सम्बत्सरी नो सार ।

स्वाम कियो उपवास शुद्ध, नित उजल चौविहार ॥२॥

अतुल तृपानी ऊपनी, अधिक असाता आम ।

सखर आण शूरा पणो, समचित सहिज स्वाम ॥ ३ ॥

पूज कियो छठ पारणो, औषध अल्प आहार ।

पिण ते समो न परगम्यो, वमन हुवो तिण वार ॥४॥

तिण दिन तीनू आहारना, त्याग किया तहतिक,

पुदगल स्वरूप पिछाणियो, निर्मल स्वाम निरमीक ॥५॥

॥ ढाल ५२ मी ॥

(राजा राघव रायरा राय पदेशी)

१। त आठम भिक्षु स्वाम ी, अल्प सो लियो
अहारो । ततरि ए त्याग कियो मन तीखै, हद पू रो
मन हुंशियारो ॥ भिक्षु स्वामी आप जिन मत
अधिक जमायो ॥ १ ॥ खेतसीजी स्वामी कहै च
कर, तरके न रणा त्यागो । पूज कहे देही पत ी
पाइणी, वारु विशेष चाहिजे वैरागो ॥ २ ॥ भाद्र शुक्ल
नवमी दिन भिक्षु, हे करुं आ र ना पच एण ।
कहे खेतसी ी मुक्त र केरो, चर्म आहार ो
पिछाण ॥ ३ ॥ अल्प आहार खेतसीजी आणियो,
चाख किया पचवाणो । वारु मन राख्यो शिष्य

सुविनीत रो, पिण बहुल इच्छा मत जाणो ॥ ४ ॥
दशम दिन भारीमालजी विनवै, स्वामी आहार कीजे
सुविहाणो । चाली चा दश मोठ रे आसरे, चाख
क्रियां पचखाणो ॥ ५ ॥ इग्यारस आहार त्याग दियो
मुनि, अमल पाणी उपरन्तो । भू हिव आहार लेतो
मत जाणजो, कद्दो बयण मोल तन्तो ॥ ६ ॥
बारस दिन बेलो कियो पूज, तीन आहार तणा
क्रिया त्यागो । सखर संधारो कर्ण स्वामी जो, वारु
चढतो वैरागो ॥ ७ ॥ सा णी हाट सू उठ नीश्वर
चलिया २ आयो । पकी हाट ने पका नीश्वर पको
संधारो सुहायो ॥ ८ ॥ संयण शिष्यां कीधो सुखदाई,
रू पूज लियो विसरामो । इतले रायचन्दजी
आय ने, रुडा वचन बदै अभिरामो ॥ ९ ॥ स्वामी
कृपा कीजे द ण दीजिये, वदैब चारीजो विख्यातो ।
पूज स्हामुं जोवे नेत्र शोलने, हृद मस्तक दोधो
हाथो ॥ १० ॥ पूज ने कहै प्रा म हीण पड़िया,
बराय तणी सुण वायो । भिक्खु पहिलां तन तोल
त्यारी था, सुण सिंह ज्युं उठ्या मुनिरायो ॥ ११ ॥
भिक्खु कहे बोलावो भारीमाल ने, बले तसी जी
ने विचारो । याद करंताई सन्त दोनूई, भूट आय
उभा है तिवारो ॥ १२ ॥ नमोयुणो कियो अरिहन्त

सिद्धा ने, तीखे वच बोल्या तामो । बहु नर नारी
सुणतां ने देखतां, संधारो पचख्यो भिक्षु स्व रो
॥ ३ ॥ शिष्य पर्म भक्ता कहै स्वामी ने, क्युं न
राख्यो अमल रो । गारो । पूज कहै । गार । रो
हिवै, किसी करणी काया नी सारो ॥ १४ ॥ भा . ।
सुदि वार भलो तिथी, सोमवार सुविचारो । अण-
शण । द रो वैराग आणी ने, शुद्ध छेहलो दुघड़ियो
रो ॥ १५ ॥ घणा जन न्ता गुण गावन्ता, बोलत
बेकर जोड़ो । धिन २ हो थे मोटा मुनीश्वर कीधी
वड़ा वडेरां री होडो ॥ १६ ॥ केई नमु । या
ने प्रणमें पाया, वि सत होवै वि । । । त करी
ने स्वामी ने खमावता, हिवडै । ण हु । सं ॥ १७ ॥
धिन २ पूज रो धीरापणुं । धिन २ पूजरो ध्यानो ।
धिन २ स्वाम पूरा घणा दरा, न कियो भेरु
समानो ॥ २८ ॥ । नी ए गुणसठमी ओपती, उद्ध
ढाले स्वाम थारो । भल य जशकर स्वा
भिक्षु नों, रण महा सुखकारो ॥ १९ ॥

दोह

कैकां अमिग्रह प्यवो कियो, यां शुद्ध मत फाढ्यो सार ।

छेहडे अणशण आ ी पको उतरसी पार ॥ १ ॥

इण विध अमिग्रह आदसो, भोला लोकां तःम ।

बात सुणी कहै पचखियो, अणशण भिक्षु स्वाम ॥२॥
द्वेषी था जिन धर्म ना, वित्त पाप्या चमकार ।

जाणयो ए मारग खरो, कई बाँदे बाढं धार ॥ ३ ॥
अति नर नारी आवता, गावत मुनि गुणग्राम ।

बाजार माँहि अमावता, सरावता धिन स्वाम ॥४॥

॥ ढा ६० मी ॥

(राम को सुत्रश घणो पेशी)

स्वाम तणो थारो सुणी हो, आवे तो नेक ।
कोड री ने करै घणा हो, वारु वैराग विशेष ॥
स्वामी नो सुजश घणो ॥ १ ॥ कोई कहै थारो
सीभै स्वामी नो हो, त्यां लग काचा पाणी ना त्याग ।
कोई करै त्याग कुशील रा हो, वर चित आण वैराग
॥ २ ॥ केई म आरम्भ न अदरै हो, केई रै हरी
ना पच ण ॥ ३ ॥ केई धर्म तणा द्वेषी हुन्ता हो,
ते पण अचरज पाप्या तिणवार । नमी कई ।वी
नम्या हो, स्वाम तणे संथार ॥ ४ ॥ पडिकमणो
कोधां पछै हो, स्वाम भिक्षु सुविहाण । भारीमाल
आदि शिष्य भणी हो, कहै बारु-करो बखाण ॥ ५ ॥
शिष्य सुविनीत कहै सही हो, संथारो अपरे सोय ।
बखाण नो विशेष छै हो, तब पूज्य बोल्या अव-
ल्लोय ॥ ६ ॥ किणहि .ारजियां अणशण कियो हुवै

हो, तो रो बखाण त्यां जाय । मुक्त अणशण माहें
 देशना हो, नहिं करो थे किण न्याय ॥ ७ ॥ बखाण
 कियो विस्तार सूं हो शिष्य सुविनीत श्रीकार ।
 भागवली भिक्षु तणो हो, मिलियो जोग उदार
 ॥८॥ परिणाम चढ़ता पूज रा हो, इण विध निकली
 रात । दिन तेरस हिव दीपतो हो, प्रगटियो भात
 ॥९॥ गाम २ रा आवै घणा हो, दर्शण करवा देख ।
 जाणक ेलो मंडियो हों, वारु हर्ष विशेष ॥ १० ॥
 गुण स्वामी ना गावता हो, आवता अति जन वृन्द ।
 हिवड़े हर्ष हुलसावता हो, पामता परमानन्द ॥ ११ ॥
 जश करमो था जीवड़ा हो, जय जश करता जन ।
 पर्म पूज मुख पेलने हो, तन मन होय न्न ॥१२॥
 धुर ही थी धर्म छाण ने हो, शुद्ध मग लियो । र ।
 अन्त ताई उजवाति यो हो, जिन मारग जयकार
 ॥१३॥ धोरी थे जिन धर्म ना हो, इम बोलै नर नार ।
 शूर पणै खरो कियो हो, स्वामी थे संधार ॥ १४ ॥
 ऐ । ठमी गुण आगली हो, रूड़ी ढा रंसाल । जय
 व श करण स्वामी तणो हो, वारु गुण विशाल ॥१५॥

॥ दोहा ॥

पाणी-पीधो पूज जी, आफे चित उजमाल ।

पोहर दिवस जाभो प्रगट, आयो थो तिण काल ॥ १ ॥

साध बैठा सेवा करे, आणी हर्ष अपार ।

भावक भ्राविका स्वाम नो, देख रह्या विदार ॥ २ ॥

मिक्खु भ्रूष शुद्ध भाव सूं, ध्यावत निर्मल ध्यान ।

सकौतो जाणो स्वाम ने, उपनो अवधि सुज्ञान ॥ ३ ॥

साध भ्राविक होवे सही, वैमानिक विख्यात ।

अवधि ज्ञान ततु उपजै, भागम वचन आख्यात ॥ ४ ॥

दिन चढ्यो पहोर दोह आसरे, सांमलतां सह कोय ।

वचन प्रकाशे किण विधे, मल सुणिये भवि लोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६१ मी ॥

हेमराज जी स्वामी कृत

(नमो अधिहंताणं नमो सिद्ध निरंवाणं पदेशी)

साधु आवै साहमां जावो, मुनि प्रकाशे वाणं ।

बले साधवियां आवे बारै, स्वामी बोलै वचन सुहाणं ॥

भवियण नमो गुरु गिरवाणं, नमो भिवखु चतुर

सुजाणं ॥ १ ॥ के तो कह्यो अटकल उनमाने, के

कह्यो बुद्धि प्रमाणां । के कोई अवधि ज्ञान उपनो,

ते जाणे सर्वनाणं ॥ केई नर नारी मुख सूं इमं भाखै,

स्वामी रा जोग साधां में बसिया । इतले एक मुहूर्त्त

आसरे, साध आया दोय तिसिया ॥ ३ ॥ विकसत

२ साधु वांदे, चर्चा लगावै शीशं । नरं नारी जाणे

अवधि उपनो, साचो विश्वावीसं ॥ ४ ॥ स्वामी

साधु आया जाणी, मस्तक दीधो हाथं । एटले दोय

मुहूर्त्त आसरे, आयो साधवियां रो साथं ॥ ५ ॥ वैणी

रामजी साध बदीता. साथे खुशालजी आया । साध-
 वियां बगतुजी जुमां डाहीजी, प्रणामे भिक्षु पाया
 ॥ ६ ॥ परचा ज्युं ज्युं आय पुगे छै. नर नारी हर्षत
 थावैं । धिन हो धिन थे मोटा मुनीश्वर, आप तुले
 कृण आवै ॥ ७ ॥ आया ते साधु गुण गावे, भांत २
 प्रणाम चढ़ावे । थे मोटा उपगारी महिमा भारी,
 सबरो सुजश सुणावे ॥ ८ ॥ थे पका २ पाखण्डी
 हटाया, सूत्र न्याय बताया । दान दया आच्छा
 दीपाया । बुद्धिवन्तां मन भाया ॥ ९ ॥ सावद्य निर्वद्य
 भला निवेड़ा, कोथा बुद्धि प्रमाण । सूत्र न्याय श्रद्धा
 शुद्ध लीधी, धारी अरिहन्त आण ॥ १० ॥ साधां
 जागयो स्वामी सुताने, घणी हुई छै वारं । आप कहो
 तो बेंटा करां हिव, जब भरियो कांय हुंकारं ॥ ११ ॥
 बेंटा कर साधु लारे बटा, गुण स्वामी रा गावैं । बहु
 नर नारी दर्शण देखी, मन में हर्षत थावैं ॥ १२ ॥
 आयो आऊखो अण चिन्तवियो, बेंटा २ जाणं ।
 सुखें समाधे बाह्यं दिसत, चट दे छोज्या प्राणं ॥ १३ ॥
 अणशण आयो सात भगत नो, तीन भक्त संथारं ।
 सात पोहोर तिण माहें बरत्या, पको उताखो पारं
 ॥ १४ ॥ मांहडी सीवें दरजी पूगा, कहै सूई पग में
 घाली । अचरज लोक पाम्या अधिको, चट स्वामी

गया चाली ॥ १५ ॥ सम्बत् अठारै साठे वर्षे, भाद्रवा
सुद तेरस मंगलवारं । पूज पौहता परलोक शिरि-
यारी, गुण गावै नर नारं ॥ १६ ॥ दिन पाछलो दोढ
पोहर आसरे, उण बेलां आऊषो आयो । दिवसे
मरवो रात्रि जनमवो, कहै बिर । ने थायो ॥१७॥

॥ दोहा ॥

संधारो कीधो सखर, सखर स्वाम श्रीकार ।

शूम पणे सिम्यो सखर, सखर सुजश संसार ॥ १ ॥

साधां तन वीसिरायनें, चिडं लोगस चित्त धार ।

कियो तदा शुद्ध काउसग, अरु तिण दिन तज आहार ॥२॥

पूज तणो विरहो पड्यो, कठिण अधिक कहिवाय ।

याद कियां अरिहंत नै, समभावे सुख पाय ॥ ३ ॥

अहो अथिर संसार ए, संजोग जठे विजोग ।

पूज सरीषा पुरुष था, पौहता आज पर लोग ॥ ४ ॥

देख्या भिक्खु दिलकरी, वारु निहुणी वाण ।

याद करे ते अति घणा, ऊन गुण ग्राही जाण ॥ ५ ॥

चिडं तीयं भावी मिल्या, स्वाम तणे संधार.।

मास भाद्रवा रे मन्हे, अचरज ए अधिकार ॥ ६ ॥

प्रबल पुन्य ना पोरसा, प्रबल गुणागर जाण ।

पूज हुन्ता प्रगट पणे, परभव कियो पयाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६२ मी ॥

(आनन्दा रे पदेशी)

स्वाम संधारो सीभियां गुणधारी रे, म्हेल्या
मांढी रे मांहिं ॥ स्वाम सुखकारी रे ॥ तेरह गडी

मांहदी तणी गु० महिमा कीधी अथाय स्वा ॥ १ ॥
 रुपया सैकड़ा लगाविया गु० अनेक उछाल्या लार ॥
 भिक्खु चंप भारी रे ॥ ए त्वद्य किरतव संसार ना
 गु० तिणमें नहीं तन्तसार स्वा ॥ २ ॥ वात हुई
 जिस्ती वरणवे गु० मभावे सुविचार स्वा० तिण
 माहें पाप म ताणजो गु० दम्भ तजी दिलधार स्वा०
 ॥ ३ ॥ अति घन जन वृन्द आविया गु० आदरे संस
 नेक स्वा० त्रिविध वैराग वधावता गु० वारु आण
 विवेक स्वा० ॥ ४ ॥ पूज संथारो पेखने गु० गावें
 जन ए म स्वा० धिन २ भिक्खु स्वामजी गु०
 निस्थ त लीजे नाम ० ॥ ५ ॥ आदेज वचन
 सु ओपतो गु० स्वामी सिंघ सरूप स्वा० खिम्यावन्त
 स्वामी रा गु० खरा स्वाम सद्रूप ॥ ६ ॥ नीत
 स्वाम नी निरमली गु० प्रीत स्वाम गुण पूर स्वा०
 जीत लिया न दुरमती गु० स्वाम वदीत सनूर ॥ ७ ॥
 स्वाम बुद्धि ना सागरू गु० निरमल मेल्या न्याय
 स्वा० त्यच्च आरे पांचमें गु० जिन मत दियो
 जमाय ॥ ८ ॥ उद्यमी स्वामी ति घणा गु० स्वाम
 सुमति सुखदाय स्वा० स्वाम गुपति हृद शोभती गु०
 निरम स्वाम नरमाय ॥ ९ ॥ मणिधारी स्वाम
 महा मुनि गु० स्वाम प्रबल तोष स्वा० जग तारक

स्वाम जाणजो गु० पूरण स्वाम नो पोष ॥ १० ॥
 दिशावान स्वाम दोपतो गु० धिकी द्वि उत्पात
 स्वा० मिथ्या तिमिर सुमेटवा गु० सूर्य स्वाम चात
 ॥ ११ ॥ सखर भिक्षु नाम सांभली गु० पाखण्ड
 भय पामंत स्वा० जश भिक्षु नो जगत में गु० देश
 २ में दीपंत ॥ १२ ॥ स्वाम तिलक शासण तणो गु०
 स्वाम आज्ञा सु उवेल स्वाम स्वाम समी हृद शोभता
 गु० स्वाम दमीसर देख ॥ १३ ॥ स्वाम सुदान
 दीगावियो, गु० स्वाम सुज्ञान सरद्ध स्वा० स्वाम
 सुज्ञान शोभावियो गु० स्वाम सुमान मरह ॥ १४ ॥
 द्रव्य भाव स्वाम देखाविया गु० स्वाम आ व तो १-
 खाय १० पुन्य पाप ने पर ने गु० स्वाम दिया
 सरधाय ॥ १५ ॥ स्वाम संबर अरु निरजरा गु० बंध
 मोक्ष पहिचाण स्वा० स्वाम जीवादिक जुजूआ गु०
 स्वाम देखाया सुजाण ॥ १६ ॥ स्वाम दया गोल-
 खाय ने गु० अति घन कीध उद्योत स्वा० स्वाम
 सावद्य निरवद्य सोधने गु० घण घट घाली-जोत ॥
 १७ ॥ शुभ जोगां ने स्वाम जी गु० ओलखाया हृद
 रीत स्वा० आसता स्वाम नी आद १ गु० जाय
 जमारो जीत ॥ १८ ॥ इन्द्रवादी ओलखावियो गु०
 कर कालवादी निकन्दन स्वा० प्रज्यावादी पिछाणियो

गु० स्वा ।चेलो चन्द ॥ १६ ॥ आचार सरधा
 ऊपरे गु० स्वाम शोध्या शुद्ध न्याय स्वा० स्वाम सूत्र
 वच शिर धरी ० व्रत अव्रत वताय ॥ २० ॥ सोव्या
 तो. धे नहीं गु० स्वाम सरीषा साध स्वा० करोड़ो
 पड्यां चरचा तणो गु० ।वैला भिक्खु याद ॥
 २१ ॥ स्वा भीखणजी ।रो । गु० भरत क्षेत्र रे
 ।हि स्वा० हुवा ने होसी बले गु० हिवड़ां नहिं
 देखाय ॥ २२ ॥ ए । भिक्खु ऋष ओपता गु० याद
 करे नर नार स्वा० पूज गुणा रो पंजारो गु० स्वाम
 कल सुखकार ॥ २३ ॥ स्वाम तणो नाम म्भस्यां
 गु० आवे ष अशर स्वा० तो च नो कहिवो
 क्किसुं गु० पामें तन न प्यार ॥ २४ ॥ शरियारी में
 स्वामजी गु० ठे बर्ष थार, । भाद्रवा में भलो
 गु० जीत गर्भ में जिवार ॥ २५ ॥ पञ्चम काले
 ऊपनो गु० पिण इक मुक्क हर्ष पर्म स्वा० आप शुद्ध
 ग धा । पछै गु० जन्म थई पायो धर्म ॥ २६ ॥ आशा
 पूरण आप छो गु० मेटण संताप स्वा० मरण
 नित्य ति स्वाम नो गु० जपं तुम्हारो जाप ॥ २७ ॥
 सठमी गोपती गु० समस्या स्वाम सुजाण
 स्वा० जय जश करण भिक्खु भला गु० पूरण प्रीत
 पिछाण ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

बरस तयाळिस विचरिया, जाफो कांयक जोय ।

चारित्र पाल्यो चूप सूं, हर्ष हिये भति होय ॥ १ ॥

अधिक बल इद्रयां तणो, निरमल देह निरोग ।

मिक्खु सूरत भति मली, अरु तीखो उपयोग ॥ २ ॥

सखर चौमासा स्वाम ना, बाव अधिक विशाल ।

सांभलजो भवियण सह, चरम सहित चौमाल ॥ ३ ॥

आठ चौमासा आगे किया, असल नहिं अणगार ।

सतरा सूं साठा लगे, बरत्यो शुद्ध व्यवहार ॥ ४ ॥

किहौं २ चौमासा किया, जूजुभा नाम सुजाण ।

संक्षेपे निरणय सह, भाखूं उज्ज्वल भाण ॥ ५ ॥

॥ द्वा ६३ मी ॥

(सीता आवै रे घर राग पदेशी)

शहर केलवे षट चौमासा, तरे इकवीसे सोय ।

पच्चीसे अड़तीसे गुणपचासे, अठावने त्रलोय ॥

मिक्खु भजले रे धर भाव ॥ १ ॥ चारु एक चौमासो

वडलु, बरस अठारै विचार । राजनगर बीसे शुद्ध

रोते, कियो घणो उपकार ॥ २ ॥ दोय चौमासा किया

दीपता, पवर टाल्ये पि, ण । चौबीसे अठाबीसे

चारु, जन्म भूमि निज जाण ॥ ३ ॥ षगड़ी तीन

चौमासा बारु, सतवीसै सुविशेष । ती रु छतीसै

त्यां द्रव्य दीख्या महोच्छ्रव देख ॥ ४ ॥ गढ़ रिणत

भंवर किलारी तलेटी, नगर माधोपुर न्हाल । दोय

चौमासा किया दीपता, इकतीसे इता ॥ ५ ॥
 दोय चौमा । किया दीपता प्रगट शहर पीपार ।
 चउतीसै पैता तिसै वर्षे, कियो घणो उपगार ॥ ६ ॥
 एक चौमासो शहर आवेट में, वर्ष पैतीसे विचार ।
 तीसै पादु सु दाई, भिक्षु गुण भण्डार ॥ ७ ॥
 जेत शहरे क गो स्वा जी, वारु एक चौमा ।
 बर उपगार तेपने धर्म वृद्धि, हेम चरण तिण वास ॥
 दा। तीजी दुवारे तीन चौमासा, तसु धर वरष तयाल ।
 पवर पचासै छपनै पूरण, बर उपगार दिशाल ॥ ८ ॥
 पुर में दोय चौमासा प्रगट, स्वाम क्रिया सुविहाण ।
 सैतालीसे वर्ष सतावने, जूओ छोडायो जाण ॥ ९ ॥
 शहर खेरवे पांच चौमासा, छावीसै वतीसै छाण ।
 वर्ष इकताले अरु छयाले, बलि चौपने जाण ॥ १० ॥
 सात चौमासा पाली शहरे, तेंवीसे तेतीसे थाट ।
 चा तिसै चाले बावने, पञ्चावने गुणसाट ॥ ११ ॥
 चौमा । शरियारी में, उगणीसै बावीसै सार ।
 गुणतीसे गुणा वया एकावने, साठे कियो संथार ॥ १२ ॥
 पनरे गाम चौमासा प्रगट, स्वाम क्रिया
 ठेकार । ज्ञान दिवाकर घण घट घाली, मेठ्यो
 अंधार ॥ १३ ॥ श्री वर्द्धमान तणो शासन,
 खरो दीपायो स्वाम । बहु जीवां ने प्रतिबोद्धी ने,

पौहता परभव ठाम ॥ १५ ॥ सुख कारण तारण भव
 सारण, विघन विदारण वीर । नरक निवारण जनम
 सुधारण, सखरा स्वाम सधीर ॥ १६ ॥ समता दमता
 खमता रमता, नमता जमता न्हाल । तमता भ्रमता
 वमता तन मन गमता वचन विशाल ॥ १७ ॥ आप
 उजागर गुण मणि आगर, साधर स्वाम सुजाण ।
 वयण सुधावागर धर्म जागर, नागर नाथ निध्यान ॥
 १८ ॥ भरम विहण्डन दुरमति खण्डन, महि मण्डन
 मुनिराज । कुमति निकन्दन मन आनन्दन, पूज भवो
 दधि पाज ॥ १९ ॥ सुमती करण अघ हरण स्वामजी
 शिव वधू वरण सनूर । भव दधि तरण करण सुख
 सम्पति, चरण धरण चित्त शूर ॥ २० ॥ परम धरम
 भज भरम करम तज, शरम नरम उभ साज । शिव
 पद अचरम आप आराधण, रूडै भिक्षु ऋपराज ॥
 २१ ॥ वर वायक पद लायक वारु, नायक नाथ निहाल ।
 वोद्धि पमायक धरम वधायक, दायक स्वाम दयाल
 ॥ २२ ॥ ज्ञान गम्भीरा सखर सधीरा, षट पीहरा तज
 खार । हिवडै स्वाम अमोलक हीरा, तोड़ अंजीरा
 तार ॥ २३ ॥ जप तपनी तरवारे भटको पाखण्ड
 पटको पैल । समय सुलटको गुण नो गटको मटको
 मन को मेल ॥ २४ ॥ ऐसा भिक्षु आप ओजागर

अत्रतरिया इण आर । स्वाम जिता चौथै आरे पिण,
 बिरला संत विचार ॥ २५ ॥ जन्म किल्याण कंटाळ्यो
 जाणो, शरियारी चरम किल्याण । द्रव्य दीख्या
 महोच्छ्र बगडी में, जोडै ए त्रिहुं जाण ॥ २६ ॥ स्वाम
 भिक्षु द्विद्वे संभरियां, हियो तन मन हुलसाय ।
 सूक्ष्म बुद्धि करी सुविचाच्यां, विमल कमल विकसाय
 ॥ २७ ॥ भाद्र शुक्ल तेरस दिन भिक्षु परभव कियो
 पयान । तिथे चउदस धरती धूजी अति, न्याय
 जाणै बुद्धिवान ॥ २८ ॥ तीन प्रकारे धरती धूजै,
 ठाणांग तोजै ठाण । भेद जुजूआ श्री जिन भाख्या,
 समभै सखर सयाण ॥ २९ ॥ घर में वर्ष पचीस
 आसरे, आठ भेय में तास । पछै संजम ले परभव
 पोहता, चमाळीस में वास ॥ ३० ॥ सर्व आउ सतंतर
 वरष आसरे, साध्यो भिक्षु स्वाम । जीव खणा
 समभाविआ रे, कीधो उत्तम काम ॥ ३१ ॥ साध
 साधवी स्वाम छतां आसरे, एक सौ चार बोद्धि ।
 देशव्रत दीधो बहूने, सखरी रीत सुशोध ॥ ३२ ॥
 अडती सहंस आसरे कीधो, युक्ति न्याय सूं जोड ।
 मुरधर मेवाड ढूंढार हाडोती, विचख्या शिरमणि मोड
 ॥ ३३ ॥ राम नाम ज्यूं रटे स्वाम ने मुक्त मन अधिक
 निहोर । हंसा मानसरोवर हरषे, चित्त जिम चन्द

चक्रोर ॥ ३४ ॥ चात्रक मोर पपड़या घन चिन, गरजी
 ध्यान गगन । राग विलासी राग - लापे, मुक्
 भिक्खु में मन ॥ ३५ ॥ पतिवरता समरे जिम
 पिउ ने, गोप्यां रे मन कान्ह । तंबोली रा पान तणी
 पर, धरूं स्वाम नो ध्यान ॥ २६ ॥ आशा पूरण आप
 तणा गुण, कह्या कठा लग जाय । सागर जल
 गागर किम भावै, किम आकाश मिणाय ॥ ३७ ॥
 श्रो वीर तणे पट स्वाम सुधर्मा, भिक्खु पट भारी
 माल । रायचन्द ऋष तीजै पाटे, दाख्यो आगुंच
 दयाल ॥ ३८ ॥ आप तणा गुण हूं किम विसरूं,
 आप तणो आधार । समरण आप तणो नित्य समरूं,
 आप दयाल उदार ॥ ३९ ॥ नाम आपरो घट भीतर
 मुक्क, जपूं आपरो जाप । तुक्क नामे दु दोहग
 दूरा, कटै पाप सन्ताप ॥ ४० ॥ मन बंछित मिलिये
 तुक्क समरण, साध्यां सेती सोय । भजन तुम्हारो
 भय भव भंजन, हर्ष अनोपम होय ॥ ४१ ॥ मंत्राचर
 जिम समरण मोटो, परख्यो म्हें तन मन । इह भव
 परभव में हितकारी, भिक्खु तणो भजन ॥ ४२ ॥
 नमो २ भिक्खु ऋष निरमल, मोक्ष तणा दातार ।
 समरण स्वाम तणो शुद्ध साध्या, शिव सुख पामें सार
 ॥ ४३ ॥ हूंस घणा दिन सूं मुक्क हूंती, आज फली

मन आश । भिक्षु यश रसायण नामें; ग्रंथ रच्यो
 सुत्रिलास ॥ ४४ ॥ विस्तार रच्यो भिक्षु मुनिवर नो;
 सुणियो तिण नुसार । भिक्षु दृष्टान्त हेम लिखाया,
 देखी ते अधिकार ॥ ४५ ॥ बैणीरामजी हेम कृत वर,
 भिक्षु चरित सुपेव । इत्यादिक अवलोकी अधिको,
 ग्रंथ रच्यो सुत्रिशेष ॥ ४६ ॥ अधिको ओछो जे कोई
 आयो, विरुद्ध आयो हुवे कोय । सिद्ध अरिहन्त
 देव री साखे, मिच्छामि दुकडं मोय ॥ ४७ ॥ संवत
 उगणीसै आठै आसोज, एकम सुदि सार । शुक्रवार
 ए जोड़ रची, बीदासर शहर मभार ॥ ४८ ॥ तेसठमी
 ढाले स्वामी समच्या, कर्म काटण रे काम । कर
 जोड़ी ऋष जीत कहै, नित्य लेऊं तुम्हारो नाम ॥ ४९ ॥

ॐ कलश

मतिवन्त सन्त महन्त महां मुनि, तन्त भिक्षु
 ऋष तणा । गुण सघन गाया परम पाया, हृद
 सुहाया हियै घणा ॥ तज जंत्र मंत्र सुतंत्र लौकिक,
 भज ए मंत्र मनोहर । सुख सद्य पद्य सुकरण जय
 जश नमो भिक्षु मुनिवरु ॥

॥ सम्पूर्णम् ॥

